सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
# परिवहन विशेष
वर्ष 03, अंक 207, नई दिल्ली, शनिवार 04 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार
आपकी कल्पना आपके पंख हैं, जिनके सहारे आप असंभव को भी पार कर सकते हैं।

03 अपनी बातों का लोहा मनवाना कोई मल्होत्रा जी से सिखे : वीरेन्द्र सचदेवा
06 गैर-संक्रमणीय रोगों का केंद्र भारत
08 पूनम शर्मा का अमृतसर में भव्य स्वागत, हरमंदिर साहिब को भेंट कीं 10 व्हीलचेयर

## टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

### मानव अधिकार उल्लंघन की समस्या – वैश्विक परिदृश्य

पिंकी कुंडू :- सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

**1. राजनीतिक दमन (Political Repression):-** अधिनायकवादी शासन (authoritarian regimes) में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और विरोध के अधिकार पर अंकुश। उदाहरणः कई देशों में पत्रकारों, एक्टिविस्टों और विपक्षी नेताओं की हत्या या गिरफ्तारी।

**2. युद्ध और सशस्त्र संघर्ष (Wars & Armed Conflicts):-** सीरिया, यमन, गाज़ा, यूक्रेन जैसे संघर्ष क्षेत्रों में नागरिकों पर हमले।

अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून (Geneva Conventions) का बार-बार उल्लंघन।

**3. जातीय और धार्मिक भेदभाव (Ethnic & Religious Persecution)**

१. म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों पर अत्याचार।

२. अफ्रीकी देशों में जनसंहार (genocide) जैसी घटनाएँ।

3. अल्पसंख्यक समुदायों का दमन।

**4. शरणार्थी और प्रवासी संकट (Refugee & Migration Crisis)**

१. संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2024 तक दुनिया में 11 करोड़ से अधिक विस्थापित लोग (displaced persons) हैं।

२. इनमें से लाखों लोग बिना राष्ट्रीयता (stateless) हैं और उनके बुनियादी अधिकार भी नहीं हैं।

**5. आर्थिक और सामाजिक अधिकारों का उल्लंघन**

१. बाल श्रम, मानव तस्करी, जबरन मजदूरी।

२. स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार का अभाव।

3. लैंगिक हिंसा और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव।

**सज़ा और जवाबदेही की वास्तविक स्थिति**

**1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर**

१. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) शिकायतों की सुनवाई करती है, लेकिन उसके पास प्रत्यक्ष दंडात्मक शक्ति नहीं है।

२. अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC) युद्ध अपराध, मानवता के खिलाफ अपराध और जनसंहार (genocide) जैसे मामलों में कार्रवाई करता है।

3. लेकिन कई शक्तिशाली देश ICC को मान्यता नहीं देते (जैसे अमेरिका, चीन, रूस)।

**2. क्षेत्रीय मानवाधिकार निकाय (Regional Mechanisms)**

१. यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय (ECHR) – यूरोप में कई सरकारों को सज़ा और क्षतिपूर्ति देने के आदेश दिए।

२. अफ्रीकी और अमेरिकी मानवाधिकार आयोग/न्यायालय – सीमित प्रभाव।

. एशिया में कोई मज़बूत क्षेत्रीय मानवाधिकार न्यायालय मौजूद नहीं है।

**3. राष्ट्रीय स्तर**

१. कई देशों में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग हैं (जैसे भारत का NHRC)।

२. लेकिन ये अक्सर "अनुशंसा" ही कर पाते हैं, सीधी सज़ा नहीं दे सकते।

3. न्यायपालिका की धीमी प्रक्रिया और राजनीतिक दबाव के कारण दोषियों को बहुत देर से या कभी सज़ा नहीं मिलती।

**4. वास्तविकता (Ground Reality)**

१. अधिकांश मामलों में अपराधी बच निकलते हैं, खासकर जब वे राज्य या सेना से जुड़े हों।

२. केवल छोटे या कम शक्तिशाली अपराधियों को ही दंड मिलता है।

3. पीड़ितों को न्याय तक पहुँचने में सालों लग जाते हैं, और कई बार न्याय मिलता ही नहीं।

**कानून बनाम वास्तविकता**

**कानूनः** यूडीएचआर, जिनीवा कन्वेंशन, आईसीसी स्टेच्यू, और कई राष्ट्रीय संविधानों में मानवाधिकारों की सुरक्षा की गारंटी है।

**वास्तविकताः** राजनीतिक दबाव, शक्तिशाली देशों की हठधर्मिता और न्यायिक प्रक्रियाओं की कमजोरी के कारण मानवाधिकार उल्लंघनों पर सज़ा कम और प्रतीकात्मक ही रह जाती है। पीड़ित की आवाज़ अक्सर दब जाती है और दोषी "राजनीतिक ढाल" के पीछे सुरक्षित हो जाते हैं।

निष्कर्ष मानव अधिकार उल्लंघन आज भी पूरी दुनिया में बड़ी समस्या है।

1. युद्धग्रस्त क्षेत्रों में आम नागरिक सबसे अधिक प्रभावित हैं।

2. शरणार्थियों और अल्पसंख्यकों के लिए जीवन असुरक्षित बना हुआ है।

3. दंड की व्यवस्था मौजूद है, लेकिन न्याय और वास्तविक सज़ा के बीच लंबी दूरी है।

**इसलिए ज़रूरत है:**

1. वैश्विक स्तर पर मज़बूत और निष्पक्ष मानवाधिकार तंत्र की।

2. ऐसे कानून जिन पर सभी देश बाध्य हों और उनका उल्लंघन करने वालों पर तत्काल कड़ी कार्रवाई हो।

*टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत*
*www.tolwa.com*
*tolwaindia@gmail.com*
*https://www.tolwa.com/member.html*

## दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग मैनेजमेंट की गलत नीतियों ने एक और चिराग मिटा दिया

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की गलत और मुनिया सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को दरकिनार कर चलाई जा रही नीतियों के तहत दिल्ली में किलोमीटर स्कीम की प्राइवेट बसों से हो रही मौत और सभी बड़ी दुर्घटनाओं के लिए हर वह शख्स जिम्मेदार है जो इन्हें चाहे तो रोक सकता था पर निजी कारणों से नही रोक रहा है।

इन होने वाली जान माल के नुकसान के होने के लिए गलत नीतियों को चलाने और चलवाने वाले चाहे वह सरकार या सरकार में बैठे लोग हो, चाहे वह सरकारी विभाग के आला अधिकारी हो या मैनेजमेंट में बैठे लोग हो या इन गलत नीतियों का विरोध कर सकने वाले संगठनों में बैठे पदाधिकारी हों सभी बराबर के जिम्मेदार हैं।

दिल्ली में किलर लाइन बन रही यह बसें किसी का चेहरा देखकर चपेट में नहीं लेती है सकता है कल को नंबर हमारा या हमारे किसी सगे संबंधी का भी हो, इसलिए अभि भी समय है दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की ग़लत नीतियों का विरोध करे।

भगवान दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और परिवार को दुख सहन करने की शक्ति दे।

*ओम शांति*

दिल्ली में पंजीकृत सभी (निजी एवं व्यवसायिक) वाहन मालिकों के लिए जनहित में जारी

## परिवहन विभाग दिल्ली द्वारा दिल्ली में पंजीकृत सभी वाहन मालिकों के लिए संदेश

प्रिय वाहन मालिक, कृपया वैध पीयूसी प्रमाणपत्र की समाप्ति से पहले अधिकृत पीयूसी केंद्रों से अद्यतन प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (पीयूसीसी) प्राप्त करें।

इसका पालन न करने पर 10,000 रुपये का जुर्माना तथा 3 महीने की अवधि के लिए ड्राइविंग लाइसेंस की अयोग्यता हो सकती है।

अगर आपने पहले ही ऐसा कर लिया है, तो कृपया इसे अनदेखा करें। इस संदेश को दूसरों तक भी पहुँचाएँ और पंजीकृत वाहन मालिकों से वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (PUCC) प्राप्त करने का आग्रह करें।

*- परिवहन विभाग*

## Drishti IAS ने UPSC में 216 बच्चों के सेलेक्शन का किया था झूठा विज्ञापन, लगा 5 लाख का जुर्माना

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) ने दृष्टि IAS पर यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2022 के परिणामों के बारे में भ्रामक विज्ञापन देने के आरोप में 5 लाख का जुर्माना लगाया है. CCPA के अनुसार, दृष्टि IAS ने अपने प्रचार में गलत दावा किया कि उसने 216+ उम्मीदवारों को चयनित कराया है। जबकि असल में इस सफलता में संस्थान की भूमिका और पाठ्यक्रम की जानकारी छिपाई गई थी. यह मामला पिछले वर्षों में इसी तरह की शिकायतों और जुर्मानों का दूसरा उदाहरण है, जिससे यह साफ होता है कि कोचिंग संस्थानों को अपने विज्ञापनों में पूरी और और सही जानकारी देना अनिवार्य है।

## एअर इंडिया अपनी 60 उड़ानों में करने जा रहा बदलाव, दिल्ली एयरपोर्ट के T-3 की बजाय T-2 से रवाना होंगी

दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल 2 को 26 अक्टूबर से शुरू किया जा रहा है जिससे एअर इंडिया समूह अपनी 180 दैनिक घरेलू उड़ानों में से 60 को वहां स्थानांतरित करेगा। एयर इंडिया एक्सप्रेस की सभी घरेलू उड़ानें टर्मिनल 1 से चलेंगी जबकि अंतरराष्ट्रीय उड़ानें टर्मिनल 3 से ही जारी रहेंगी। टर्मिनल 2 से प्रस्थान करने वाली उड़ानों की संख्या 1 से शुरू होगी।

**नईदिल्ली।** एक ओर अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की जरूरत को देखते हुए टर्मिनल-3 पर विस्तार कार्य हो रहा है वहीं टर्मिनल-2 को इसी महीने 26 तारीख से उड़ानों की आवाजाही के लिए खोला जाना है। दोनों बातों के मध्य सामंजस्य बैठाते हुए देश की सबसे बड़ी एयलाइंस एअर इंडिया समूह ने अपनी घरेलू उड़ानों (एअर इंडिया व एअर इंडिया एक्सप्रेस) में कुछ बदलाव करने का निर्णय लिया है। इसके तहत टर्मिनल-3 से संचालित हो रही कुछ उड़ानें टर्मिनल-2 से संचालित होंगी।

**60 उड़ानें टर्मिनल 2 से संचालित होंगी**

एअर इंडिया अपनी 180 दैनिक घरेलू उड़ानों में से 60 को टर्मिनल-2 में स्थानांतरित करेगा। इसके अलावा एयर इंडिया एक्सप्रेस अपनी सभी घरेलू उड़ानों को अब टर्मिनल-1 से संचालित करेगा।

एअर इंडिया और एअर इंडिया एक्सप्रेस की सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानें दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल-3 से ही संचालित होती रहेंगी।

**उड़ान संख्या का पहला अंक 1 तो समझें टर्मिनल 2 से जाएगी**

एअर इंडिया की घरेलू उड़ानें, जो टर्मिनल 2 से प्रस्थान करेंगी या वहां पहुंचेंगी, उनकी उड़ान संख्या को चार अंकों में फिर से व्यवस्थित किया जा रहा है। जिस उड़ान संख्या का पहला अंक-1 से शुरू होगा, वह उड़ान T2 से संचालित होगा।

## रहस्य या हकीकत? रामायण काल का पुष्पक विमान – विज्ञान और आस्था के बीच

परिवहन विशेष न्यूज

1. रामायण में वर्णित "पुष्पक विमान" – स्वचालित और बहु-यात्री क्षमता वाला आकाशयान।

2. विमान खुद-ब-खुद चलता था और इच्छानुसार दिशा बदल सकता था।

3. विमान शास्त्र" और वैदिक ग्रंथों में भी उड़न यानों का उल्लेख।

4. वैज्ञानिक जगत में विवाद – कल्पना या प्राचीन भारत की तकनीक?

**रामायण का पुष्पक विमान** वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामचरितमानस दोनों में पुष्पक विमान का उल्लेख मिलता है। रावण ने इसका उपयोग सीता हरण में किया। लंका विजय के बाद श्रीराम इसी विमान से अयोध्या लौटे। इसे "फूलों की तरह सुगंध फैलाने वाला, महल जैसा आरामदायक और स्वयं चलने वाला" विमान बताया गया।

**वैज्ञानिक नजरिए से** विमान की कार्यप्रणाली आधुनिक ड्रोन और ऑटोमैटिक एयरक्राफ्ट जैसी प्रतीत होती है। माना जाता है कि यह सौर ऊर्जा, चुंबकीय शक्ति या किसी अज्ञात ऊर्जा स्रोत से चलता होगा।

**"विमानिका शास्त्र":-**

1. (1918) में 100 से अधिक विमानों और उनकी उड़ान तकनीक का जिक्र।

2. कुछ वैज्ञानिक इसे सिर्फ कल्पना मानते हैं, जबकि कई शोधकर्ता इसे खोया हुआ विज्ञान कहते हैं।

**दुनिया की अन्य सभ्यताओं में उड़न रथ**

1. ग्रीक मिथक – सूर्य देव हेलिओस का उड़ता रथ

2. मिस्र – पिरामिडों में आकाश यानों की

चित्राकृतियाँ।

3. माया सभ्यता – "फ्लाइंग शील्ड्स" का उल्लेख।

यह दर्शाता है कि उड़ने वाले यान की अवधारणा वैश्विक स्तर पर प्राचीन सभ्यताओं में मौजूद थी।

**विवाद और विमर्श** कुछ विद्वान मानते हैं कि यह काव्यात्मक अलंकार था, अन्य कहते हैं कि प्राचीन भारत के पास अद्भुत एयरोनॉटिकल ज्ञान था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और आधुनिक वैज्ञानिक समुदाय इसकी प्रामाणिकता पर असमंजस में।

**मुख्य बिंदु** पुष्पक विमान सिर्फ एक मिथक नहीं, बल्कि उन्नत कल्पना का प्रतीक। इसकी विशेषताएँ आज के एयरोप्लेन और स्पेसक्राफ्ट से मेल खाती हैं।

**विवाद** – क्या यह मात्र कथा है या खोई हुई तकनीक?

**निष्कर्ष** पुष्पक विमान आज भी आस्था और विज्ञान दोनों के लिए रहस्य है। यदि यह कल्पना है, तो प्राचीन भारत की सोच की गहराई को दर्शाता है। और यदि यह सच है, तो इसका अर्थ है कि भारत ने हजारों वर्ष पहले ही विमानन और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की थी।

यह खबर सिर्फ इतिहास नहीं, बल्कि उस सवाल की ओर इशारा है जो आज भी कायम है – **क्या प्राचीन भारत सचमुच तकनीक में आज से आगे था?**

## "टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

**क्या मिलेगा हमसे जुड़कर**

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

SCAN ME

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

*टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत*
*tolwaindia@gmail.com*
*www.tolwa.com*

# .हमें पता ही नहीं है कि हम कौन हैं? हमने कभी गहन में यह पूछा ही नहीं कि मैं कौन हूं?

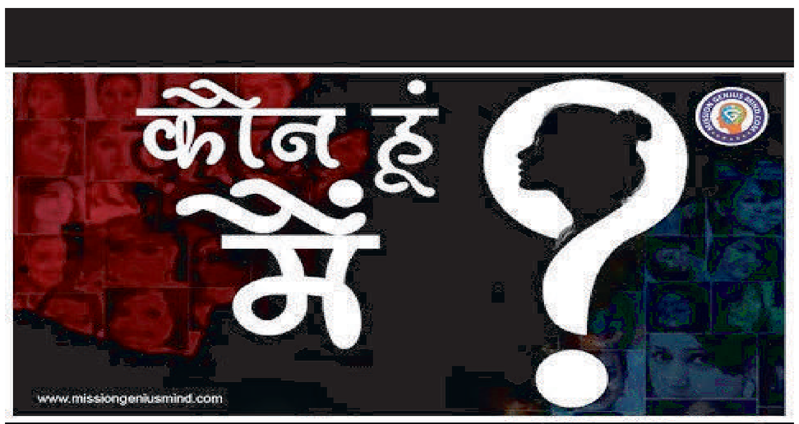


हमने कभी यह जानने की चेष्टा ही नहीं की, यह जीवन जो घट रहा है, इसका अर्थ, इसका रहस्य, इसका प्रयोजन, इसके पीछे क्या छिपा है? प्रतिदिन उठना, भोजन करना, दफ्तर भागते जाना, दफ्तर से भागते आना, फिर भोजन करना, फिर थोड़ी कलह पत्नी/पति से, फिर सो जाना, और फिर सुबह की वही गतिविधियां। यह हम बरसों करते रहे हैं, क्या इसे ही हम जीवन कह रहे हैं? और इसी को हम आगे भी जारी रखना चाहते हैं तो हमने संभवतः जाग कर देखा भी नहीं कि हम क्यों जी रहे हैं? कुछ भी तो नहीं हैं जिसे हम जी रहे हैं, फिर भी जीवन में किसी ऐसी अवस्था/घड़ी /स्थिति की आशा है जिसमें हमारे जीने का लक्ष्य/उद्देश्य छिपा हो। इसलिए जीवन के लिए हमारी बड़ी पकड़ है। हम भले अंधे/भिखमंगे/दुःखी/गरीब/अमीर हो, सभी का जीवन, ऐसी ही किसी आशा के लिए, कि कल कुछ अच्छा होगा। ध्यान रहे कि यह जो अभी हम जी रहें हैं वह जीवन नहीं है। जीवन तो तब होगा, जब जीवन में होश होगा, जागरूकता होगी। और स्वयम् के वास्तविक स्वरूप से हमारा साक्षात्कार होगा वही जीवन होगा।

# हाई ब्लड प्रेशर- एक बड़ी समस्या!

कृपया अंग्रेजी दवाइयों के पीछे ना भागें इसका बहुत ही सरल कुदरती उपाय है जो कि हमारे किचन में ही मौजूद है।

हाई बीपी को नार्मल करने का उपाय ??दाल चीनी सबके किचन में उपलब्ध होता है। क्या करना है..?

(1). दाल चीनी को पत्थर से कूट कर पाउडर बना ले इसे रोजाना सवेरे उठ कर हलके गर्म (गुन गुने) पानी के साथ लें। यदि थोड़ा अधिक खर्च कर सकते हैं तो शहद के साथ ले सकते हैं।

(2). रात को सोते समय आधा चम्मच दालचीनी पॉवडर एक कप गुनगुने दूध के साथ लें, अगर आपका खानपान अच्छा है तो हाई बीपी फुर्र हो जायेगा।

(3). मेथी दाना भी आम तौर पर सभी के किचन में पाया जाता है। मेथी दाने को क्या करें.? रात को गुन गुने पानी में भिगो दें और सवेरे उठते ही इसे चबा चबा कर खा लें ऊपर से हल्का गुनगुना पानी पी लें।

हाई बी पी दो से ढाई महीने में बिलकुल सामान्य हो जायेगी

सावधानी दो घरेलू चीजें बताई हैं उनमे से एक बार में एक ही उपयोग करें।

1. यदि आप दाल चीनी का उपयोग कर रहे हैं तो मेथी दाने वाली औषधि का उपयोग ना करे,

2. यदि मेथी दाना उपयोग कर रहे हैं तो दाल चीनी का उपयोग ना करें।

# ||राम-राम|| 'हम बलवान हैं?' कैसे बलवान हैं?

हम सब तरह से सिद्ध हैं। हमने तो पहले ही कह दिया था न ? वैसा हो गया कि नहीं ? हमारे को तो पहले से ही ऐसा दीखता है ; ये जो लोग भजन, स्मरण, जप, ध्यान आदि करते हैं, ये सभी किसी के बहकावे में आये हुए हैं। अतः इनकी क्या दशा होगी, उसको हम जानते हैं। हमारे समान सिद्ध और कोई है संसार में ?

हमारे पास अणिमा, गरिमा आदि सभी सिद्धियाँ हैं। हम एक फूँकमें सबको भस्म कर सकते हैं ।

'बलवान'- हम बड़े बलवान्‌हैं।

अमुक आदमी ने हमारे से टक्कर लेनी चाही, तो उसका क्या नतीजा हुआ ?

आदि । परन्तु जहाँ स्वयं हार जाते हैं

वह बात दूसरों को नहीं कहते, जिससे कि कोई हमें कमजोर न समझ ले।

उन्हें अपने हारने की बात तो याद भी नहीं रहती, पर अभिमान की बात उन्हें

याद रहती है । 'सुखी'- हमारे पास कितना सुख है, आराम है ।

हमारे समान सुखी संसार में कौन हैं ?

ऐसे व्यक्तियों के भीतर तो जलन होती रहती है, पर ऊपर से इस प्रकार की डींग हाँकते हैं।

'गीता साधक-संजीवनी'
( लेखक- श्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदासजी महाराज )
अध्याय १६ श्लोक संख्या १४ की व्याख्या से लिया गया ।

राम !राम !!राम !!!राम !!!!

भगवान्‌के पास, मां के पास जाने में किसी दलाल की जरूरत नहीं है ।

परम श्रद्धेय स्वामी जी श्री रामसुखदास जी महाराज जी द्वारा विरचित ग्रंथ गीता प्रकाशन गोरखपुर से प्रकाशित स्वाति की बूंदें पृष्ठ संख्या १२६

राम !राम !!राम !!!राम !!!!
👏👏
राम !राम !!राम !!!राम !!!!

प्रवचन दिनांक 30 अप्रैल 2004 प्रातः 5:00 बजे ।

' विषय - भगवान्‌का स्वभाव' ।

प्रवचन के कुछ भाव, इस प्रवचन का ऑडियो भिजवाया जा रहा है । इन भावों को समझने के लिए इस प्रवचन को जरूर सुनना चाहिए ।

' हमारे परम श्रद्धेय स्वामी जी श्री रामसुखदास जी महाराज जी की वाणी बहुत विलक्षण' 'है, दिव्य (परम वचन) है, श्री स्वामी' 'जी महाराज जी की वाणी सुनने से हृदय में' 'प्रकाश आता है, इसलिए प्रतिदिन जरूर सुननी चाहिए' ।

परम श्रद्धेय स्वामी जी महाराज जी कह रहे हैं कि ऐसा कौन है जग में जो भगवान्‌के समान उदार हो । सामर्थ्य वाले को तो हर एक अपनाता है । पर जिसमें कोई गुण नहीं है । ऐसे को भी जो अपनाता है, वह केवल भगवान्‌ही हैं । बिना कारण दया करे, दीन दुःखी देख कर के दया करते हैं, उनका जैसा कोई है नहीं, होगा नहीं, हो सकता नहीं, होना संभव ही नहीं । हे नाथ ! हे नाथ ! हे नाथ ! हे प्रभु ! हे प्रभु !' स्वामी जी बहुत ही करुणा से द्रवित हो करके कह रहे हैं' - सच्चे हृदय से पुकारो । पात्र - अपात्र पर सब कृपा करते हैं, पर कुपात्र पर कौन कृपा करे ? राम जी वनवास में गए तो ऋषि मुनि, महात्मा भी मिले । परंतु गोस्वामी जी महाराज ने कोल किरातों का वर्णन विचित्र किया है, ज्यादा वर्णन किया है । जैसे पिता बालक की बात सुनते हैं, ऐसे भगवान्‌कोल किरातों की बात सुनते हैं । किरात कहते हैं महाराज हमारी सब जगह देखी हुई है, आपको झरना दिखाएंगे । कंद, मूल, फल खिलाएंगे । उनके गुण बताएंगे । अयोध्यावासी आए उनको भी कंद, मूल फल देते हैं । भगवान्‌से कहते हैं कि हमारी यही सेवा है - हम आपके बर्तन, वस्त्र नहीं चुराएंगे । ऐसी बातें सुनकर भगवान्‌द्रवित हो जाते हैं । आपके बर्तन, कपड़े नहीं चुराएंगे, यही बड़ी सेवा है । हमारे पास सेवा करने की कोई सामग्री है नहीं ।

हे नाथ ! भगवान्‌को यह सरलता बड़ी प्यारी है । बड़े खुश होते हैं । तो सज्जनों पुकारो भगवान्‌को । हे दीन दयालु ! हम सेवा के योग्य नहीं हैं । हम जानते नहीं हैं । हे नाथ ! हे मेरे नाथ ! क्या सेवा करें ? ( 'सेवा आप करते हो) -'

' सनमुख होई जीव मोहि जबहीं ।'
'जन्म कोटि अघ नासही तबहीं ।।'

बिना सेवा के ही दीन पर द्रवित हो जाते हो । हम आपके हैं । ऋषि मुनियों का भजन देखकर भगवान्‌खुश होते हैं, पर कोल किरातों की सरलता देखकर प्रसन्न हो जाते हैं । हे नाथ ! हे मेरे नाथ ! हे कृपालु ! आप आप ही हो । हे दीनबंधु ! ऐसी सरलता से भगवान्‌के सामने अपने अवस्था है, वो रखो । अपनी योग्यता दीखती नहीं । पात्रता दीखती नहीं है । कृपासिंधु भगवान्‌को निर्मल होकर के कहो । जैसे हनुमान जी ने विभीषण के सामने कही । मेरे जैसे पर भी कृपा की । ऐसी कृपा करने वाले भगवान्‌ही हैं । हमारी योग्यता तो सामने है, आप तो ब्राह्मण हो, ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए हो । हम तो वानर हैं । अयोग्य पर कृपा करने वाले आप ही हो । सच्चे हृदय से भगवान्‌को कहो - हे नाथ ! हे प्रभु ! सरलता देख करके भगवान्‌खुश हो जाते हैं । ऐसे सज्जनों अहंकार रहित अपनी योग्यता को भूल जाओ और भगवान्‌के आगे बालक जैसे हो जाओ ।

आप कृपा को आसरो, आप कृपा को जोर ।

हमारे पास कुछ है ही नहीं । हे नाथ ! हे नाथ ! आप हमारी करनी की तरफ नहीं देखते । आप अपने स्वभाव की तरफ ही देखते हो । भरत जी वनवास में जाते हैं तो मां की तरफ देखते हैं तो पीछे हटते हैं । पर भगवान्‌की तरफ देखते हैं तो (भगवान की तरफ) भागते हैं ।

कारण रहित कृपालु ।

बिना सेवा के ही द्रवे दीन पर ।

हे नाथ ! हे प्रभु ! हे कृपा सिंधु । आप बिना कारण के कृपा करते हैं । जिनकी कृपा से कृपा अघाती नहीं है ।

सज्जनों कृपा करो ( 'स्वामी जी बात मानने के लिए कह रहे हैं) ।' भगवान्‌का बिना कृपा करने का स्वभाव है । हे नाथ ! हे नाथ ! शर्म आती है महाराज आप के सनमुख होते हैं । हम कहां, आप कहां । हे नाथ ! हे नाथ !

नारायण ! नारायण !! नारायण !!! नारायण !!!!

# शनि प्रदोष व्रत आज

अक्टूबर का महीना धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने जा रहा है। इस महीने में दो प्रदोष व्रत होंगे। पहला प्रदोष व्रत 4 अक्टूबर को है। और इस दिन शनिवार है। ऐसे में अक्टूबर का पहला प्रदोष व्रत 4 अक्टूबर को होगा। और सबसे बड़ी बात यह है कि यह प्रदोष व्रत शनिवार को होने से शनि प्रदोष व्रत कहलाएगा। लेकिन इसके साथ ही साथ शनिदेव श्रद्धालुओं को साढ़ेसाती और ढैय्या के प्रतिकूल प्रभाव से बचने के लिए दूसरा मौका भी देंगे।

**शनि प्रदोष व्रत तिथि**

============================

ज्योतिष पंचांग के मुताबिक इस दिन शाम 05 बजकर 08 मिनट पर त्रयोदशी तिथि की शुरुआत होगी। वहीं 05 अक्टूबर को दोपहर 03 बजकर 04 मिनट पर त्रयोदशी तिथि का समापन होगा। त्रयोदशी तिथि पर प्रदोष काल में भगवान शिव की पूजा की जाती है। इसके लिए आश्विन माह का अंतिम प्रदोष व्रत 04 अक्टूबर को मनाया जाएगा।

**प्रदोष व्रत शुभ मुहूर्त और योग**

==============================

इस दिन पूजा का शुभ समय शाम 05 बजकर 29 मिनट से लेकर रात 07 बजकर 55 मिनट तक है। वहीं इस दिन द्विपुष्कर योग बन रहा है। इस योग का संयोग सुबह 06 बजकर 13 मिनट से है। वहीं, सुबह 09 बजकर 09 मिनट पर द्विपुष्कर योग की समाप्ति होगी। इस योग में पूजा करने से दोगुना फल प्राप्त होता है।

**शनि प्रदोष व्रत महत्व**

========================

शनि प्रदोष का व्रत करने से शनि देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। साथ ही शनि दोष से मुक्ति मिलती है। वहीं संतान सुख के लिए भी शनि प्रदोष व्रत करना बहुत लाभकारी माना जाता है। साथ ही शनि प्रदोष व्रत रखने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही जिन लोगों की कुंडली में राहु-केतु और कालसर्प दोष है, तो इस दिन व्रत रखने से उनको दोष के अशुभ प्रभाव से मुक्ति मिलती है। साथ ही सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। वहीं महादेव की कृपा से सुख- समृद्धि का वास बना रहता है।

**इस उपाय से शनिदोष होगा दूर**

=====================

शनि प्रदोष व्रत पर काले तिल के साथ ही सरसों के तेल का अगर जरूरतमंदों में दान करें तो इससे कई परेशानियों का अंत हो सकता है। शनिदेव क्रूर दृष्टि से राहत मिल सकती है। शनि दोष को दूर करने के लिए भी यह एक बहुत कारगर उपाय है। इस उपाय को करने से शनि देव की कृपा प्राप्त होती है।

**सुख-शांति पाने के लिए उपाय**

======================

शनि प्रदोष व्रत पर महादेव की पूजा अर्चना करें और शनि देव की भी आराधना करें। इस दिन अगर काले या नीले रंग के वस्त्र धारण करें तो इसके शुभ परिणाम जल्द दिखने लगेंगे। वहीं शनिदेव की पूजा में नीले रंग के फूल चढ़ाएं। इस छोटे से उपाय को करने से शनि देव अति प्रसन्न होंगे और जीवन में सुख-शांति बनी रहेगी। वहीं महादेव की कृपा भी प्राप्त होगी।

**शनि प्रदोष व्रत पूजा विधि**

============================

शनि प्रदोष व्रत के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। यदि संभव हो तो काले रंग के वस्त्र धारण करने से बचें, क्योंकि यह शनिदेव का रंग माना जाता है और कुछ लोग इसे अशुभ मानते हैं।

पूजा स्थल को गंगाजल से शुद्ध करें। इसके बाद हाथ में जल, फूल और अक्षत (चावल) लेकर व्रत रखने का संकल्प लें। संकल्प में अपनी मनोकामना का उल्लेख करें, जैसे कि संतान प्राप्ति, शनि दोष निवारण, या सुख-समृद्धि। पूजन के लिए आवश्यक सामग्री जैसे शिवलिंग (या शिव-पार्वती की प्रतिमा/तस्वीर), गंगाजल, कच्चा दूध, दही, शहद, घी, चंदन, बेलपत्र, धतूरा, भांग, शमी के पत्ते, काले तिल, फूल, धूप, दीप, अगरबत्ती, फल, मिठाई, नैवेद्य और जल का कलश इकट्ठा कर लें।

एक चौकी पर साफ लाल या पीला वस्त्र बिछाकर भगवान शिव और माता पार्वती की प्रतिमा या तस्वीर को स्थापित करें। शिवलिंग का कच्चे दूध, गंगाजल, दही, शहद, और घी (पंचामृत) से अभिषेक करें। शिवलिंग पर बेलपत्र, धतूरा, भांग, सफेद फूल, चंदन और अक्षत अर्पित करें। धूप, दीप और अगरबत्ती जलाएं। भगवान शिव को खीर या हलवा, फल और अन्य सात्विक चीजों का भोग लगाएं। शिव जी के मंत्रों का जाप करें, जैसे 'ॐ नमः शिवाय', 'महामृत्युंजय मंत्र' आदि। शनिदेव के मंत्रों का भी जाप कर सकते हैं, जैसे 'ॐ शं शनैश्चराय नमः'।

शनि प्रदोष व्रत की कथा सुनें या पढ़ें। अंत में भगवान शिव की आरती करें। पूजा समाप्त होने के बाद क्षमा-प्रार्थना करें। पीपल के वृक्ष के समीप सरसों के तेल का एक दीपक जलाना शुभ माना जाता है, क्योंकि पीपल में शनिदेव का वास माना जाता है।

# प्रेम - पच्चीसा (भाग 31)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर,छत्तीसगढ़

रोहन और माया के एनजीओ के सार्थक काम की चारों तरफ तारीफ़ होने से उन्हें "जंगलों के बचाव और जंगली जानवरों के संरक्षण" की एक राज्य स्तरीय कार्यशाला में रायपुर वन विभाग द्वारा आमंत्रित किया जाता है । सामाजिक संस्था के मुखिया होने के नाते रोहन को सबसे पहले अपना पेपर पढ़ने को कहा गया । रोहन ने अपने शोध और अनुभव के आधार पर बताया कि जंगलों की अवैध कटाई (डिफॉरेस्टेशन) एक गंभीर समस्या है, जो न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है बल्कि जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक आवास से विस्थापित कर शहरों की ओर धकेलती है। इसे रोकने के लिए व्यक्तिगत, सामुदायिक और सरकारी स्तर पर प्रयास जरूरी हैं। जैसे कि सबसे सरल तरीका है कि हर व्यक्ति को कम से कम एक पौधा / पेड़ अपने जन्म दिन पर लगाना चाहिए। साथ ही बड़े स्तर पर वनरोपण (रिफॉरेस्टेशन) और नए क्षेत्रों में जंगल लगाना सभी को (एफॉरेस्टेशन) चाहिए जिस से डिफॉरेस्टेशन को संतुलित किया जा सके ।

साथ ही रोहन ने समझाया कि सरकार के साथ जन मानस को भी लकड़ी, कागज या फर्नीचर खरीदते समय FSC (फॉरेस्ट स्टेवार्डशिप काउंसिल) जैसे प्रमाणित उत्पाद चुनें, जो अवैध कटाई से मुक्त होते हैं। सिंगल-यूज पैकेजिंग से बचें और रिसाइकल्ड सामग्री का इस्तेमाल करें : मांसाहारी भोजन कम करें, क्योंकि पशुपालन जंगलों की कटाई का प्रमुख कारण है। पाम ऑयल और सोया जैसे उत्पादों से बने सामान कम खरीदें, जो अमेज़न जैसे जंगलों को नुकसान पहुंचाते हैं। हमेशा सस्टेनेबल फूड ही चुनें।

रोहन के पेपर पढ़ने बाद माया ने अपने भाषण में कहा कि अवैध लॉगिंग के खिलाफ सख्त कानूनों की जरूरत है जैसे अमेरिका का FOREST Act, जो कंपनियों को आपूर्ति श्रृंखला में अवैधता रोकने के लिए जिम्मेदार बनाता है। स्थानीय स्तर पर संरक्षित क्षेत्रों (प्रोटेक्टेड एरियाज) जैसे नेशनल पार्क्स को मजबूत करें। वंतारा जैसे निजी वन्य – अभ्यारणों पर भी कानून की पकड़ हो । आदिवासी लोगों के भूमि अधिकारों का सम्मान करें, क्योंकि उनके पारंपरिक ज्ञान जंगलों की रक्षा में मदद करता है। WWF जैसी संस्थाएं अवैध लॉगिंग के खिलाफ टैगिंग और नीतियां लागू करने का काम कर रही हैं ।जिस से जल, जंगल और ज़मीन का दुरुपयोग रुक सके।

वर्क शॉप के मुख्य वक्ता डॉ श्री नीरज तिवारी, जो वर्षों से हर्बल और जंगली जड़ी बूटियों का अध्ययन कर रहें ने बताया कि शिक्षा और अभियानों के माध्यम से लोगों को जागरूक करें। Greenpeace और EIA ऐक्ट (इनवरमेंट इम्पैक्ट अससिसमेंट ऐक्ट ) जैसी संगठन अवैध कटाई के खिलाफ जांच और अभियान चला रहे हैं। व्यक्तिगत स्तर पर डोनेशन या वॉलंटियरिंग तैयार करने की बात कही । साथ ही बताया कि जंगलों की कटाई से जानवरों का आवास नष्ट होता है, जिससे वे भोजन और आश्रय की तलाश में शहरों की ओर आते हैं। इसे रोकने के लिए मानव-वन्यजीव संघर्ष (ह्यूमन-वाइल्डलाइफ कंफ्लिक्ट) को कम करने वाले उपाय अपनाएं । सड़क पर जानवरों को खिलाने से वे शहरों पर निर्भर हो जाते हैं। रोड पर हर जंगल में बैठे वानर और अन्य जानवर दुर्घटना के शिकार होते हैं । पक्षियों के फीडर रात में हटा दें और पालतू जानवरों का भोजन घर के अंदर रखें, सभी सड़कों पर सेकड़ों मवेशी भूखे वाहनों से टकरा जाते हैं।

वर्कशॉप की अध्यक्षता कर मुख्य वन संरक्षण अधिकारी श्री पांडे जी, ने अपने उद्बोधन में कहा कि नगर निगम और वन विभाग के प्रयासों से सभी सार्वजनिक स्थलों पर मजबूत कचरा डिब्बों को रखा जा रहा है । शहर / गाँव की गए- बेल और अन्य आवारा पशु धन और कुत्तों के संरक्षण हेतु कांजी – हाउस और डॉग- स्टे सेंटर बनाए जा रहें हैं। साथ उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों सहित जन मानस से से अनुरोध किया कि पालतू पशु / जानवर को खुले में ना छोड़े साथ ही पालतू जानवरों के भोजन और पानी के बर्तन धूप -सर्दी – बरसात से बचाने के युक्तियुक्त साधन / उपाय करें ।

वर्कशॉप के संचालक राजेन्द्र जी , ने वर्कशॉप समापन पर उपस्थित पदाधिकारी/ प्रतिभागी से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अनुरोध किया कि सभी के घरों में दरारें, वेंट, चिमनी और छत को सील करें ताकि दीमक के साथ ही बड़े कीड़े-मकोड़े और छिपकली घर / ऑफिस के अंदर न घुस सकें। कम से कम छः फीट ऊंची बाड़ लगाएं, जो हिरण, स्कंक या कोयोट जैसे जानवरों को रोक सकती है। सिरका जैसे प्राकृतिक रिपेलेंट्स या मोशन-सेंसर वाली लाइट्स/स्प्रिंकलर्स लगाएं। पेड़ों की शाखाओं को काटें और आंगन से मलबा हटाएं ताकि जानवरों को छिपने की जगह न मिले। पालतू जानवरों को घर के अंदर रखें या लेज पर बांधें। रात में उन्हें बाहर न छोड़ें, खासकर कोयोट जैसे शिकारियों से बचाने के लिए। : शहरों में हरी पट्टियां और वन्यजीव कॉरिडोर बनाएं ताकि जानवर शहरों में न घुसें। शिकार (हंटिंग) जैसे नियंत्रण उपायों का उपयोग करें लेकिन केवल विशेषज्ञों की सलाह से स्थानीय वन्यजीव विभाग से संपर्क करें ।

वर्कशाप से गहर आते समय माया , रोहन से कह थी कि लोग नहीं जानते कि ये दोनों समस्याएं आपस में जुड़ी हैं। अवैध कटाई रोकने से जानवरों का शहरों में आना कम हो जाएगा। व्यक्तिगत स्तर पर बदलाव से शुरू करें, लेकिन सरकारी नीतियों और सामुदायिक प्रयासों की जरूरत है। संगठनों जैसे WWF, Greenpeace से जुड़ें या स्थानीय एनजीओ को सपोर्ट करें। रोहन ने चुटकी लेते हुए कहा – आजकल मेनका जी कहाँ है ? इतने पशु बह गए बाढ़ में और वंतारा के सभी सुन्दर जानवर कहाँ से कैसे आए ? क्या वन- विभाग से रसुखदार ने निजी अभ्यारण चलाने की अनुमति ली है। माया बोली – भारत के संविधान से कोई नहीं बच सकता बस , देखते जाओ रोहन – प्यारे ,,

( क्रमशः भाग 32 )

# भारतीय विज्ञान में महिलाओं की अधूरी यात्रा

## प्रतीकात्मक उपस्थिति से प्रभावी नेतृत्व तक पहुँचने की जद्दोजहद और राष्ट्रीय नवाचार की अनिवार्यता

भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की मौजूदगी ने पिछले कुछ दशकों में नई ऊँचाइयाँ छुई हैं। अंतरिक्ष मिशनों से लेकर मिसाइल विकास तक उनकी भूमिका आज किसी से छिपी नहीं है। लेकिन यह यात्रा अभी भी अधूरी है क्योंकि तथाकथित 'लीकी पाइपलाइन' यानी शिक्षा और कॅरियर के अलग-अलग चरणों पर महिलाओं का बाहर हो जाना, उन्हें नेतृत्व की सीट तक पहुँचने से रोकता है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत आकांक्षाओं की नहीं, बल्कि राष्ट्रीय नवाचार और उत्कृष्टता की है। सवाल यही है कि भारत कब इस रिसाव को रोकेगा और कब महिलाएँ बराबरी से विज्ञान की बागडोर थामेंगी।

*- डॉ प्रियंका सौरभ*

भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बीते कुछ दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है। अंतरिक्ष कार्यक्रम, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था और नैनो प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिकों की पहचान आज विश्व स्तर पर बनी है। इस यात्रा में महिलाओं की भागीदारी केवल औपचारिकता भर नहीं रही बल्कि ठोस और प्रभावी साबित हुई है। डॉ. टेसी थॉमस, जिन्हें मिसाइल महिला कहा जाता है, या चंद्रयान-3 मिशन की महिला वैज्ञानिकों कल्पना कलहस्ती और ऋतु करिधल का योगदान इसका जीवंत उदाहरण है। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय महिला वैज्ञानिकों की भूमिका अब केवल प्रतीकात्मक नहीं रही, वे वास्तविक परिवर्तन की धुरी बन चुकी हैं।

फिर भी तस्वीर का दूसरा पहलू चिंता पैदा करता है। भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पढ़ाई करने वाली लड़कियों की संख्या बड़ी है, परंतु शोध और नेतृत्व के पदों तक पहुँचते पहुँचते यह संख्या लगातार घटती जाती है। इस प्रवृत्ति को ही 'लीकी पाइपलाइन' कहा जाता है। ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि स्नातक स्तर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भागीदारी लगभग तैंतालीस प्रतिशत है। यह आँकड़ा किसी भी देश के लिए गौरवपूर्ण हो सकता है। लेकिन जब यही लड़कियाँ आगे शोध और अनुसंधान के मार्ग पर बढ़ती हैं तो मात्र चौदह प्रतिशत ही इस क्षेत्र में टिक पाती हैं। यही नहीं, उच्च शिक्षा संस्थानों में महिला संकाय की संख्या लगभग पंद्रह प्रतिशत तक सीमित है। देश के सबसे प्रतिष्ठित संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएससी या सीएसआईआर अब तक किसी महिला के नेतृत्व में नहीं रहे।

वैज्ञानिक पुरस्कारों और मान्यताओं की दुनिया में भी असमानता साफ दिखती है। वर्ष 2023 तक दिए गए छह सौ से अधिक शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कारों में केवल सोलह ही महिला वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। यह आँकड़े बताते हैं कि प्रारंभिक स्तर पर भले ही महिलाएँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी में समान उत्साह के साथ प्रवेश करती हैं, लेकिन जैसे-जैसे ज़िम्मेदारियाँ और दबाव बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उनकी संख्या कम होती जाती है। यही वह रिसाव है जो राष्ट्रीय उत्कृष्टता को कमजोर करता है।

इस रिसाव की कई परतें हैं। मातृत्व और परिवार की ज़िम्मेदारियाँ महिलाओं के कॅरियर को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं। लंबे कार्य घंटे, उच्च दबाव वाले प्रोजेक्ट और लचीले विकल्पों की कमी के कारण बहुत सी प्रतिभाशाली महिलाएँ बीच रास्ते से बाहर हो जाती हैं। संस्थागत ढाँचे में भी पुरुष वर्चस्व कायम है। विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में पदोन्नति और नेतृत्व पदों पर जाने का मार्ग महिलाओं के लिए कठिन है। अनौपचारिक नेटवर्क, सामाजिक पूर्वाग्रह और लैंगिक धारणाएँ इस कठिनाई को और गहरा करती हैं।

वित्तपोषण और मान्यता का संकट भी कम नहीं है। शोध अनुदान में महिलाओं को कम प्राथमिकता दी जाती है। यह उनकी परियोजनाओं की दिशा और नवाचार की संभावनाओं को सीमित करता है। सामाजिक दृष्टिकोण भी विज्ञान को पुरुष प्रधान क्षेत्र मानता है, जिससे परिवार और समाज अक्सर लड़कियों को इस ओर बढ़ने से हतोत्साहित करते हैं। यदि कोई महिला कॅरियर ब्रेक ले भी ले तो पुनः-प्रवेश बेहद कठिन हो जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की महिला वैज्ञानिक योजना अवश्य मौजूद है, परंतु उसकी पहुँच अभी बहुत सीमित है।

यह समस्या केवल महिलाओं की व्यक्तिगत उपलब्धियों की बाधा नहीं है, बल्कि भारत के भविष्य से भी गहराई से जुड़ी है। जब भारत विकसित भारत के सपने को पूरा करने का संकल्प ले रहा है, तब वैज्ञानिक नवाचार और शोध में आधी आबादी की भागीदारी को नज़रअंदाज़ करना आत्मघाती साबित हो सकता है। विश्व बैंक का अनुमान है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से 2025 तक भारतीय अर्थव्यवस्था को सात सौ अरब डॉलर की अतिरिक्त वृद्धि मिल सकती है। यदि महिलाएँ बराबरी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वच्छ ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान करेंगी तो भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धा स्वतः बढ़ेगी।

इसके साथ ही यह भारत की वैश्विक छवि का भी सवाल है। लैंगिक समानता की दिशा में ठोस कदम भारत की अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और नेतृत्व की आकांक्षाओं के अनुरूप हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर जब भारतीय महिला वैज्ञानिक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बोलती हैं तो वह भारत की विश्वसनीयता का प्रतीक बन जाता है। इससे भी आगे, यह आने वाली पीढ़ियों की आकांक्षा का प्रश्न है। अगर आज हम विज्ञान में महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करते हैं, तो कल हमारी बेटियाँ आत्मविश्वास से भरी होंगी और विज्ञान को अपनी पसंद का क्षेत्र मानेंगी।

सरकार ने कुछ सकारात्मक कदम उठाए हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की किरण योजना, महिला वैज्ञानिक योजना, एसईआरबी पॉवर फेलोशिप जैसी पहलें युवा महिला शोधार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए बनाई गई हैं। इसरो और डीआरडीओ ने लचीले कार्य समय, विस्तारित मातृत्व अवकाश और घर से काम करने जैसे विकल्प लागू किए हैं। कई संस्थानों में लैंगिक संवेदनशीलता समितियाँ भी गठित की गई हैं। लेकिन यह सब अभी भी अपर्याप्त है। आवश्यकता है कि इन योजनाओं की पहुँच को बढ़ाया जाए और उन्हें प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

आगे की राह यह है कि अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों में महिलाओं के लिए न्यूनतम प्रतिनिधित्व की सीमा तय की जाए। महिला नेतृत्व वाली परियोजनाओं के लिए विशेष वित्तपोषण सुनिश्चित हो। कॅरियर ब्रेक के बाद पुनः-प्रवेश को आसान बनाया जाए और अधिक संख्या में पुनः-प्रवेश फेलोशिप दी जाए। वरिष्ठ महिला वैज्ञानिकों और नई शोधार्थिनियों के बीच मार्गदर्शन का सेतु तैयार किया जाए। सबसे बढ़कर, समाज की मानसिकता बदली जाए। परिवार और समाज को यह स्वीकार करना होगा कि विज्ञान पुरुषों का नहीं, बल्कि सभी का क्षेत्र है।

भारतीय विज्ञान में महिलाओं की यात्रा प्रतीकात्मक उपस्थिति से आगे बढ़ चुकी है, लेकिन नेतृत्व तक पहुँचने में अब भी कई बाधाएँ मौजूद हैं। यह बाधाएँ केवल व्यक्तिगत हानि नहीं बल्कि राष्ट्रीय हानि भी हैं। अगर भारत को ज्ञान शक्ति बनना है, तो इस रिसाव को रोकना ही होगा। वास्तविक नवाचार और उत्कृष्टता तभी संभव है जब प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में पुरुष और महिलाएँ बराबरी से कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों। यह केवल समान अवसर का सवाल नहीं है, बल्कि भारत के वैज्ञानिक भविष्य और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का भी प्रश्न है।

# वक्त से आँख मिलाओं...!

यूं सीखों कोई अदा ग़म में मुस्कुराओं,
जियो जिंदगी असफलता को हराओं।
छू लों शिखर वक़्त से आँख मिलाओं,
विनम्रता से सभी को गले से लगाओं।

मेरे साथ परेशान होती रहीं हैं जिंदगी,
खोज रहा हूँ समाधान साथ है बंदगी।
निरंतर चलते रहकर हमें आगे बढ़ना,
कलयुग की मुसीबतों को पार करना।

जीवन में कभी हताशा के क्षण आएँगे
तभी निराशा में कदम भी डगमगाएंगे।
ये ख़ामोशी के साएं पीछा किए जाएंगे,
मंजिल की ओर बढ़े पग जीत जाएंगे।

संजय एम तराणेकर

# देश में गहरी हो रही असमानता की खाई : 1687 अमीरों की नेटवर्थ = आधा हिंदुस्तान

भारत की असली ताक़त उसके 140 करोड़ आम लोग हैं—किसान, मज़दूर, छोटे दुकानदार और युवा, जिनके सपनों पर आज धूल जमी है। अगर यही लोग सशक्त होंगे, तभी भारत सचमुच शक्तिशाली बनेगा। असमानता केवल आर्थिक समस्या नहीं है, यह लोकतंत्र, समाज और देश की स्थिरता के लिए खतरा है।
भविष्य का भारत केवल 1,687 अरबपतियों का नहीं, बल्कि करोड़ों मेहनतकश लोगों की उम्मीदों और संघर्षों से बना भारत होना चाहिए। विकास तभी सच्चा होगा जब उसका लाभ सब तक पहुंचे।

राजेश जैन

भारत आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। स्टॉक मार्केट रिकॉर्ड बना रहा है, कॉरपोरेट कंपनियां अरबों-खरबों का कारोबार कर रही हैं और भारत अरबपतियों की संख्या में दुनिया के शीर्ष देशों में शामिल हो गया है। लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक गहरी सच्चाई छिपी है—देश में अमीर-गरीब की खाई पहले से कहीं अधिक चौड़ी हो चुकी है।

1 अक्टूबर 2025 को एम 3 एम इंडिया और हुरुन रिच लिस्ट जारी की गई, जिसमें 1,687 ऐसे भारतीय शामिल हैं जिनकी संपत्ति 1,000 करोड़ रुपए से अधिक है। इनकी कुल नेटवर्थ लगभग 167 लाख करोड़ रुपए है, जो भारत की जीडीपी का लगभग आधा है। यह आंकड़ा केवल अमीरों की गिनती भर नहीं है, बल्कि पूरे आर्थिक और सामाजिक ढांचे पर सवाल खड़ा करता है।

**भारी अंतर है अवसरों और जीवन की गुणवत्ता में**

आज एक ही देश में दो बिल्कुल अलग दुनिया मौजूद हैं। एक ओर हैं वे उद्योगपति जिनके पास अरबों-खरबों की संपत्ति, विदेशी हवेलियां और निजी जेट हैं। दूसरी ओर करोड़ों लोग हैं जो रोज़ 200–300 रुपये की दिहाड़ी पर काम करते हैं, जिनके पास स्थायी नौकरी या पक्की छत तक नहीं है। करोड़ों किसान कर्ज़ के बोझ तले दबे हैं, मज़दूर शहरों की फैक्ट्रियों और निर्माण स्थलों पर पसीना बहाते हैं और युवा बेरोज़गारी से जूझ रहे हैं। महिलाओं को शिक्षा और रोज़गार के लिए अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता है। यह केवल आय का अंतर नहीं, बल्कि अवसरों और जीवन की गुणवत्ता का अंतर है।

**जीवन की गुणवत्ता और लोकतंत्र पर असर**

असमानता का असर पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है। गरीब माता-पिता अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं दिला पाते, नतीजा यह होता है कि अगली पीढ़ी भी गरीबी में जीती है। युवाओं में निराशा और हताशा पैदा होती है और यही माहौल अपराध, नशाखोरी और हिंसा को जन्म देता है। शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों और अपराध दर का बढ़ना इसकी सीधी झलक है।

लोकतंत्र पर भी असमानता का असर गहरा है। राजनीति में पैसे की ताकत सबसे अहम बन चुकी है। चुनावी चंदा बड़े कॉरपोरेट्स से आता है और नीतियां अक्सर उनके हितों के हिसाब से बनती हैं। आम नागरिक का वोट बराबर है, लेकिन उसकी आवाज़ और असर लगातार कम होता जा रहा है। धीरे-धीरे लोकतंत्र "जनता का, जनता के लिए" से बदलकर "धनवानों का, धनवानों के लिए" होने लगता है। अगर यह असंतुलन बढ़ता गया तो लोकतंत्र पर भरोसा कमज़ोर हो सकता है।

**धीमी हो रही आर्थिक विकास की गति**

कुछ लोग मानते हैं कि अमीरों की संपत्ति से निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे। लेकिन सच्चाई यह है कि जब आम आदमी की जेब खाली होगी तो वह बाज़ार से सामान कैसे खरीदेगा? खपत घटने पर उद्योग भी ठप पड़ते हैं। निवेश उन्हीं क्षेत्रों में होता है जहां अमीरों को मुनाफ़ा दिखता है, न कि उन क्षेत्रों में जहां गरीब और मध्यमवर्ग की ज़रूरतें पूरी हों। यही कारण है कि विश्व बैंक और आईएमएफ तक मान चुके हैं कि असमानता आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है।

**आंकड़े क्या कहते हैं**

वर्ल्ड इनइक्वैलिटी लैब की 2024 रिपोर्ट के अनुसार भारत के शीर्ष 1% लोगों के पास देश की 40.1% संपत्ति है और उनकी आय हिस्सेदारी 22.6% है। जबकि निचले 50% वर्ग के पास केवल 6.4% संपत्ति है। यानी असमानता ऐतिहासिक उच्च स्तर पर पहुंच चुकी है। यह स्थिति केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि सड़कों, गांवों और कस्बों में साफ देखी जा सकती है—जहां आलीशान मॉल और हाई-राइज़ टावरों के बगल में टूटी-फूटी झुग्गियां खड़ी हैं।

**नॉर्डिक देशों से सीखें**

दुनिया के कई देशों ने साबित किया है कि असमानता को कम करना संभव है। नॉर्डिक देश—स्वीडन, नॉर्वे और डेनमार्क—ने उच्च कर व्यवस्था और कल्याणकारी नीतियों से सभी नागरिकों को समान अवसर दिए। वहां शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं लगभग मुफ्त हैं और रोजगार के मौके बराबरी से उपलब्ध हैं।

चीन ने भी शिक्षा और बुनियादी ढांचे पर बड़े निवेश किए और करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला। इसके उलट अमेरिका में असमानता लगातार बढ़ रही है और सामाजिक तनाव का कारण बन रही है। भारत में भी केरल की शिक्षा और स्वास्थ्य नीतियां पूरे देश के लिए मॉडल हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ताक़त दी है। आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं स्वास्थ्य सेवाओं को गरीबों तक पहुंचाने का प्रयास हैं।

**समाधान की राह**

इस खाई को पाटने के लिए सबसे ज़रूरी है आम आदमी का सशक्तिकरण।

- शिक्षा: हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, इसके लिए सरकारी स्कूल और कॉलेज मज़बूत किए जाएं।
- स्वास्थ्य: सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं, ताकि गरीब इलाज के लिए कर्ज़ न लें।
- रोजगार और उद्यमिता: छोटे उद्योग, स्टार्टअप और स्वरोज़गार को बढ़ावा दिया जाए।
- महिला सशक्तिकरण: महिलाओं को शिक्षा और काम के बराबर अवसर दिए जाएं।
- तकनीकी पहुंच: इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं को गांव-गांव तक पहुंचाना जरूरी है।
- कर सुधार: अमीरों से उचित टैक्स लेकर उसका उपयोग गरीबों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर किया जाए।

# धरती पर हर प्राणी का अधिकार: संवेदनशीलता का पर्व [विश्व पशु कल्याण दिवस: करुणा की क्रांति का प्रतीक]

धरती की हर धड़कन में एक अनकही पुकार गूँजती है—उन जीवों की, जो बिना शब्दों के अपनी पीड़ा बयां करते हैं। उनकी मौन आँखों में छिपा दर्द सुनाई तो नहीं देता, मगर उनका जीने का अधिकार उतना ही सच्चा है, जितनी हमारी साँसें। हर साल 4 अक्टूबर को विश्व पशु कल्याण दिवस के रूप में यह पुकार हमें झकझोरती है। यह महज़ एक तारीख नहीं, बल्कि एक ज़िम्मेदारी है—सभी प्राणियों के प्रति करुणा, सम्मान और संरक्षण का संकल्प। यह वह क्षण है, जब हमें ठहरकर पूछना होगा: क्या हम सचमुच ऐसी दुनिया बना रहे हैं, जहाँ हर जीव का जीवन उतना ही अनमोल हो, जितना हमारा?

विश्व पशु कल्याण दिवस की नींव संत फ्रांसिस ऑफ अस्सीसी के प्रेम और प्रकृति के प्रति समर्पण से पड़ी, जिन्होंने हर जीव को ईश्वर का अंश माना। 1931 में इटली से शुरू हुआ यह आंदोलन आज वैश्विक मंच पर पशु अधिकारों और उनके कल्याण की मज़बूत आवाज़ बन चुका है। लेकिन चुनौतियाँ अब भी बरकरार हैं। जंगल सिकुड़ रहे हैं, प्रजातियाँ खामोशी से विलुप्त हो रही हैं, और पशु क्रूरता की घटनाएँ हमारे समाज पर दाग़ की तरह हैं। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की 2022 की रिपोर्ट चीख-चीखकर बताती है कि 1970 से अब तक वन्यजीवों की आबादी में 69% की गिरावट आई है। क्या हमारी तरक्की की कीमत इन बेज़ुबान जीवों की ज़िंदगी होनी चाहिए?

पशु कल्याण केवल भावनाओं का विषय नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और पर्यावरणीय ज़रूरत भी है। शोध साबित करते हैं कि चिंपैंजी, ऑक्टोपस, यहाँ तक कि कौवे भी गहरी बुद्धिमत्ता और भावनात्मक संवेदनशीलता रखते हैं। कौवे उपकरण बनाकर समस्याएँ सुलझाते हैं, तो हाथी अपने साथियों के लिए शोक मनाते हैं। डॉल्फ़िन आपसी सहयोग से खतरों का सामना करती हैं। ये तथ्य हमें बताते हैं कि पशु न सिर्फ़ जीवित प्राणी हैं, बल्कि संवेदनाओं और सामाजिक बुद्धि से परिपूर्ण हैं। उनकी भावनाओं को अनदेखा करना, हमारी अपनी मानवता को कमज़ोर करना है।

पशुओं का शोषण एक ऐसी सच्चाई है, जो हमारे समाज पर गहरा दाग़ छोड़ता है—चाहे वह अवैध शिकार की क्रूरता हो, सर्कस में बेज़ुबानों के साथ अत्याचार हो, या प्रयोगशालाओं में अनैतिक परीक्षणों का दर्द। विश्व पशु संरक्षण संगठन की एक चौंकाने वाली रिपोर्ट बताती है कि हर साल 70 अरब से अधिक जानवर मांस, डेयरी और अंडे के लिए मारे जाते हैं, जिनमें से अधिकांश को अमानवीय, हृदयविदारक परिस्थितियों में रखा जाता है। भारत जैसे देश में, जहाँ गाय को माँ का दर्जा दिया जाता है, वहाँ भी सड़कों पर आवारा पशुओं की दुर्दशा और उनकी अवैध तस्करी एक कड़वा सच है। पेटा इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल लाखों पशु मांस और चमड़े के लिए गैर-कानूनी तस्करी का शिकार होते हैं। यह सवाल उठाता है—क्या हमारी परंपराएँ और आधुनिकता की दौड़ में पशु कल्याण कहीं भटक गया है?

पशु कल्याण केवल नैतिकता का विषय नहीं, बल्कि हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य का आधार है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 60% से अधिक संक्रामक रोग पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं। SARS, MERS और COVID-19 जैसे ज़ूनोटिक रोग हमें चेतावनी देते हैं कि जब हम जंगलों को नष्ट करते हैं, पशुओं के प्राकृतिक आवास छीनते हैं, या उन्हें अमानवीय परिस्थितियों में कैद करते हैं, तो हम अपनी ही सेहत को दाँव पर लगाते हैं। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की 2020 की रिपोर्ट बताती है कि वनों की कटाई और अवैध वन्यजीव व्यापार ने ज़ूनोटिक रोगों का जोखिम 30% तक बढ़ा दिया है। यह साफ़ है कि पशु कल्याण और मानव कल्याण एक-

दूसरे से गहरे जुड़े हैं—एक की उपेक्षा, दूसरे को खतरे में डालती है।

लेकिन सवाल यह है कि हम बदलाव कैसे लाएँ? विश्व पशु कल्याण दिवस न केवल जागरूकता का, बल्कि ठोस कदमों का आह्वान है। व्यक्तिगत स्तर पर, हम छोटे बदलावों से शुरुआत कर सकते हैं—मांसाहारी भोजन कम करना, जैविक और कल्याणकारी खेती से उत्पादित सामग्री चुनना, और पशु उत्पादों का विवेकपूर्ण उपयोग। सामुदायिक स्तर पर, भारत के ब्लू क्रॉस और वाइल्डलाइफ SOS जैसे संगठनों का समर्थन करें, जो घायल और परित्यक्त पशुओं की देखभाल करते हैं। बच्चों को पशुओं के प्रति करुणा सिखाना भविष्य को संवेदनशील बनाने का सबसे शक्तिशाली कदम है।

आर्थिक नज़रिए से भी पशु कल्याण के लाभ अनगिनत हैं। कल्याणकारी खेती से प्राप्त मांस, दूध और अंडे न केवल पौष्टिक हैं, बल्कि पर्यावरण पर बोझ भी कम करते हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, टिकाऊ और कल्याणकारी खेती ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 20-30% तक कम कर सकती है। भारत जैसे देश में, जहाँ पशुपालन अर्थव्यवस्था का मज़बूत स्तंभ है, कल्याणकारी प्रथाएँ अपनाने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मज़बूती मिल सकती है। यह केवल पशुओं का नहीं, बल्कि हमारी धरती और भावी पीढ़ियों का सवाल है।

विश्व पशु कल्याण दिवस हमें एक गहरी सच्चाई से रूबरू कराता है—पशु संरक्षण केवल जंगलों में रहने वाले वन्यजीवों तक सीमित नहीं, बल्कि हमारे घरों और गलियों में साँस लेने वाले हर प्राणी का हक है। भारत में करीब 6 करोड़ आवारा कुत्ते भोजन, आश्रय और चिकित्सा के अभाव में तड़पते हैं। हमारे पालतू जानवर—कुत्ते, बिल्लियाँ और अन्य साथी—भी उतने ही प्यार और देखभाल के हकदार हैं। एक छोटा-सा कदम, जैसे टीकाकरण में मदद करना, या उनके लिए आश्रय की व्यवस्था करना, इन बेज़ुबान जीवों के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है।

इस दिन का मूल संदेश है—सम्मान, सह-अस्तित्व और करुणा। जब हम किसी जानवर की रक्षा करते हैं, तो हम सिर्फ़ उसकी जान नहीं बचाते, बल्कि अपनी मानवता को भी पोषित करते हैं। विश्व पशु कल्याण दिवस हमें सिखाता है कि यह धरती सभी प्राणियों की साझा विरासत है। यह केवल विचारों का दिन नहीं, बल्कि कर्म का आह्वान है। चाहे वह पक्षियों के लिए एक बर्तन में पानी रखना हो, या पशु संरक्षण नीतियों का समर्थन करना—हर छोटा-बड़ा प्रयास इस धरती को और जीवंत बनाता है।

पशु कल्याण सिर्फ़ उनकी सुरक्षा का सवाल नहीं, बल्कि हमारी आत्मा को बचाने का मिशन है। जब हम प्रकृति और इसके हर जीव के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव अपनाते हैं, तो हम एक ऐसी दुनिया रचते हैं जो न केवल टिकाऊ, बल्कि करुणामय और न्यायपूर्ण भी है। विश्व पशु कल्याण दिवस हमें यही संदेश देता है—हर जीव की धड़कन हमारी धड़कन से जुड़ी है। इस दिन को एक नए संकल्प का प्रतीक बनाएँ—एक ऐसी दुनिया का वादा, जहाँ हर प्राणी के लिए सम्मान, प्यार और सुरक्षा हो। हर कदम गिनती करता है, हर संकल्प बदलाव लाता है।

*प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)*

# आहार से व्यवहार - मक्के से प्लास्टिक

चंद्र मोहन

मक्के की रोटी और सरसों का साग, खान-पान मैं पंजाब के मानचित्र से होता हुआ दुनिया मैं खान-पान के नंबर एक की पायदान पर पहुँच गया है.

मक्के के उत्पादन मैं भारत दुनिया मैं सातवें नंबर पर आता है. मक्के की खेई के लिए समर्पित कुल क्षेत्रफल के मामले मैं भारत दुनिया मैं चौथे नंबर पर आता है. भारत मैं मक्के की औसत उपज करीब 2.5 टन प्रति हेक्टेयर है. भारत मैं मक्का खरीफ ( ग्रीष्म कालीन मानसून ) और रबी ( शीतकालीन ) दोनों मौसम मैं उगाया जाता है.

मक्का कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन और आहारीय फाइबर का अच्छा स्रोत है.

दुनिया मैं इसे खाद्य, चारा, पशु चारे और बड़ी संख्या मैं औद्योगिक उत्पादों के लिए कच्चे माल के रूप मैं इसके विविध उपयोग के लिए अत्यधिक महत्व दिया जाता है.

मक्का दुनिया मैं सबसे ज्यादा उगाये जाने वाले खाद्य पौधों मैं से एक है. लोग पौधों के बीज को खाते हैं जिन्हें कर्नल या अनाज कहा जाता है.

मक्का घास परिवार से सम्बंधित है. इसका वैज्ञानिक नाम ज़यिा मेस है.

मक्का उत्पादन में बिहार देश में अहम भूमिका निभा रहा है और देश के कुल मक्का उत्पादन में बिहार का योगदान लगभग 11% है. आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान और महाराष्ट्र के बाद बिहार देश का 5वां सबसे बड़ा मक्का उत्पादक राज्य है.

बिहार को मक्का उत्पादन के लिए राष्ट्रीय कृषि कर्मण पुरस्कार प्राप्त हुआ है. राज्य सरकार मक्का उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के साथ-साथ किसानों को उनकी फसलों का बेहतर मूल्य दिलाने के लिए निरंतर काम कर रही है. सरकार की योजना है कि बिहार को मक्का निर्यातक राज्य के रूप में विकसित किया जाए.

मक्का उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण और बीज उत्पादन के क्षेत्र में असीम संभावनाएँ हैं. सरकार के प्रयासों से राज्य में कई निजी कंपनियों ने मक्का भंडारण के लिए आधारभूत संरचना का विकास किया है जिससे राज्य में मक्का भंडारण क्षमता अब लगभग 5 लाख मीट्रिक टन हो गई है.

2023-24 में राज्य में मक्का उत्पादन में वृद्धि हुई है. पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर, मधेपुरा, सहरसा, खगड़िया और समस्तीपुर जैसे जिलों में मक्का उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है. इन जिलों में किसान औसतन 50 क्विंटल प्रति एकड़ मक्का का उत्पादन कर रहे हैं. इसके साथ ही, राज्य में स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न के क्षेत्र विस्तार और बाजार व्यवस्था पर भी काम किया जा रहा है.

जैसे- स्टार्च और औद्योगिक शराब बनाना. लेकिन अब पूरे भारत में इससे व्यंजन बनाए जाते हैं. जैसे- पंजाब की मक्का की रोटी और सरसों का साग , भुने हुए भुट्टे या मकई, एक बहुत पसंद किया जाने वाला मानसून उपचार है, खासकर जब स्वाद के लिए नमक स्प्रे के साथ गर्म खाया जाता है. अतिरिक्त मीठे मकई के दाने, उबले हुए साबुत और मसालेदार, बाजार में या सिनेमा हॉल के नाश्ते में शाम के खाने में लोकप्रिय हो गए हैं.

मकई का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में, मानव भोजन के रूप में, जैव ईंधन के रूप में और उद्योग में कच्चे माल के रूप में भी किया जाता है. कृषि उत्पाद जिन्हें मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त समझा जाता है, अन्य उपयोगी उत्पादों के लिए उपयोग किया जाता है. ऐसा उपयोगी उत्पाद कॉर्न स्टार्च से बायोपॉलिमर से बने प्लास्टिक का विकल्प हैं. बायोपॉलिमर प्लास्टिक उत्पादों की तुलना में 2.5 गुना महंगे हैं लेकिन जहां यह स्कोर कर सकता है, वह यह है कि आप 50 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक बैग का उत्पादन नहीं कर सकते हैं. दूसरी ओर, हम 20 माइक्रोन के बायोपॉलिमर बैग का उत्पादन कर सकते हैं.

हालांकि माइक्रोन का स्तर कम है, ये बायोपॉलिमर प्लास्टिक की थैलियों की तुलना में अधिक मजबूत होते हैं. प्लास्टिक से बना 50 माइक्रोन पारंपरिक पॉलीबैग सामान्य रूप से दो किलो तक के उत्पादों को पकड़ सकता है. बायोपॉलिमर बैग में पांच किलो तक के उत्पाद रखे जा सकते हैं.

# अपनी बात पर अडिग रह कर विपक्ष द्वारा भी सम्मान अर्जित करना और अपनी बातों का लोहा मनवाना कोई मल्होत्रा जी से सिखे : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्ली :** दिल्ली जनसंघ एवं भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और दिल्ली के पूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद प्रोफेसर विजय कुमार मल्होत्रा की पुण्य स्मृति में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा की अध्यक्षता में आज सिविक सेंटर में आयोजित श्रद्धांजली सभा में बड़ी संख्या में भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित की।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रमुख डॉक्टर अनिल अग्रवाल, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह एवं डा. राधा मोहनदास अग्रवाल, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा की अध्यक्षता में हुई श्रद्धांजलि सभा को संबोधित किया और प्रोफेसर विजय कुमार मल्होत्रा को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्रद्धांजली सभा में उपस्थित केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, भाजपा के राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री महेन्द्र पाडे, सांसद मनोज तिवारी, रामवीर सिंह बिधूड़ी, कमलजीत सहरावत, योगेन्द्र चंदोलिया, बाँसुरी स्वराज, संगठन महामंत्री पवन राणा, प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल, महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा. हर्षवर्धन, सतीश उपाध्याय एवं शलि सहित भाजपा के कई वरिष्ठ नेता, प्रदेश मुख्य टीम के साथ ही मोर्चा एवं प्रकोष्ठों के अध्यक्षों सहित प्रो. मल्होत्रा परिवार के अनेक सदस्य उपस्थित थे। श्रद्धांजली सभा के मंच का संचालन श्री राजीव बब्बर ने किया।

सभा के अंत में प्रो. मल्होत्रा के पुत्र अजय मल्होत्रा ने सभी का आभार प्रकट किया।

केन्द्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि बहुत दुखदायी लगता है जब किसी के नाम को हम स्वर्गीय कहकर पुकारें। मल्होत्रा का लंबा राजनीतिक अनुभव और उनकी राजनीति समझ इस बात की साक्षी है कि उन्होंने दिल्ली में ही नहीं बल्कि देश भर में भाजपा को एक नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि मुझे याद है कि जब जम्मू कश्मीर एक विशेष दर्जा प्राप्त प्रदेश हो गया था, तब हम उसके लिए सहमत नहीं थे और दिल्ली में इसके लिए एक्टिव रुप से मल्होत्रा जी ने पार्टी को संगठीत करने का काम किया था।

मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि मल्होत्रा ने संघ में, जनसंघ में, भाजपा में, और विद्यार्थी परिषद के अलावा खेलो में भी कई खिलाड़ियों को प्रेरणा देने का काम किया। मुझे भी सौभाग्य मिला और आखिर बार जब सदैव अटल स्थान पर मिले तो केन्द्र के अनुभवों के बारे में उन्होंने लंबी चर्चा की। वे गणित के बहुत ज्ञाता थे। यानि जीवन के किसी भी पहलुओं से अगर उनपर चर्चा करनी है तो वह हर पहलुओं के ज्ञानी व्यक्तित्व के धनी व्यक्तियों में से एक है। केन्द्र सरकार की ओर से मैं उनका श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत प्रचारक डॉ अनिल अग्रवाल ने डॉ मल्होत्रा को याद करते हुए कहा कि उनका हमारे बीच से जाना सिर्फ उनके परिवार के लिए ही नहीं बल्कि हमारे समाज के लिए भी एक अपूर्णीय क्षति है। वे सादगी, ईमानदारी और सेवा भाव के नाम के प्रतिक थे। वे हमेशा ही सभी के सुख दुख के सहभागी बने और उनका सहज व्यवहार और मृदभाषी और सरलता सबके हृदय के नीकट लाती थी।

डा. अनिल अग्रवाल ने कहा कि जब देश में स्वधिनता का समय चल रहा था उस वक्त कैंप अटेंड कर रहे थे और उन्हें लाहौर जाने को बोला गया साथ ही जो हिंदू विस्थापित हो रहे थे उनके रहने खाने की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दी गई। एक कर्मठ संघ सेवक के नाते उन्होंने कई दायित्वों का निर्वहन किया। उनकी विराट यात्रा को दिल्ली और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि अनुशासन, धैर्य और संयम का क्या महत्व है वह मल्होत्रा से सीखना चाहिए और जो कह दिया उसपर अडिग रहना भी उनसे सीखना चाहिए। हर व्यक्ति अपने काम से ही महान बनता है। जितना सम्मान माननीय मल्होत्रा को विपक्ष के नेताओं द्वारा मिला है वह किसी अन्य नेताओं को शायद ही मिला होगा। विपक्ष द्वारा भी सम्मान अर्जित करना और अपनी बातों का लोहा मनवाना कोई मल्होत्रा जी से सिखे।

उन्होंने कहा कि मैंने उनको नजदीक से तब जाना जब उन्होंने 1980 में चुनाव लड़ा और उसका मीडिया का काम मुझे दिया। उनके साथ बिताए 16-18 घंटे प्रति दिन काम करना मेरे जीवन का सबसे सौभाग्यशाली और कीमती वक्त था। आज ऐसा लग रहा है कि मेरे सिर से एक साया उठ गया है।

सचदेवा ने कहा कि माननीय मल्होत्रा को देश में आर्चरी की शुरुवात करने का मौक़ा मिला और उन्होंने आर्चरी को सिर्फ़ भारत में ही नहीं एशिया में भी प्रचारित कर स्थापित करने का काम किया।

उन्होंने कहा कि जब कुछ दिन पहले ही मैं स्वयं राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के साथ उनसे मुलाकात करने गया तो उनके चेहरे की मुस्कान बता रही थी कि भाजपा के वर्तमान संगठन से वह बेहद खुश हैं।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह एक शोकसभा नहीं बल्कि एक प्रेरणा सभा है और उस ओजस्वी नेता की है जिन्होंने मेरे जैसे कई हज़ार कार्यकर्ताओं को सिर्फ़ प्रेरणा ही नहीं बल्कि उन्होंने उसे आगे बढ़ाने का काम किया है। वह हर कार्यकर्ता को उसके द्वारा किए गए कार्य के लिए शब्बासी देते थे। मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ जब मैं निगम पार्षद थी और उन्होंने मुझे फोन कर बधाई दी थी।

सीएम गुप्ता ने कहा कि आज अगर दिल्ली के किसी विकास कार्य की नींव उठाकर देखेंगे तो उसमें मल्होत्रा का नाम लिखा होगा। जिन्होंने भाजपा की दिल्ली में नींव रखी और आज जिनके संघर्षों के कारण भाजपा सत्ता में आई है अगर वह ऐक्टिव राजनीति में होते तो शायद हमें इतना संघर्ष ही ना करना पड़ता।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह ने कहा कि श्रद्धेय विजय कुमार मल्होत्रा हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनकी सरलता, विनम्रता और उनके आदर्श सदैव हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत रहेंगे। अटल स्मृति न्यास के वे अध्यक्ष थे तो उनसे मेरा हमेशा मिलना होता था और जब भी कार्यक्रम होता था तो उसकी विस्तृत जानकारी लेते थे और साथ ही सुझाव भी देते थे।

# दिल्ली में मामूली कहासुनी में बस मार्शल ने कंडक्टर की अंगुली चबाई, पुलिस ने किया गिरफ्तार

दक्षिणी दिल्ली के धौला कुआं बस टर्मिनल पर एक बस मार्शल ने बहस के बाद कंडक्टर की उंगली चबा ली। कंडक्टर ने रूट को लेकर असहमति जताई थी जिसके बाद मार्शल ने गाली-गलौज और मारपीट की। पुलिस ने आरोपी बस मार्शल को गिरफ्तार कर लिया है और घायल कंडक्टर का एम्स ट्रामा सेंटर में इलाज चल रहा है।

**दिल्ली।** धौला कुआं बस टर्मिनल पर कहासुनी होने पर एक बस मार्शल ने कंडक्टर के बाएं हाथ की एक अंगुली चबा ली। बस टर्मिनल में मौजूद लोगों ने पीड़ित को बचाया। पीड़ित ने मामले की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने घायल को एम्स ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया, जहां उनकी अंगुली का आपरेशन हुआ। साउथ कैंपस थाना पुलिस ने पीड़ित के बयान पर 29 सितंबर को मामला दर्ज कर आरोपित मार्शल को गिरफ्तार कर लिया है। मुनिरका निवासी जितेन्द्र कुमार पूनिया वर्ष 2019 से डीटीसी में अनुबंध आधार पर कंडक्टर कार्यरत है। पुलिस को दी शिकायत में जितेन्द्र ने बताया कि 28 सितंबर को उसकी ड्यूटी धौला कुआं से सेक्टर 62 नोएडा जाने वाली बस पर थी। पीड़ित के अनुसार शाम करीब पांच बजे वह बस को लेकर नोएडा से धौला के लिए निकले। बस में ड्राइवर मनोज कुमार व मार्शल मान सिंह साथ में थे। शाम 5:30 बस नेहरू नगर पहुंची। जाम होने के कारण ड्राइवर ने उनसे बस को लाजपत नगर फ्लाईओवर के ऊपर से लेकर चलने के बारे में पूछा। मगर पीड़ित ने मना कर दिया और रूट के हिसाब से चलने को कहा। इसको लेकर जितेन्द्र और मार्शल मान सिंह की बहसबाजी भी हुई। आरोप है कि शाम करीब 6:30 बस धौला कुआं टर्मिनल पर पहुंची तो वह बस में बैठकर खाना खाने लगे। इसी बीच बस मार्शल मान सिंह उनके पास आया और रास्ते में हुई घटना को लेकर गाली-गलौज करने लगा। विरोध करने पर आरोपित मारपीट पर उतर आया।

# मौलाना तौकीर रज़ा ख़ान की गिरफ़्तारी बेहद चिंताजनक :यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा

शम्स आगाज

**नई दिल्ली।** यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के क़ौमी प्रवक्ता हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने मोर्चा के क़ौमी दफ़्तर लक्ष्मी नगर, दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में मशहूर आलिम-ए-दीन मौलाना तौकीर रज़ा ख़ान की गिरफ़्तारी, बरेली में सैकड़ों लोगों की गिरफ़्तारी और बुलडोज़र कार्रवाई को बेहद चिंताजनक और ख़तरनाक क़रार दिया। उनके मुताबिक़ ये घटनाएँ मुल्क को फ़िर्क़ावाराना सियासत और नफ़रत की तरफ़ धकेलने की निशानी हैं।

हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने कहा कि पूरा मामला दरअसल एक सादा और पुरअमन नारा ₹आई लव मुहम्मद₹ से शुरू हुआ था, जो सिर्फ़ अकीदत और मोहब्बत का इज़हार था। लेकिन इसे बदनीयती के साथ क़ानून-व्यवस्था के लिए ख़तरा क़रार देकर बेगुनाह लोगों के ख़िलाफ़ एफ़आईआर दर्ज की गईं और सामूहिक गिरफ़्तारियाँ की गईं। उन्होंने इस अमल को नाइंसाफ़ी और हिंदुस्तानी तहज़ीबी रिवायतों पर खुला हमला बताया, जिनमें सदियों से इंसान की इज़्ज़त, साझा तहज़ीब और बक़ा ए बाहमी को अहमियत दी जाती रही है।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि राज्य की ताक़त का इस तरह इस्तेमाल न सिर्फ़ क़ानून की बाला-दस्ती को कमज़ोर करता है बल्कि जनता में बेचैनी और बेएतिमादी भी बढ़ाता है। हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने कहा कि किसी ख़ास तबक़े को निशाना बनाना और उन पर बेबुनियाद मुक़दमे दर्ज करना, हिंदुस्तान के संविधान की रूह और इंसाफ़ के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ है।

उन्होंने हुकूमत और इंतेज़ामिया से पुरज़ोर माँग की कि बेवजह दर्ज मुक़दमे फ़ौरन वापस लिए जाएँ, बेगुनाह गिरफ़्तार लोगों को रिहा किया जाए और हुक्मरानी के तरीक़े में इंसाफ़, तवाज़ुन और बराबरी को बहाल किया जाए। उनका कहना था कि हिंदुस्तान की असली ताक़त उसके आइनी ढाँचे, तक्सीरियत (pluralism) और आपसी एहतिराम में छुपी है और इन बुनियादों को वक़्ती सियासी फ़ायदों के लिए नुक़सान पहुँचाना पूरे मुल्क के हित के ख़िलाफ़ है।

आख़िर में हाफ़िज़ ग़ुलाम सरवर ने मिल्लत-ए-इस्लामिया से अपील की कि वह सब्र, अदल और अमन के रास्ते पर क़ायम रहें और नबी-ए-अकरम ﷺ की सीरत-ए-तय्यिबा से रहनुमाई हासिल करें। साथ ही उन्होंने समाजी तंजीमों, इदारों, ख़ानक़ाहों और मुअज़्ज़ज़ शख़्सियात से अपील की कि मुत्तहिद होकर एक मुश्तरका लायहा-ए-अमल तैयार करें ताकि ऐसे नाज़ुक हालात का गम्भीरता से मुक़ाबला किया जा सके।

# विश्व रक्तदान दिवस पर सीआरपीएफ जवानों ने दिखाया मानवता का जज्बा

## ग्रुप केन्द्र बिलासपुर में रक्तदान शिविर, 27 जवानों ने किया रक्तदान

सुनील चिंचोलकर

**बिलासपुर,छत्तीसगढ़।** विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, भरनी बिलासपुर में अधिकारियों एवं जवानों ने "रक्तदान जीवनदान" की भावना को आत्मसात करते हुए रक्तदान किया।

कार्यक्रम का आयोजन राज कुमार, उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र बिलासपुर के मार्गदर्शन में ग्रुप केन्द्र अस्पताल बिलासपुर, छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन बिलासपुर महिला इकाई एवं पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। शिविर से प्राप्त रक्त बिलासा ब्लड सेंटर संस्था को उपलब्ध कराया गया।

इस अवसर पर उप महानिरीक्षक राज कुमार ने सर्वप्रथम रक्तदान कर जवानों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने कहा कि रक्तदान मानवता का सर्वोच्च कार्य है, जो निस्वार्थ भाव से किया जाना चाहिए। यह कदम उन गंभीर रोगियों और दुर्घटनाग्रस्त लोगों के जीवन बचाने में सहायक होगा, जिन्हें रक्त की तत्काल आवश्यकता होती है।

त्योहारी अवकाश पर अधिकतर जवानों की अनुपस्थिति के बावजूद 27 अधिकारियों और जवानों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

रक्तदान शिविर में मनोज कुमार (कमाण्डेन्ट), डॉ. अशलेशा कोहड (मुख्य चिकित्सा अधिकारी), पायल लाठ (सोशल वर्कर), अवजीत प्रभात सहा (कमाण्डेन्ट), नीलिमा नर्जरी (उप कमाण्डेन्ट, मंत्रालय), कलावती ठाकुर (सहायक कमाण्डेन्ट), सुशील पाण्डेय (सहायक कमाण्डेन्ट, मंत्रालय), पी. नर्जरी (सहायक कमाण्डेन्ट, मंत्रालय) सहित सीआरपीएफ के अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी, जवान एवं महिला कर्मी उपस्थित रहे।

# शरद ऋतु का विशिष्ट पर्व: शरद पूर्णिमा -डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

### शरद पूर्णिमा (06 अक्टूबर 2025) पर विशेष

सनातन धर्म के सभी पर्वों व त्योहारों में शरद पूर्णिमा सर्वश्रेष्ठ है। यह शरद ऋतु का विशिष्ट पर्व है। इस दिन चन्दमा पृथ्वी के सबसे अधिक निकट होता है और चन्दमा की चाँदनी अत्यंत निर्मल व पावन होती है। शरद पूर्णिमा का चंद्रमा और उसकी उज्ज्वल चन्द्रिका सभी को माधुर्य व आनंद की अनुभूति कराती है। ऐसा माना जाता है कि शरद पूर्णिमा की दिव्य व वैभवमयी रात्रि के चंद्रमा की चाँदनी में अमृत समाहित होता है। अतः शरद पूर्णिमा की रात्रि को अमृत बरसता है। शरद पूर्णिमा ग्रीष्म से शरद में प्रदेश का द्वार है। इसे भक्ति व प्रेम के रस का समुद्र भी माना गया है। इसको कन्हैया की वंशी का प्रेम नाद एवं जीवात्मा व परमात्मा के रास रस का आनंद भी कहा गया है। इसीलिए इसे लोक से लेकर शास्त्रों तक में शुभ व मंगलकारी माना गया है। शरद पूर्णिमा जीवन को एक नई प्रेरणा देने के साथ-साथ जीवन के उत्थान का आधार और उसे सही दिशा दिखाने का माध्यम भी है। वस्तुतः शरद पूर्णिमा जितनी पावन व पुनीत किसी भी ऋतु की कोई भी रात्रि नही है।शरद पूर्णिमा महालक्ष्मी का भी पर्व है।ऐसी मान्यता है कि धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री भगवती महालक्ष्मी शरद पूर्णिमा की रात्रि में पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं। अतः यह लक्ष्मी पूजा का भी पर्व है। इस तिथि को देवराज इंद्र तक ने माँ महालक्ष्मी का स्तवन किया था। क्योंकि महालक्ष्मी धन के अतिरिक्त यश, उन्नति, सौभाग्य व सुंदरता आदि की भी देवी हैं।

विभिन्न धर्म-ग्रंथों में शरद पूर्णिमा को अत्यंत गुणकारी माना गया है। शरद पूर्णिमा पर चन्द्रमा की अमृतमयी रश्मियाँ न केवल हमारे मन पर अपितु समूची प्रकृति पर अपना विशेष प्रभाव डालतीं हैं। अतः इस दिन हम सभी का मन उमंगों से सराबोर हो जाता है। छह ऋतुओं के मध्य स्थित शरद ऋतु की पूर्णिमा को कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में ₹नव वधु₹ की संज्ञा दी है। चूंकि शरद पूर्णिमा की रात्रि में चंद्रमा से अमृत झरता है इसलिये इस रात्रि को खुले आकाश के नीचे दूध व चावल से बनी खीर रखने का विधान है। इस खीर को खाने से शरीर निरोग, मन प्रसन्न और आयु में वृद्धि होती है। ऐसा आयुर्वेद के ज्ञाताओं का कहना है।

इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा हम सभी को आरोग्यता भी प्रदान करती है। इस दिन महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित चंद्रमा के 27 नामों वाले ₹चंद्रमा स्तोत्र₹ का पारायण करने का भी विधान है। जिसमें प्रत्येक श्लोक का 27 बार उच्चारण किया जाता है।

शरद पूर्णिमा की पीयूष वर्षिणी रात्रि को भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी 11 वर्ष की आयु में श्रीधाम वृन्दावन के वंशीवट क्षेत्र स्थित यमुना तट पर असंख्य ब्रज गोपिकाओं के साथ दिव्य महारास लीला की थी। सर्वप्रथम उन्होंने अपनी लोक विमोहिनी वंशी को बजाकर गोपिकाओं को एकत्रित किया और फिर योगमाया के बल पर शरद पूर्णिमा की रात्रि को छह माह जितना बड़ा बनाकर प्रत्येक गोपिका के साथ एक-एक

श्रीकृष्ण प्रकट किए। ततपश्चात दिव्य महारास लीला की। इस दिव्य महारास लीला में समस्त गोपिकाओं को यह अनुभव हो रहा था कि श्रीकृष्ण केवल उन्हीं के साथ हैं। भगवान शिव भी ब्रज गोपी का रूप धारण कर इस अद्वितीय लीला को देखने आए थे। क्योंकि उसमें किसी भी पुरूष का प्रवेश वर्जित था। तभी से भगवान शिव का एक नाम ₹गोपीश्वर महादेव₹ एवं भगवान श्रीकृष्ण का एक नाम ₹रासेश्वर श्रीकृष्ण₹ पड़ा। अन्य देवता भी इस लीला को देखने के लिए अपने-अपने विमानों में बैठकर आकाश पर छाए रहे थे। साथ ही उन्होंने पुष्प बरसाए थे। ऐसा माना जाता है कि महारास लीला के बाद से ही संगीत का उद्भव हुआ। श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में 29 से 33वें अध्याय तक महारास लीला का विस्तार से वर्णन है।

महारास लीला के मूलभाव को इस प्रकार समझा जा सकता है: वस्तुतः भागवान श्रीकृष्ण आत्मा हैं, आत्मा की वृत्ति राधा हैं और शेष आत्माभिमुख वृत्तियां गोपियां हैं। इन सभी का धारा प्रवाह रूप से निरंतर आत्म रमण ही महारास है। भगवान श्रीकृष्ण के समान ही गोपिकाएँ भी परम-रसमयी व सच्चिदानंदमयी थीं। इसीलिए वे भगवान श्रीकृष्ण की मुरली की सम्मोहक पुकार सुनते ही अपने सभी पारिवारिक दायित्वों को छोड़कर तुरंत उनके पास चलीं आयीं। वस्तुतः उनका यह त्याग धर्म, अर्थ और काम का त्याग था। चूंकि भगवान श्रीकृष्ण का सानिध्य मोक्षदायक है इसलिए उन्होंने उसकी प्राप्ति के लिए अन्य पुरुषार्थों को त्याग दिया। यह उनके विवेक और वैराग्य का सूचक था। विवेक के ही द्वारा नित्य व अनित्य का ज्ञान होता है। और वैराग्य लोक-परलोक के भोगों में अलिप्तता का सूचक है। भगवान श्रीकृष्ण ने जब गोपीकाओं को अपने नारी धर्म के निर्वाह का उपदेश दिया तो उन्होंने उनसे यह कहा कि आप ही नित्य हैं, अन्य सभी सम्बंध अनित्य हैं अतः आपसे अनुराग रखना ही हम सभी का धर्म है। इस सबका सार यह है कि यदि जीव ईश्वर से एकाकार होना चाहता है तो उसे गोपीभाव अपनाना होगा और उसे अपने अहंकार व अभिमान का त्याग करके ₹कृष्ण₹नामक परम- तत्व से जुड़ना होगा।

जो व्यक्ति भगवान श्रीकृष्ण की इस दिव्य महारास लीला के भाव को समझने में असमर्थ हैं उन व्यक्तियों को यह लीला श्रृंगार रस से परिपूर्ण दिखाई देती है। जब कि ऐसा रंच-मात्र भी नही है। भगवान श्रीकृष्ण तो कृपा से साक्षात अवतार थे। साथ ही वह ₹पूर्ण काम₹हैं। उनके मन में कभी कोई कामना आती ही नही है। साथ ही उनकी इच्छा के बगैर कामदेव भी उनके अंदर प्रवेश नही कर सकता है। अतः वह महारास लीला लौकिक काम की दृष्टि से कैसे कर सकते थे। लौकिक दृष्टि से देखें तो हम यह पाएंगे कि भगवान श्रीकृष्ण ने महारास लीला अपनी मात्र 11 वर्ष की बाल्यावस्था में की थी। इस आयु में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा की गई इस लीला को कामवासना से प्रेरित कहना हास्यास्पद है। क्योंकि यह आयु कामवासना की नही होती है। श्रीमद्भागवत में महारास लीला के प्रसङ्ग का वर्णन परमयोगी सुखदेव महाराज ने किया है और उसके श्रोता विवेक-वैराग्य सम्पन्न व अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करने वाले परीक्षित महाराज हैं। ऐसे पुण्यात्मा वक्ता-श्रोता लौकिक श्रृंगार की बातें कहेंगे-सुनेंगे, यह सोचना मूर्खतापूर्ण है। सच तो यह है कि भगवान श्रीकृष्ण ने महारास लीला के माध्यम से आनंद की जो अंतिम सीमा है, उस अंतिम सीमा वाले आनंद अर्थात महारास के रस को अधिकारी जीवों में वितरित किया था।

शरद पूर्णिमा के दिन श्रीधाम वृन्दावन में चहुँओर अत्यंत विकट, अद्भुत व निराली धूम रहती है। क्योंकि शरद पूर्णिमा, वृन्दावन और महारास एक दूसरे के पूरक हैं।

साथ ही यहां आज के ही दिन भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा की गई अपूर्व रस-वृष्टि की अजस्त्र धारा आज भी यहां प्रवाहित होकर ब्रज संस्कृति को अनुप्राणित कर रही है। इसीलिए शरद पूर्णिमा को रास पूर्णिमा भी कहा जाता है। शरद पूर्णिमा के दिन वृन्दावन के ठाकुर बाँके बिहारी मंदिर में ठाकुर बाँके बिहारी जी महाराज मोर मुकुट, कटि-काछनी एवं वंशी धारण करते हैं। साथ ही यहां के विभिन्न वैष्णव मंदिरों में ठाकुर श्रीविग्रहों का श्वेत पुष्पों, श्वेत वस्त्रों एवं मोती के आभूषणों से भव्य श्रृंगार किया जाता है। ठाकुर जी के विग्रहों के भोग में भी श्वेत व्यंजनों व पकवानों की प्रधानता रहती है। इसके अलावा यहां जगह-जगह विभिन्न रासलीला मण्डलियों के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य महारास लीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया जाता है। जो कि देर रात्रि तक चलता है। इस दर्शन हेतु देश विदेश से असंख्य भक्त-श्रद्धालु प्रतिवर्ष वृन्दावन आते हैं। ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति एक बार भी इस दिव्य लीला का दर्शन व श्रवण कर लेता है उसे भगवान श्रीकृष्ण की परम-भक्ति प्राप्त होती है। साथ ही वह लौकिक काम से विरक्त हो जाता है।

आज समूचा विश्व ताप से आहत है। क्योंकि मौजूदा भौतिक व यांत्रिक युग में तनाव, दुर्भावनाएं व पारस्परिक वैमनस्य आदि अत्यधिक बढ़ गए हैं। ऐसे में हम सभी के जीवन में भक्ति रूपी, पावन व पुनीत चंद्रमा के उदित होने परम-आवश्यकता है।ताकि हम सभी के जीवन में भी सदैव अमृत झरता रहे। साथ ही हम सबके अशांत मन को शांति मिले, समाज को सद्भावना का प्रकाश मिले एवं हमारे राष्ट्र को आतंक व अराजकता जैसी समस्याओं से मुक्ति मिले।

*(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार हैं)*

### एम्स आउटसोर्सिंग एम्पलाइज यूनियन (सीटू), रायपुर नूरानी चौक, राजा तालाब, रायपुर, छग

# ठेका मजदूरों को बोनस देने की मांग की सीटू ने

**रायपुर।** एम्स आउटसोर्सिंग एम्पलाइज यूनियन (सीटू) ने एम्स में कार्यरत सभी ठेका मजदूरों को 45 दिन का बोनस देने की मांग की है। आज यहां जारी विज्ञप्ति में सीटू के प्रदेश अध्यक्ष एस एन बनर्जी तथा तथा एम्स आउटसोर्सिंग एम्पलाइज यूनियन (सीटू) के अध्यक्ष मारुति डोंगरे ने बताया कि इस मांग के संबंध में एम्स के निदेशक धर्मजीत सिंह चौहान और सभी ठेकेदार कंपनियों को ज्ञापन दिया गया है। ज्ञापन में रेखांकित किया गया है कि रायपुर एम्स में पूरे देश से आने वाले मरीजों का इलाज होता है, जिसे संभव बनाने में एम्स में कार्यरत ठेका मजदूरों का अहम योगदान होता है, जो 365 दिन, चौबीसों घंटे अपनी सेवाएं देते हैं। उनकी जी-तोड़ मेहनत से ही एम्स का कामकाज सुचारू रूप से चलता है। सीटू नेताओं ने कहा है कि बोनस अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, सेवा योजक को हर मजदूर को उसके वेतन का न्यूनतम 8.33% बोनस देना अनिवार्य है। लेकिन एम्स के ठेका मजदूरों को आज तक बोनस न देकर ठेकेदार कंपनियों ने मजदूरों के साथ धोखाधड़ी की है और वे लाखों रुपयों की बोनस राशि हर साल हड़प रहे हैं। मजदूरों के साथ होने वाले इस अन्याय के प्रति एम्स प्रबंधन ने भी अपनी आँखें मूंद रखी है, जबकि मजदूरों को ठेकेदारी शोषण से बचाना उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी थी। मजदूर नेताओं ने एम्स में कार्यरत सभी मजदूरों को दीवाली से पहले बोनस भुगतान न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है और एम्स प्रबंधन से अपेक्षा की है कि वे मजदूरों के हितों में बने कानूनों का पालन अपने अधीनस्थ ठेका कंपनियों से करवाएंगे।

*एस एन बनर्जी, अध्यक्ष, सीटू, छत्तीसगढ़*
*मारुति डोंगरे, अध्यक्ष, एम्स आउटसोर्सिंग एम्पलाइज यूनियन*

# जुए और नशें की लत की वजह से युवा हो रहें हैं बर्बाद वसीम अहमद पूर्व मिडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश

परिवहन विशेष न्यूज

कई लोग आत्महत्या और हिंसा जैसा गंभीर कदम भी उठा लेते हैं।

आज हम अपनी मेहनत से ज्यादा पाने की कोशिश में लगे रहते हैं और चाहते हैं कि कुछ करना भी ना पड़े और पैसे भी आ जाए इसके लिए चाहे ऑनलाइन जुए का सहारा लेना पड़े चाए आज ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' यानी धन आधारित ऑनलाइन खेल एक ऐसा ही चलन है, जिसने अब मनोरंजन की सीमा को पार करते हुए पैसे कमाने के लालच में आज़ आदमी कम समय में अधिक पैसा कमाना चाहते हैं इसके लिए चाहें जो भी काम करना पड़े वो काम करते हैं चाहे चोरी हो या जुआं सब जायज़ मान कर बस पैसा कमाना है चाहे इसके लिए कुछ भी करना होगा करेंगे उपजी लत और आर्थिक नुकसान का जटिल स्वरूप ग्रहण कर लिया है। भारी तादाद में लोग इसके जाल में फंस रहे हैं और अपनी मेहनत की कमाई गंवा रहे हैं। इसे लेकर पिछले काफी समय से चिंता जताई जा रही है,

# "अमेरिकन जॉब्स फर्स्ट" रणनीति बनाम सामाजिक योजनाएं स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा के लिए अधिक फंडिंग प्राथमिकता नतीजा "सरकारी शटडाउन"

**ट्रंप भले ही पूरी दुनियाँ में टैरिफ लगाकर पैसे कमाने की कोशिश कर रहे हैं,लेकिन आज अमेरिका कीअर्थव्यवस्था संभवत :ठीक नहीं है?- एडवोकेट किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपरअमेरिका जिसे दुनियाँ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और लोकतांत्रिक शक्तियों का प्रतीक माना जाता है, वहां ₹सरकारी शटडाउन₹ जैसी स्थिति समय-समय पर उत्पन्न होती रहती है।यह केवल प्रशासनिक ठहराव नहीं होता, बल्कि वैश्विक आर्थिक तंत्र, अंतरराष्ट्रीय राजनीति और बहुपक्षीय समझौतों पर भी गहरा असर डालता है। हाल ही में ट्रंप प्रशासन के दौर में एक बार फिर से यह शटडाउन सामने आया है। इसके पीछे केवल सरकारी खर्चों के बिल पर संसद (कांग्रेस) में सहमति न बन पाने की वजह नहीं है, बल्कि अमेरिकी लोकतांत्रिक ढांचे की गहरी खींचतान भी जुड़ी हुई है।ट्रम्प के पहले कार्यकाल के दौरान तीन बार शटडाउन हुआ था। 1980 के दशक में रोनाल्ड रीगन कार्यकाल में 8 बार शटडाउन हुआ था। अमेरिका के इतिहास में सबसे लंबा शटडाउन ट्रंप के पिछले कार्यकाल में ही हुआ था जो 35 दिन चला था।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं, कि ट्रंप भले ही पूरी दुनियाँ में टैरिफ लगाकर पैसे कमाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन आज अमेरिका की अर्थव्यवस्था संभवतःठीक नहीं है।अमेरिका में महंगाई ज्यादा है, अर्थव्यवस्था की विकास दर धीमी है। दुनियाँ में सबसे ज्यादा कर्ज आज अमेरिका पर है। अमेरिका पर दुनियाँ में कुल कर्ज का करीब 35 पर्सेंट हिस्सा है। आज अमेरिका पर 3 हजार 200 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है।चूँकि अमेरिका में शटडाउन लगा हुआ है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका में सरकारी शट डाउन की स्थिति की करें तो, अमेरिका में सरकार ने काम करना बंद कर दिया है। क्योंकि ट्रंप सरकार के पास काम करने के लिए पैसे नहीं है।इसीलिए अमेरिका में सरकारी ऑफिस बंद हो रहे हैं और सरकारी कर्मचारियों को बिना सैलरी छुट्टी पर भेजा जा रहा है।दरअसल अमेरिकी सरकार को चलाने के लिए हर साल बजट पास करना जरूरी होता है। इस बजट के पास होने के बाद ही सरकारी कर्मचारियों को वेतन मिलता है। लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप इस बिल को पास नहीं करा पाए है। बिल को पास करने के लिए सीनेट में 60 वोटों की जरूरत होती है। बिल के समर्थन में 55 और विरोध में 45 वोट पड़े। एक तरह से अमेरिकी संसद में राष्ट्रपति ट्रंप की हार है। बिल के पास नहीं होने से सरकार को मिलने वाला पैसा रोक दिया जाता है। इसके बाद अमेरिका में गैर जरुरी सरकारी कामकाज बंद हो जाता है और इसे शटडाउन कहा जाता है।शटडाउन होने से यह असर होगा कि, अमेरिकी सरकार अपने खर्चों को घटाएगी। गैर जरुरी सेवाएं और ऑफिस बंद हो जाएंगे। करीब 40 लाख लोगों की सैलरी पर असर होगा। बड़ी संख्या में लोगों की छंटनी होगी।शटडाउन अगर लंबे समय तक चलता है तो इकोनॉमी भी असर होगा। शटडाउन के दौरान मेडिकल सेवा, सीमा सुरक्षा और हवाई यातायात जैसी जरूरी सेवाएं जारी रहती है। अमेरिका में पिछले 50 साल में फंडिंग बिल अटकने की वजह से 20 बार शटडाउन हुआ है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इसआर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे₹अमेरिकन जॉब्स फर्स्ट₹ रणनीति बनाम सामाजिक योजनाएं, स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा के लिए अधिक फंडिंग प्राथमिकता नतीजा ₹सरकारी शटडाउन₹।

साथियों बात अगर हम अमेरिका में शटडाउन क्यों हुआ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझने की करें तो, अमेरिका की संघीय सरकार का बजट हर साल कांग्रेस (हाउस ऑफ़ रिप्रेजेन्टेटिव्स और सेनेट) से पास होना आवश्यक होता है। लेकिन कई बार सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच नीतिगत मतभेद इतने बढ़ जाते हैं कि बजट अथवा अस्थायी फंडिंग बिल (कंटिन्यूग रिसोलूशन) पारित नहीं हो पाता। इसी के चलते सरकारी एजेंसियों के पास अपने कर्मचारियों को वेतन देने या योजनाओं को चलाने के लिए धन समाप्त हो जाता है।यही स्थिति ₹शटडाउन₹ कहलाती है।हाल ही में शटडाउन की स्थिति इसलिए बनी क्योंकि ट्रंप प्रशासन द्वारा प्रस्तुत बजट और विपक्षी डेमोक्रेट्स की मांगों में सामंजस्य नहीं बैठ पाया।ट्रंप, अमेरिका- मैक्सिको सीमा पर सख्त आव्रजन नीति और ₹अमेरिकन जॉब्स फर्स्ट₹ रणनीति को बजट में प्राथमिकता दे रहे थे, जबकि विपक्ष सामाजिक योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा के लिए अधिक फंडिंग चाहता था। नतीजा यह हुआ कि बजट पर सहमति नहीं बनी और सरकारी मशीनरी ठप पड़ गई।

साथियों बात अगर हम अमेरिका में 'सरकारी शटडाउन' की स्थिति कब कहलाती है? इसको समझने की करें तो₹शटडाउन₹ की परिभाषा अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली से जुड़ी है। जब कांग्रेस बजट या अस्थायी खर्च विधेयक पास नहीं करती, तब सरकार के पास ₹नॉन- एसेंशियल सर्विसेज₹ के लिए धन खत्म हो जाता है।इसके परिणाम स्वरूप :लाखों सरकारी कर्मचारी या तो ₹बिना वेतन₹ घर बैठने के लिए मजबूर हो जाते हैं या उन्हें ₹फरलो₹ पर भेज दिया जाता है।राष्ट्रीय उद्यान, म्यूजियम, रिसर्च लैब्स, और कई तरह की सेवाएँ बंद हो जाती हैं।केवल₹एसेंशियल सर्विसेज₹ जैसे, सेना, पुलिस, आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएँ और हवाई यातायात नियंत्रण सीमित स्तर पर चलते रहते हैं।यदि शटडाउन लंबे समय तक जारी रहता है तो अर्थव्यवस्था की गति पर भारी असर पड़ता है।साधारण शब्दों में, जब सरकार के पास कर्मचारियों को वेतन देने और योजनाओं को चलाने के लिए ₹कानूनी स्वीकृत धन₹ नहीं होता, तो वही स्थिति ₹सरकारी शटडाउन₹ कहलाती है।

साथियों बात अगर हमग्लोबल शटडाउन का खतरा- किसका मीटर डाउन होने वाला है? इसको समझने की करें तो, अमेरिका की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और इसका डॉलर वैश्विक रिज़र्व करंसी है। इसलिए जब अमेरिका में शटडाउन होता है, तो इसका प्रभाव सीमित रूप से ही सही लेकिन पूरे विश्व पर पड़ता है।(1) वित्तीय बाजार पर असर- अमेरिकी शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव बढ़ जाता है, डॉलर कमजोर पड़ सकता है और सोना जैसी सुरक्षित संपत्तियों में निवेश बढ़ जाता है।(2) वैश्विक सप्लाई चेन-जब अमेरिकी प्रशासनिक एजेंसियाँ बंद हो जाती हैं, तो अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनुमोदन, आयात-निर्यात क्लीयरेंस और सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ प्रभावित होती हैं।(3) विकासशील देशों पर दबाव- वे देश जिनकी अर्थव्यवस्था अमेरिकी निवेश या सहायता पर निर्भर है, उन्हें सबसे ज्यादा झटका लगता है।(4) ग्लोबल शटडाउन का रूपक- यदि अमेरिकी शटडाउन लंबा खिंचता है, तो इससे विश्व अर्थव्यवस्था की गति मंद पड़ सकती है।यह₹ग्लोबल शटडाउन₹ जैसा असर डालता है, यानी पूरे सिस्टम का मीटर धीरे-धीरे डाउन होने लगता है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि यह शटडाउन लंबा चलता है तो आईएमफ, वर्ल्ड बैंक और डब्लूटीओ जैसी संस्थाओं की कार्यशैली पर भी अप्रत्यक्ष दबाव पड़ सकता है, क्योंकि अमेरिका इन संस्थाओं में सबसे बड़ा दाता है।

साथियों बात अगर हम भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर असर को समझने की करें तोभारत और अमेरिका के बीच पिछले कुछ वर्षों से व्यापार समझौते (ट्रेड डील) पर बातचीत जारी है। इसमें कृषि, सेवा क्षेत्र, डेटा ट्रांसफर, दवा उद्योग और डिजिटल बाजार से जुड़े कई बिंदु शामिल हैं। शटडाउन के कारण इन वार्ताओं पर भी असर पड़ सकता है।(1) प्रशासनिक रुकावट-अमेरिकी व्यापार विभाग और संबंधित एजेंसियों के कामकाज ठप होने से बातचीत की गति धीमी हो सकती है।(2)राजनीतिक अनिश्चितता - भारत यह समझने में असमंजस की स्थिति में है कि अमेरिकी नीति अगले कुछ महीनों में किस दिशा में जाएगी।(3) निवेश पर असर-अमेरिकी कंपनियाँ भारत में निवेश के फैसले स्थगित कर सकती हैं क्योंकि उन्हें अपने घरेलू हालात स्पष्ट होने तक इंतजार करना होगा।(4)रणनीतिक साझेदारी- हालांकि भारत और अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी (जैसे रक्षा और टेक्नोलॉजी सहयोग) इतनी मजबूत है कि अल्पकालिक शटडाउन से टूटने वाली नहीं है, लेकिन अल्पावधि में इसके नकारात्मक संकेत ज़रूर मिल सकते हैं।इसलिए कहा जा सकता है कि शटडाउन भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता की रफ्तार को धीमा कर देगा, लेकिन इसे पूरी तरह रोक नहीं पाएगा।

साथियों बात अगर हमअमेरिका में विपक्ष के पास इतने अधिकार कैसे आए कि ट्रंप का सिस्टम शटडाउन कर दिया? इसको समझने की करें तो अमेरिका का लोकतांत्रिक ढांचा ₹चेकस एंड बैलेंसस₹ के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें राष्ट्रपति (एग्जीक्यूटिव), कांग्रेस (लेजिस्लेचर) और न्यायपालिका (जुडीशियरी) -तीनों शाखाओं को समान अधिकार और परस्पर नियंत्रण की शक्ति दी गई है।(1)कांग्रेस की शक्ति-बजट और कराधान से जुड़े सभी निर्णय कांग्रेस के हाथ में होते हैं।राष्ट्रपति केवल प्रस्ताव दे सकता है, लेकिन अंतिम स्वीकृति कांग्रेस ही देती है।(2)विपक्ष की भूमिका-यदि हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स या सीनेट में विपक्ष के पास बहुमत है, तो वह राष्ट्रपति के बजट प्रस्ताव को रोक सकता है।(3)ट्रंप के मामले में-डेमोक्रेट्स ने सामाजिक कल्याण योजनाओं और पर्यावरणीय मुद्दों पर अधिक बजट की मांग की, जबकि ट्रंप ₹अमेरिका फर्स्ट₹ एजेंडा को प्राथमिकता दे रहे थे। सहमति न बनने पर विपक्ष ने बजट को पारित होने से रोक दिया, जिससे शटडाउन हो गया।(4) लोकतंत्र का सार- यह स्थिति दर्शाती है कि अमेरिकी लोकतंत्र में विपक्ष केवल आलोचक नहीं है, बल्कि वह शासन की दिशा बदलने और रोकने की सटीक शक्ति भी रखता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, अमेरिका में शटडाउन केवल एक प्रशासनिक समस्या नहीं है, बल्कि यह विश्व अर्थव्यवस्था और वैश्विक राजनीति पर असर डालने वाला बड़ा घटनाक्रम है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि किसी भी लोकतंत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए विपक्ष कितना शक्तिशाली हो सकता है। भारत के लिए यह स्थिति अवसर और चुनौती दोनों है-एक ओर भारत को अमेरिका की अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी आर्थिक नीतियों को मजबूत करना होगा, वहीं दूसरी ओर यह भारत को अधिक आत्मनिर्भर बनने का भी अवसर दे रहे हैं।

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ - विचार और सेवा की यात्रा के सौ वर्ष

डॉ.वेदप्रकाश

साधना और शक्ति का उत्सव विजय दशमी इस बार विशेष है क्योंकि इस विजय दशमी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने विचार और राष्ट्र सेवा की यात्रा के 100 वर्ष पूरे कर रहा है। संघ का पूरा नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। दूसरे शब्दों में संघ भारत की निस्वार्थ भावना से सेवा करने हेतु स्वयं प्रेरणा से निकले हुए स्वयंसेवकों का संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1925 में विजय दशमी के दिन डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने की थी।

संघ की 100 वर्ष की यह यात्रा संघर्ष, अभाव, उपेक्षा आदि से होते हुए आज अपेक्षा की यात्रा बन चुकी है। संघ के स्वयंसेवकों और संघ विचार ने कई बार उपेक्षा और प्रतिबंधों को झेलते हुए यात्रा को जारी रखा। लालकिले की प्राचीर से 15 अगस्त 2025 के संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, 100 साल की राष्ट्र की सेवा, एक बहुत ही गौरवपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठ है। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के संकल्प को ले करके 100 साल तक मां भारती के कल्याण का लक्ष्य लेकर लक्ष्यावधि स्वयंसेवकों ने मातृभूमि के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है...।

आज अनेक युवा संघ को क्यों जानना चाहते हैं? इसका स्पष्ट उत्तर है कि संघ की स्थापना से पूर्व डॉ. हेडगेवार ने कॉंग्रेस में रहकर भी कुछ समय कार्य किया, किंतु वहां उन्हें समाज एवं राष्ट्र के विचार और कार्यपद्धति का अभाव लगा। इसलिए उन्होंने देश को संभालने के लिए एक अलग संगठन बनाया। गांधी जी ने उनसे पूछा- अलग से संगठन क्यों? कांग्रेस में ही रहकर स्वयंसेवकों का दल क्यों नहीं खड़ा किया? तब उन्होंने उत्तर दिया- स्वयंसेवक के बारे में मेरी कल्पना अलग है। स्वयं आगे बढ़कर, स्वार्थ छोड़कर, देश का काम करने वालों को मैं तैयार करना चाहता हूं परंतु यह काम राजनीतिक दल के अंग बनकर कदापि संभव नहीं होगा। उनका स्पष्ट मानना था कि ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं के बूते ही राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में उत्थान हो सकता है।

आज संघ का स्वयंसेवक जन-जन की आशा और विश्वास पर खरा उतर रहा है। संघ विचार- व्यक्ति, समाज व राष्ट्र से होते हुए वैश्विक पटल पर पहुंचता है और वसुधैव कुटुंबकम्के लिए कार्य करता है। स्वतंत्रता संग्राम और वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ विभाजन की त्रासदी से भी हम सभी परिचित हैं, उस कठिन समय में भी संघ के स्वयंसेवकों ने भिन्न-भिन्न रूपों में मानवता की सेवा की। 16 सितंबर 1947 को दिल्ली में एक कार्यक्रम में संघ के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए गांधी जी ने कहा था- बरसों पहले मैं वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक शिविर में गया था. वहां मैं उन लोगों का कड़ा अनुशासन, सादगी और छुआछूत की पूर्ण समाप्ति देखकर अत्यंत प्रभावित हुआ था... मैं तो हमेशा से यह मानता आया हूं कि जो भी संस्था सेवा और आत्मिक त्याग के आदर्श से प्रेरित है, उसकी ताकत बढ़ती ही है।₹

संघ मूलतः ऐसे व्यक्ति निर्माण की प्रेरणा से कार्यरत है जो विभिन्न चुनौतियों से जूझते हुए भारत माता को परम वैभव की ओर ले जाएँ। ऐसे व्यक्ति के निर्माण हेतु ही शाखा की पाठशाला सामने आई जहां कोई बालक अथवा व्यक्ति आरंभ से ही अनुशासित जीवन का पाठ पढ़ते हुए खेल खेल में शारीरिक व बौद्धिक उन्नति को प्राप्त करता है। यहीं से वह भारतवर्ष की विराट ज्ञान परंम्परा, संस्कृति,संत- महापुरुषों और बलिदानियों की परंपरा एवं पर्व- उत्सवों से परिचित होता है। यहीं पर वह प्रार्थना के माध्यम से- नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे... का पाठ पढ़ते हुए परमात्मा से हिंदू राष्ट्र एवं मातृभूमि की सेवा हेतु शक्ति मांगता है। इसी प्रार्थना में अंतिम पंक्तियों में वह लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है- परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्... अर्थात भारत माता को परम वैभव की ओर ले जाना ही उसका लक्ष्य है। वह ऐसा कहते हुए भारत माता की जय का उद्घोष करता है। भारत माता उसके लिए भूखंड मात्र नहीं है, अपितु एक चेतना और ईश्वरीय तत्व है।

संघ सदैव समरसता के विचार पर काम करता रहा है। संघ किसी भी दृष्टि से भेद नहीं करता, यहां प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत है। विगत में दत्तोपंत ठेंगड़ी जन्मशताब्दी समारोह में संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने कहा भी है- देश को अगर उन्नत होना है, परम वैभव संपन्न होना है, संगठित होना है तो समरसता अनिवार्य शर्त है। आज राष्ट्रीय और वैश्विक फलक पर संघ के लाखों सेवा कार्य चल रहे हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन है। स्वतंत्रता संग्राम का समय हो, विभाजन की त्रासदी हो, 1962 का भारत-चीन युद्ध हो, 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध हो या 1971 में बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम का समय हो, युद्ध के वातावरण में भी संघ के स्वयंसेवकों ने अपनी चिंता न करते हुए अलग-अलग मोर्चों पर सेना एवं स्थानीय प्रशासन की मदद की है। 1962 के युद्ध में संघ की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 1963 की गणतंत्र दिवस परेड में संघ के स्वयंसेवकों के दल को आमंत्रित किया। इस पर उनकी पार्टी में ही उनकी आलोचना होने पर उन्होंने कहा था- यह दर्शाने के लिए कि केवल लाठी के बल पर भी सफलतापूर्वक बम व चीनी सशस्त्र बलों से लड़ा जा सकता है, विशेष रूप से गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने के लिए आरएसएस को आमंत्रित किया है।

यह भी विदित है कि दादरा नगर हवेली मुक्ति प्रसंग, गोवा मुक्ति संघर्ष, गौ रक्षा अभियान, स्वामी विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण, अयोध्या में राम मंदिर आंदोलन आदि अनेक ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हैं जो संघ एवं स्वयंसेवकों के माध्यम से सर्वस्व समर्पण करते हुए संपन्न हुए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं व दुर्घटनाओं के समय भी संघ बिना किसी औपचारिकता के मदद के लिए सबसे पहले आगे आया है। हरियाणा के चरखी दादरी की विमान दुर्घटना सर्वविदित है जिसमें मरने वाले अधिकांश यात्री मुसलमान थे। शासन- प्रशासन द्वारा पहल न करने पर संघ के स्वयंसेवकों ने पूरी इस्लामिक रीति नीति से उनका अंतिम संस्कार किया। उस समय सऊदी अरब के समाचार पत्र अल रियाद ने लिखा- अभी तक आरएसएस मुस्लिम विरोधी संस्था है, ऐसी हमारी जो धारणा बनी हुई थी, वह एकदम गलत थी, ऐसा अब हमको ध्यान में आया है। आज संघ किसी परिचय का मोहताज नहीं है, अब यह एक ऐसा वटवृक्ष बन चुका है जिसकी शाखाएं न केवल भारत अपितु विश्व के अनेक देशों में फैल चुकी हैं। आज कई देशी-विदेशी विद्वान संघ विचार और कार्य पद्धति पर शोध कर रहे हैं। आज देश-विदेश में संघ की हजारों शाखाएं सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। संघ के स्वयंसेवकों की संख्या भी करोड़ों में हो चुकी है।

इसका कारण स्पष्ट है- संघ व्यक्ति नहीं है, संघ विचार है, संघ धनबल से नहीं अपितु जनबल और आत्मबल से विस्तार और स्वीकार पाता जा रहा है। संघ केवल विचार नहीं, बल्कि जीवनशैली है। इसे स्वयंसेवक जीता है। संघ विचार और संघ कार्य उसके व्याप का मूल है। आज सेवा भारती जैसे संघ के विभिन्न आनुषंगिक संगठन अनेक प्रकार से विचार प्रसार और सेवा कार्य कर रहे हैं। यह भी सर्वविदित है कि आरंभ से ही संघ को अतिवादी, हिंदूवादी, दक्षिणपंथी एवं कट्टर संगठन जैसे अनेक आरोपों का सामना करना पड़ा है। 1948 में गांधी जी की हत्या के बाद संघ को प्रतिबंधित किया गया, किंतु अपने विचार और कार्य से वह निरंतर जन स्वीकृति पाता गया। 1975 के आपातकाल और उसके बाद की परिस्थितियों में संघ निरंतर सशक्त होता गया। जन सामान्य ने उसके विचार और कार्य पद्धति को समझा।

विगत दिनों में कोरोना महामारी से भारत एवं समूचा विश्व ग्रसित हुआ. ऐसे संकट में भी संघ ने अपनी भूमिका को विस्तार दिया है। वर्तमान एवं भविष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रकृति वंदन, जल संरक्षण- संवर्धन, भूमि सुपोषण जैसे अनेक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

संघ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य पद्धति अपनाकर काम करता है। संघ के शताब्दी वर्ष में एक कार्यक्रम में संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि- समाज के हर परिवार में पंच परिवर्तन का भाव पैदा करें इनमें स्वदेशी, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्तव्यों का पालन प्रमुख है। आज जब जन- जन विकसित भारत का संकल्प लेकर बढ़ रहा है, ऐसे में पंच परिवर्तन का भाव व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को सशक्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। 100 वर्ष की यात्रा के बाद संघ न केवल राष्ट्रीय अपितु वैश्विक फलक पर भी समूची मानवता के कल्याण हेतु बड़े संकल्पों के साथ आगे बढ़ेगा, जन मन में ऐसी आशा और विश्वास है।

*असिस्टेंट प्रोफेसर,*
*किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय*

# "स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह"

वीरेन्द्र सिंह परिहार

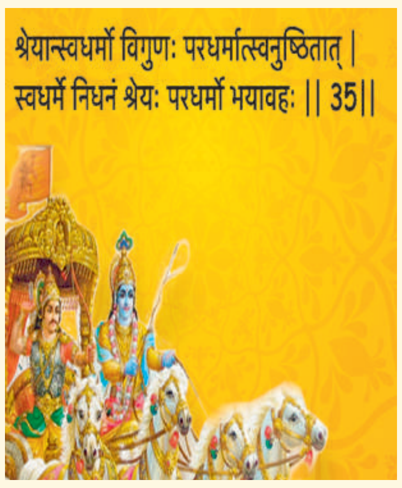


धर्म गतिमान है। प्रवाही रहने के लिये धर्म का चक्र सतत चलते रहना चाहिए। इसलिये भारत की संसद में अध्यक्षीय मंच पर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' यह लिखा है। इस धर्म का रक्षण संवर्धन करते रहने से धर्म समाज का रक्षण एवं संवर्धन करेगा। इसीलिए कहा गया है- धर्मो रक्षति रक्षितः, अर्थात आप धर्म की रक्षा करो, धर्म आपकी रक्षा करेगा। समाज की विजयशालिनी संगठित कार्यशक्ति से ही यह धर्मचक्र सतत कार्यरत रहेगा। गीता में भगवान कृष्ण ने यह कार्य करने हेतु सज्जन शक्ति का संरक्षण और दुष्ट शक्ति का विनाश करना ऐसा कहा है पर इसके लिये शक्ति की उपासना आवश्यक है। सज्जन शक्ति के रक्षण हेतु और दुष्ट शक्ति के विनाश हेतु विवेकपूर्ण ज्ञान भी आवश्यक है।

फ्रेंच चिंतक काफ्का ने अपने शिष्यों से पूँछा- ''पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है, यह सूर्य की प्रदक्षिणा भी करती है, सूर्य मण्डल भी गतिमान है तो दुनिया में स्थिरता किसमें है।'' बाद में कफ्का ने जवाब दिया कि- ''अपने लक्ष्य की ओर अत्यन्त तीव्र गति से जाने वाले बाण में स्थिरता है। इसीलिए ऐसे व्रतधारियो में अक्षय तीव्र ध्येयनिष्ठा सतत जागृत रहना भी आवश्यक है। लोक शक्ति जगाना, लोकमत का परिस्कार करना और उनका संगठन करना यह राष्ट्र की अक्षुणता के लिये और राज्य व्यवस्था ठीक चलाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए संघ संस्थापक डा. हेडगेवार ने अपनी सारी शक्ति इसी कार्य में लगा दी। इस तरह से सबको स्व की अवधारणा के लिये जगाना और एकत्रित करना यह भी बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। कौटिल्य कहते हैं- ''सुखस्य मूलम् धर्मः यानी सुख का मूल धर्म में है- ''धर्मस्य मूलम अर्थ अर्थस्य मूलम राज्यम्। राजस्य मूलम इन्द्रियजयः।'' तो उपभोग के मुकाबले हमारे यहाँ इन्द्रियजयः को इतना महत्व दिया गया है। शरीर ही सब कुछ नहीं, वह तो धर्म का साधन है। शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम। आहार, निद्रा, भय, मैथुन सर्वस्व नहीं है।

गौर करने का विषय है कि हमने पराधीनता के विरूद्ध लड़ाई क्यों लड़ी, स्वराज्य का आग्रह क्यों किया ? विचार करें तो स्वराज्य में स्व पर ज्यादा जोर है। स्व का अर्थ है- अपने स्वत्व का अभिमान उससे प्रगाढ़ प्रेम और उससे प्रेरणा लेकर आजीवन कार्य करने का आग्रह 'स्वराज्य' शब्द में निहित है। स्वत्व से आशय है अपने देश और अपने लोगों तथा इन दोनों को जोड़ने वाला प्राचीन इतिहास उसे निर्माण करने वाले महान पूर्वज, उनका कृतित्व बलिदान एवं पराक्रम। इन सबको मिलाकर ही 'संस्कृति' बनती है। संस्कृति में कला-कौशल साहित्य, सामाजिक रीति-रिवाज सभी कुछ आता है। बहुत से लोग स्वराज और स्वतंत्रता को एक ही अर्थ में ले लेते हैं जबकि प्रत्येक राष्ट्र की एक जीवन-प्रणाली होती है। उसका एक विशेष दृष्टिकोण और एक विशिष्ट धारणा होती है। उसी धारण के आधार पर जो जीवन-रचना होगी, उसे स्वतंत्रता कहेंगे। यह रचना अध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीति, साहित्य कला, विज्ञान किसी भी क्षेत्र में क्या न हो, सर्वत्र अपने तंत्र का प्रयोग ही स्वतंत्रता है। यही स्वतंत्रता जब राजनीतिक क्षेत्र में प्रगट होती है तो उसे स्वराज कहते हैं। स्वराज्य का अर्थ है- अपने राष्ट्र की प्रकृति के अनुसार काम करने की छूट, तभी तो सभी ओर भारतीयता का साक्षात्कार होगा।

पर इस मार्ग में समस्याएं बहुत हैं। जैसे देश में बहुत से लोग भगवा रंग से बहुत परेशान हैं। खास तौर पर विपक्षी राजनीतिक दल और अंग्रेजीदाँ बुद्धिजीवी बहुत परेशान हैं। वे तमाम लोग परेशान हैं, जिन्हें भारत के बारे में थोड़ी सी भी जानकारी नहीं है, रत्ती भर भी समझ नहीं है, जिनके मन में भारत के लिये थोड़ा सा भी सम्मान बाकी नहीं बचा है। ऐसे तमाम लोग परेशान हैं, जो भारत को माता नहीं, उसे भोग-भूमि मानते हैं। इसमें तथाकथित समाजवादी से लेकर जातिपरस्त लोग भी शामिल हैं।

# क्या मुस्लिम देश गाजा के ट्रंप-ट्रैप में फंस गए हैं

राजेश कुमार पासी

अभी तक अमेरिका दुनिया का अकेला सुपर पावर देश माना जाता है, बेशक उसे अब कई देशों से चुनौती मिलने लगी है। यूपीए सरकार के दौरान देश के गृह मंत्री रहे पी चिदंबरम ने बयान दिया है कि वो पाकिस्तान से मुंबई हमले का बदला लेना चाहते थे लेकिन उन्हें सरकार ने अमेरिकी दबाव के कारण इसकी अनुमति नहीं दी। उनकी यह बात सही हो सकती है क्योंकि अमेरिका कभी भी पाकिस्तान का नुकसान नहीं चाहता। पाकिस्तान अमेरिका के लिए एक किराये का गुंडा है जिसका वो कभी भी इस्तेमाल कर सकता है। अमेरिका को पता था कि अगर भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कोई कार्यवाही की तो दोनों देश युद्ध में जा सकते हैं जिससे पाकिस्तान की बर्बादी हो सकती है। इसी तरह इजराइल भी अमेरिका का गोद लिया हुआ एक बच्चा है जो अब इतना ताकतवर हो गया है कि पूरे मध्य एशिया को उसके लिए नियंत्रित करता है।

7 अक्टूबर, 2023 को हमास ने इजराइल पर बड़ा आतंकवादी हमला किया था जिसमें 1200 इजराइलियों की हत्या कर दी गई और लगभग 200 लोगों का अपहरण कर लिया गया। इस हमले में बूढ़े, बच्चे और महिलाओं के साथ कोई रियायत नहीं बरती गई और महिलाओं के साथ दरिंदगी भी की गई। इस हमले के बाद इजराइल ने गाजा पर सैन्य हमला शुरू कर दिया और वो आज भी जारी है। लगभग 60000 लोग इजराइल के हमले में मारे जा चुके हैं और लाखों लोग घायल हो चुके हैं। इन हमलों में इजराइल लगातार गाजा पर हवाई हमले कर रहा है जिसके कारण तीन-चौथाई से ज्यादा इमारतें नष्ट हो चुकी हैं। कहा जा रहा है कि इजराइल के सैन्य अभियानों के इतिहास में यह सबसे विनाशकारी अभियान है।

इजराइल के हमलों के कारण पूरे मध्य एशिया में तनाव फैल गया है। इजराइल के हमलों में बच्चे और महिलाएं भी निशाना बन रहे हैं। इसके कारण पूरी दुनिया में इजराइल की बदनामी हो रही है। उसके खिलाफ संयुक्त राष्ट्र में भी प्रस्ताव पास हो चुका है लेकिन इजराइल रूकने का नाम नहीं ले रहा है। इजराइली हमलों के कारण अमेरिका पर भी भारी दबाव है कि वो इजराइल की मदद कर रहा है। मुस्लिम देश अमेरिका से नाराज हैं कि वो इजराइल के हमलों को क्यों नहीं रोक रहा है।

हमास के बड़े नेता कतर की राजधानी दोहा के एक भवन में सीजफायर को लेकर चर्चा कर रहे थे। उसी समय इजराइल की वायुसेना ने लाल सागर से बैलिस्टिक मिसाइल से उस भवन को उड़ा दिया। इस हमले में हमास के 5 अधिकारी और कतर सेना का एक सैनिक मारा गया। इसके कारण न केवल कतर बल्कि पूरे अरब जगत में अमेरिका के खिलाफ गुस्सा फैल गया क्योंकि अमेरिका ही इन देशों का सुरक्षा प्रदाता है। गाजा में इजराइल के हमलों के कारण पहले ही मुस्लिम जगत अमेरिका से नाराज है. दोहा के हमले के बाद अरब देशों में अमेरिका के प्रति गहरी नराजगी उत्पन्न हो गई है। डोनाल्ड ट्रंप ने इस समस्या की गंभीरता को समझ लिया है, इसलिए उन्होंने इससे बाहर निकलने का रास्ता निकालने की कोशिश शुरू कर दी है। इस कोशिश के अंतर्गत ही इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू डोनाल्ड ट्रंप से मिलने अमेरिका गए थे। वार्ता के दौरान ट्रंप ने कतर के पीएम अल थानी को फोन किया और नेतन्याहू भी लाइन पर आ गए। नेतन्याहू ने कतर पर हमले के लिए थानी से माफी मांगी और कहा कि हमने गलती की है लेकिन अब भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं होगी। इस माफी के बाद ट्रंप ने दुनिया के सामने अपना 20 सूत्रीय शांति प्रस्ताव पेश कर दिया।

इजराइल द्वारा माफी मांगने से पूरे इस्लामी जगत में खुशी की लहर है, इसलिए जल्दबाजी में मुस्लिम देशों ने शांति प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और इजराइल ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। भारत और पश्चिमी देशों द्वारा भी इस प्रस्ताव का स्वागत किया जा रहा है। इसके अलावा आठ अरब देशों, चीन, रूस और पाकिस्तान ने भी इस पहल को अपना समर्थन दे दिया है। देखा जाए तो लगभग सभी देश इस प्रस्ताव के समर्थन में आ गए हैं। हमास ने अभी तक इस प्रस्ताव पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी है। हमास का कहना है कि वो प्रस्ताव की शर्तों का गहन अध्ययन करने के बाद ही अपना रुख स्पष्ट करेगा। जब तक हमास का रवैया स्पष्ट नहीं होता है, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि इस समस्या का समाधान हो गया है.

अगर ट्रंप के 20 सूत्रीय कार्यक्रम की बात करें तो ऐसा लगता है कि ट्रंप ने बहुत सोच समझ कर यह प्रस्ताव पेश किया है। प्रस्ताव के अनुसार यदि दोनों पक्ष इसे स्वीकार कर लेते हैं तो युद्ध तुरंत समाप्त हो जाना चाहिए। समझौता होने के बाद 72 घंटों के भीतर दोनों पक्षों को बंधकों और कैदियों को रिहा करना होगा और शवों को भी एक दूसरे को सौंपना होगा। गाजा का प्रशासन एक तकनीकी और गैर-राजनीतिक फिलिस्तीनी समिति को सौंपा जाएगा जिसकी निगरानी डोनाल्ड ट्रंप की अध्यक्षता वाला 'बोर्ड ऑफ पीस' करेगा जिसमें एक सदस्य ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर भी होंगे। हमास और इजराइल की इसमें कोई भागीदारी नहीं होगी। गाजा की सुरक्षा के लिए अस्थायी अंतरराष्ट्रीय बल का गठन किया जाएगा। इजराइल धीरे-धीरे अपनी सेना गाजा से हटा लेगा लेकिन जब तक गाजा की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो जाती, तब तक इजराइल को कुछ जिम्मेदारियां निभानी होंगी। ट्रंप ने कहा है कि यदि हमास प्रस्तावित शांति समझौते को स्वीकार नहीं करता है तो उसे हराने के लिए इजराइल को अमेरिका का पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा। यही बात नेतन्याहू ने कही है कि अगर हमास इस प्रस्ताव को नहीं मानता है तो इजराइल अपने तरीके से गाजा को हमास से मुक्त करवाएगा।

सवाल यह है कि क्या अमेरिका ने हमास के लिए कोई विकल्प भी छोड़ा है। अगर इस प्रस्ताव की शर्तों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि हमास के लिए प्रस्ताव को मानना या न मानना दोनों ही घातक हैं। अगर वो ट्रंप के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है तो वो खत्म हो जाएगा और अगर नहीं करता है तो भी वो खत्म हो जाएगा। ट्रंप द्वारा दिया गया प्रस्ताव पूरी तरह से इजराइल के पक्ष में झुका हुआ दिखाई देता है। प्रस्ताव की शर्तों को पढ़ा जाए तो पता चलता है कि इसमें वही बातें हैं जिनके लिए इजराइल हमास पर हमले कर रहा है। ईरान इस प्रस्ताव पर क्या रुख अपनाता है, यह भी देखने वाली बात होगी क्योंकि हमास ईरान की मदद से ही चल रहा है। अमेरिका को लगता है कि यह मामला राजनीतिक है जबकि सच यह है कि यह मामला धार्मिक है। ऐसा नहीं लगता है कि हमास इस प्रस्ताव को स्वीकार करने वाला है। हमास ने गाजा पर हमले के बाद बड़ी कीमत चुकाई है लेकिन उसने गाजा नहीं छोड़ा है। अब वो बिना लड़े कैसे गाजा से निकल जाएगा।

वास्तव में ट्रंप ने मुस्लिम देशों को शांत कराने के लिए यह प्रस्ताव पेश किया है। इजराइल के हमलों से 60000 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और ये सिलसिला अभी भी जारी है। इस प्रस्ताव को लाकर ट्रंप ने साबित कर दिया है कि वो शांति चाहते हैं। हमास अगर समझौते को नहीं मानता है तो अमेरिका और अन्य देशों पर से यह दबाव खत्म हो जाएगा कि गाजावासियों की हत्याओं को रोकने के लिए कोई कुछ नहीं कर रहा है। इस प्रस्ताव को लाकर ट्रंप ने मुस्लिमों से उनका विक्टिम कार्ड छीन लिया है। अगर हमास मान जाता है तो गाजा पर अमेरिका का नियंत्रण हो जाएगा और अगर नहीं मानता है तो इजराइल को गाजा पर हमले की खुली छूट मिल जाएगी। देखा जाए तो अब इजराइल के हमलों के लिए हमास को ही जिम्मेदार माना जाएगा क्योंकि उसने शांति प्रस्ताव को खारिज कर दिया है। इस प्रस्ताव को मुस्लिम देशों के नेताओं द्वारा इसलिए स्वीकार कर लिया गया है क्योंकि उनके ऊपर उनकी जनता का दबाव है। जनता चाहती है कि इजराइल के हमले रूक जाएं और गाजावासियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाए। इस प्रस्ताव के बाद मुस्लिम शासकों के ऊपर से जनता का दबाव कम हो सकता है।

ट्रंप ने एक ट्रैप लगाया है और दुनिया उसमें फंस गई है। विशेष रूप से मुस्लिम देश ट्रंप के ट्रैप में फंस गए हैं जबकि वो प्रस्ताव की हकीकत को जानते हैं। इस प्रस्ताव को लाकर ट्रंप ने दिखा दिया है कि वो एक चतुर व्यापारी हैं। इस प्रस्ताव के बाद गाजा पर अमेरिका का पूर्ण नियंत्रण होने वाला है, चाहे हमास हां करे या न करे। अमेरिका गाजा को एक महत्वपूर्ण पर्यटन और व्यापार केंद्र बनाना चाहता है। इससे अमेरिका को आर्थिक लाभ तो होगा ही, इसके साथ-साथ उसे एक और महत्वपूर्ण ठिकाना मिल जाएगा। सबसे बड़ी बात, इजराइल को हमास से छुटकारा भी मिल जाएगा। फिलिस्तीन को इस समझौते से क्या मिलेगा, अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। अंत में सबसे बड़ी बात यह है कि शांति प्रस्ताव में सब कुछ स्पष्ट नहीं है, जिसके कारण आगे चलकर अमेरिका इस प्रस्ताव को कोई भी रूप दे सकता है।

## एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत, सरकारी स्कूल बड़बर में 200 पौधे लगाए

लोगोंवाल,3 अक्टूबर (जगसीर सिंह )-

एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत, बरनाला ज़िला के सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल बड़बर में, श्री सुनीतिंदर सिंह, ज़िला शिक्षा अधिकारी बरनाला के नेतृत्व में और श्री बरजिंदरपाल सिंह, उप ज़िला शिक्षा अधिकारी बरनाला की देखरेख में, प्रधानाचार्या निदा अल्ताफ़ और स्कूल प्रमुख ऋषि कुमार के सहयोग से, छात्रों और शिक्षकों ने स्कूल के आसपास के क्षेत्र में पौधे लगाकर पर्यावरण को हरा-भरा बनाने में योगदान दिया। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत, छात्रों को पौधे वितरित किए गए। छात्रों को संबोधित करते हुए मैडम परमजीत कौर, राजवीर कौर, मास्टर अवनीश कुमार, अवतार सिंह ने कहा कि हम सभी को इस अभियान का हिस्सा बनना चाहिए और सभी को धरती माता के नाम पर एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि केवल पेड़ लगाने से ही हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता, हमें पेड़ की देखभाल भी करनी होती है, उसे समय पर पानी व खाद देना आवश्यक है। इस अभियान के तहत लगाए गए, पेड़ बड़े होकर हमें जीवन के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान कर सकते हैं, जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे की अच्छी देखभाल करती है, उसी प्रकार हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपनी माताओं के नाम पर एक पेड़ लगाएं और उनकी अच्छी देखभाल करें, ताकि वह पेड़ बड़ा होकर घनी छाया प्रदान कर सके। इस अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम, पर्यावरण संरक्षण पर चार्ट प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं।

# खाद्य संस्कृति का विश्व मंच: स्वाद के साथ संस्कृति का संगम

आज की दुनिया में वैश्वीकरण की लहर ने हर क्षेत्र को एक नए रंग में रंग दिया है—चाहे वह फैशन की चमक हो, तकनीक की रफ्तार हो, या मनोरंजन की चकाचौंध। इस लहर ने हमारी थाली को भी एक वैश्विक मंच पर ला खड़ा किया है। कभी वह दौर था जब भोजन केवल स्थानीय रसोई की शोभा था, जहाँ हर व्यंजन उस मिट्टी, मौसम और संस्कृति की जीवंत कहानी कहता था। पंजाब की मक्खनी दाल, राजस्थान का दाल-बाटी-चूरमा, बंगाल की मिष्टि दोई, या गुजरात का कुरकुरा ढोकला—हर स्वाद में उस क्षेत्र की आत्मा बसी थी। लेकिन आज, ये स्थानीय व्यंजन विश्व के हर कोने में अपनी सुगंध बिखेर रहे हैं। दिल्ली की चटपटी चाट लंदन की सड़कों पर, जापानी सुशी न्यूयॉर्क के रेस्तरां में, और दक्षिण भारतीय डोसा ऑस्ट्रेलिया के कैफे में परोसकर दिल जीत रहे हैं। यह केवल खाने का वैश्वीकरण नहीं, बल्कि संस्कृतियों, इतिहास और पहचान का एक वैश्विक उत्सव है। यह प्रक्रिया स्वाद के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सेतुओं का निर्माण करती है, जो अवसरों और चुनौतियों का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करती है।

स्थानीय खाद्य संस्कृति किसी भी समाज का हृदय और आत्मा होती है। यह केवल भोजन नहीं, बल्कि उस समाज की कहानियों, परंपराओं और जीवनशैली का जीवंत दस्तावेज है। भारत जैसे देश में, खाद्य संस्कृति की विविधता एक रंगबिरंगा चित्र प्रस्तुत करती है। पंजाब की मक्खनी लस्सी और सरसों का साग, गुजरात का कुरकुरा ढोकला, बंगाल का मिठास भरा रसगुल्ला, या तमिलनाडु की सांभर-इडली—हर व्यंजन अपने क्षेत्र की जलवायु, संस्कृति और सामाजिक ताने-बाने को उजागर करता है। उदाहरण के लिए, राजस्थान का दाल-बाटी-चूरमा केवल एक पकवान नहीं, बल्कि रेगिस्तान की कठिन परिस्थितियों में जीवटता और संसाधनों के सटीक उपयोग की कहानी है। इसी तरह, केरल की नारियल-आधारित करी वहाँ के समुद्री तटों, प्रचुर नारियल और मसालों की समृद्धि को दर्शाती है। ये व्यंजन केवल स्वाद नहीं, बल्कि स्मृतियों, इतिहास और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक हैं।

वैश्वीकरण ने इन स्थानीय स्वादों को विश्व पटल पर ला खड़ा किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इस यात्रा को अभूतपूर्व गति दी है। आज, यूट्यूब पर कोई भारतीय गृहिणी अपनी पारंपरिक बिरयानी की रेसिपी साझा करती है, तो वह दुनिया के किसी कोने में बैठे व्यक्ति को न केवल प्रेरित करती है, बल्कि उसे अपनी संस्कृति से जोड़ती है। इंस्टाग्राम पर खाने की लुभावनी तस्वीरें, फूड ब्लॉगर्स और व्लॉगर्स ने स्थानीय व्यंजनों को वैश्विक पहचान दी है। अंतरराष्ट्रीय रेस्तरां, फूड फेस्टिवल और फूड ट्रक ने इस क्रांति को और बल दिया है। अब टोक्यो में मैक्सिकन टैको, या न्यूयॉर्क में वियतनामी फो का लुत्फ़ उठाना आम बात हो गई है। यह वैश्वीकरण का जादू है, जिसने स्थानीय खाद्य संस्कृति को एक वैश्विक उत्सव में बदल दिया है, जो न केवल स्वाद, बल्कि संस्कृतियों को भी एक-दूसरे के करीब ला रहा है।

हालाँकि, यह वैश्वीकरण केवल सकारात्मक प्रभाव ही नहीं लाता; इसके साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। जब कोई स्थानीय व्यंजन वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय होता है, तो उसकी मौलिकता और प्रामाणिकता पर असर पड़ता है। बड़े पैमाने पर उत्पादन और वैश्विक बाजार की मांग को पूरा करने के लिए व्यंजनों को मानकीकृत करना पड़ता है। इसके लिए मसालों, सामग्रियों और पकाने की विधियों में बदलाव किया जाता है, जिससे कई बार व्यंजन का मूल स्वाद और पोषण मूल्य प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, भारत का टिक्का मसाला, जो अब दुनिया भर में प्रसिद्ध है, कई देशों में स्थानीय स्वाद के अनुरूप संशोधित हो चुका है। यह नया स्वरूप मूल भारतीय टिक्का मसाला से काफी अलग हो सकता है। इसी तरह, पारंपरिक पोहा या उपमा अब फास्ट फूड की शैली में परोसे जा रहे हैं, जिससे उनकी सादगी और पौष्टिकता कम हो रही है।

आर्थिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण ने दोहरी तस्वीर पेश की है। एक ओर, इसने स्थानीय किसानों और छोटे व्यवसायियों के लिए नए द्वार खोले हैं। भारतीय मसाले, हल्दी, काली मिर्च, या जैविक उत्पाद जैसे क्विनोआ की वैश्विक माँग ने स्थानीय उत्पादकों को नए बाजार और बेहतर आय के अवसर दिए हैं। लेकिन दूसरी ओर, बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और फास्ट फूड चेन की बढ़ती ताकत ने छोटे व्यवसायों के लिए अस्तित्व की जंग को और मुश्किल कर दिया है। ये कंपनियाँ स्थानीय व्यंजनों को अपने ब्रांड के तहत पेश करती हैं, जिससे पारंपरिक रेस्तरां और स्थानीय खाद्य उत्पादकों को कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। यह असंतुलन स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और सांस्कृतिक धरोहर को चुनौती देता है।

वैश्वीकरण का सांस्कृतिक आयाम भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्थानीय खाद्य संस्कृति अब केवल भोजन नहीं, बल्कि संस्कृतियों को जोड़ने का एक शक्तिशाली माध्यम बन चुकी है। जब लोग भारतीय थाली का लुत्फ़ उठाते हैं, तो वे न केवल इसके स्वाद में डूबते हैं, बल्कि भारत की संस्कृति, इसके रंग-बिरंगे त्योहारों और समृद्ध परंपराओं से भी रू-ब-रू होते हैं। यह सांस्कृतिक संवाद वैश्वीकरण का सबसे खूबसूरत पहलू है, जो लोगों को एक-दूसरे के करीब लाता है और आपसी समझ को बढ़ावा देता है।

इसके साथ ही, वैश्वीकरण ने "फ्यूजन" खाद्य संस्कृति को जन्म दिया है, जो रचनात्मकता का एक अनूठा संगम है। भारतीय मसालों के साथ इटालियन पास्ता, कोरियाई टैको, या सुशी बुरिटो जैसे व्यंजन इस फ्यूजन की मिसाल हैं। यह न केवल स्वाद में नवाचार लाता है, बल्कि सांस्कृतिक सीमाओं को तोड़कर एक नई वैश्विक पहचान बनाता है। लेकिन इस रचनात्मकता में सावधानी की जरूरत है। कई बार फ्यूजन की यह प्रक्रिया स्थानीय व्यंजनों की मूल पहचान को धुंधला कर देती है। उदाहरण के तौर पर, अगर भारतीय बिरयानी को पश्चिमी शैली में पूरी तरह बदल दिया जाए, तो वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट सकती है। यह वैश्वीकरण की दोधारी तलवार है, जो स्थानीय खाद्य संस्कृति को एक ओर विश्व स्तर पर चमकाती है, तो दूसरी ओर उसकी मौलिकता को बचाए रखने की चुनौती पेश करती है।

स्थानीय खाद्य संस्कृति का वैश्वीकरण केवल स्वादों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी धरोहर और हमारी सदियों पुरानी कहानियों का वैश्विक मंच पर जीवंत उत्सव है। यह हमें विश्व की विविध संस्कृतियों से जोड़ता है, हमें नए स्वादों और परंपराओं से रू-ब-रू कराता है, और स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसरों के द्वार खोलता है। मगर इस चमकती राह पर हमें सतर्क रहना होगा कि हमारी खाद्य परंपराओं की आत्मा और प्रामाणिकता कहीं खो न जाए। स्थानीय व्यंजनों को विश्व पटल पर ले जाना एक गर्व का विषय है, लेकिन उनकी सांस्कृतिक गहराई और मूल स्वरूप को संरक्षित करना उससे कहीं अधिक जरूरी है।

इस वैश्विक यात्रा में संतुलन की कला सबसे बड़ी चुनौती है। हमें अपनी खाद्य संस्कृति को दुनिया के साथ साझा करना चाहिए, लेकिन उसे मात्र एक व्यावसायिक उत्पाद बनने से रोकना होगा। हर व्यंजन—चाहे वह पंजाब का मक्खनी लस्सी हो, बंगाल का रसगुल्ला, या राजस्थान का दाल-बाटी-चूरमा—अपने साथ एक कहानी, एक परंपरा और एक सांस्कृतिक विरासत लाता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ये व्यंजन अपनी जड़ों से जुड़े रहें और उनकी आत्मा बरकरार रहे। तभी खाद्य वैश्वीकरण केवल स्वाद का कारोबार नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान और संरक्षण बन सकेगा। यह एक ऐसी जिम्मेदारी है, जो हमें न केवल अपनी संस्कृति, बल्कि भावी पीढ़ियों के प्रति भी निभानी है, ताकि वे भी हमारी थाली के स्वाद, सुगंध और उनमें बसी कहानियों का आनंद उठा सकें।

*प्रो. आरके जैन "अरिजीत",*
*बड़वानी (मप्र)*

# गैर-संक्रमणीय रोगों का केंद्र भारत

विजय गर्ग

भारत के पास बहुत लंबा रास्ता तय करना है। वर्तमान में, भारत में एनसीडी मौतों का लगभग 25-26% 30 से 70 आयु वर्ग के बीच होता है। तुलना के लिए, यह आंकड़ा ब्राजील में लगभग 23% है, जबकि नॉर्डिक देशों या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्रों में यह 10% से 15% तक करीब है। ये आंकड़े इस बात पर जोर देते हैं कि भारत की तुलना वैश्विक औसत से क्यों नहीं हो सकती। चुनौती केवल यह नहीं है कि कितने लोग एनसीडी से मरते हैं, बल्कि जब वे मर जाते हैं। प्रारंभिक मृत्यु को रोकना सार्वजनिक स्वास्थ्य की वास्तविक प्राथमिकता है क्योंकि कोई भी परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था अपने चरम पर लोगों को खोने का खर्च नहीं उठा सकती।

भारत में हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह और पुरानी श्वसन संबंधी बीमारियों जैसी गैर-संक्रमणीय बीमारी (एनसीडी) की चिंताजनक वृद्धि देखी जा रही है

**भारत का एनसीडी बोझ कितना बड़ा है?**

वे भारत में सभी मौतों का लगभग 63% हिस्सा हैं, लेकिन अकेले यह संख्या वास्तविक संकट को पकड़ नहीं सकती। जो वास्तव में मायने रखता है वह 30 से 70 वर्ष की आयु के बीच होने वाली इन मौतों का हिस्सा है - जिसे डब्ल्यूएचओ प्रारंभिक मृत्यु मानता है।

भारत में, एनसीडी सबसे उत्पादक वर्षों के दौरान जीवन को कम कर रहे हैं, जब लोगों की उनकी परिवारों, समुदायों और अर्थव्यवस्था द्वारा सबसे अधिक आवश्यकता होती है। यही वह जगह है जहां ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए: एनसीडी से प्रारंभिक मृत्यु को कम करना। वैश्विक स्तर पर, देशों ने 2030 तक एनसीडी मृत्यु दर को एक तिहाई कम करने के लिए सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) 3.4 के तहत प्रतिबद्ध किया है।

भारत के पास बहुत लंबा रास्ता तय करना है। वर्तमान में, भारत में एनसीडी मौतों का लगभग 25-26% 30 से 70 आयु वर्ग के बीच होता है। तुलना के लिए, यह आंकड़ा ब्राजील में लगभग 23% है, जबकि नॉर्डिक देशों या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्रों में यह 10% से 15% तक करीब है।

ये आंकड़े इस बात पर जोर देते हैं कि भारत की तुलना वैश्विक औसत से क्यों नहीं हो सकती। चुनौती केवल यह नहीं है कि कितने लोग एनसीडी से मरते हैं, बल्कि जब वे मर जाते हैं। प्रारंभिक मृत्यु को रोकना सार्वजनिक स्वास्थ्य की वास्तविक प्राथमिकता है क्योंकि कोई भी परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था अपने चरम पर लोगों को खोने का खर्च नहीं उठा सकती।

**स्थिति कितनी गंभीर है?**

भारत में युवा वयस्कों के बीच एनसीडी की चिंताजनक वृद्धि देखी जा रही है - एक प्रवृत्ति जो नियमित रोकथाम जांच और प्रारंभिक स्वास्थ्य प्रचार को पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बनाती है। एनसीडी के बीच, हृदय रोग और मधुमेह सबसे तेजी से बढ़ रहे हैं। विशेष रूप से मधुमेह जीवन में पहले ही दिखाई दे रहा है, भारत में अनुमानित 8-10 लाख बच्चे टाइप 1 मधुमेह के साथ रहते हैं।

जबकि पूर्ण संख्याएं अभी भी छोटी हैं, तरक्की का रुझान स्पष्ट है और यह एक लाल झंडा है जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। वास्तविक चिंता यह है कि केवल एक दशक में एनसीडी का बोझ कितना तेजी से बढ़ गया है। हस्तक्षेप को जीवन भर जल्दी शुरू किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए वयस्क होने तक इंतजार नहीं करना चाहिए। यह गर्भवती महिलाओं, बच्चों और किशोरों से शुरू होना चाहिए तथा जीवन भर जारी रहना चाहिए।

भारत को अब तीन गुना बोझ का सामना करना पड़ रहा है: कुपोषण, कई सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी और अधिक वजन और मोटापे की बढ़ती दर। चिंताजनक बात यह है कि मोटापा पहले से ही एक प्रमुख पोषण संबंधी समस्या के रूप में कम वजन को पार कर चुका है। यदि भारत स्वास्थ्य प्रवर्धन, रोकथाम और समय पर प्रबंधन के माध्यम से दृढ़तापूर्वक कार्य नहीं करता है; तो ये मामले बढ़ते रहेंगे। आगे का रास्ता प्रारंभिक पता लगाने, मजबूत स्वास्थ्य साक्षरता और स्वस्थ वातावरण में है ताकि भारत के युवा लोग एनसीडी के जीवन भर के बोझ से सुरक्षित होकर बड़े हो सकें।

भारत में एनसीडी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। क्या इसका दायरा बच्चों तक विस्तारित किया जाना चाहिए?

आज ध्यान पहले से ही बच्चों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और रोकथाम की ओर बढ़ रहा है। यूनिसेफ और अन्य विशेषज्ञों के सरकारी नेतृत्व और समर्थन के साथ, भारत स्कूलों में प्रारंभिक स्क्रीनिंग शुरू करने के तरीकों की खोज कर रहा है।

तत्काल स्पष्ट है। जीवनशैली में परिवर्तन, खराब आहार और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत स्वास्थ्य जोखिम को बढ़ावा दे रही है। इसलिए भारत की एनसीडी रणनीति के लिए अगली सीमा केवल उपचार ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य साक्षरता और जिम्मेदार संचार है। स्कूलों, परिवारों और समुदायों के माध्यम से युवा आयु से जागरूकता बढ़ाना स्वस्थ विकल्प, मजबूत रोकथाम और एनसीडी के खिलाफ जीवन भर की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगा।

**एनसीडी का बोझ कम करने के लिए भारत को क्या कदम उठाने चाहिए?**

भारत के पास सार्वजनिक स्वास्थ्य में एक सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड है, चाहे वह पोलियो का उन्मूलन कर रहा हो या COVID-19 टीकाकरण को तेजी से और सुरक्षित रूप से उपलब्ध करा रहा हो। विश्व स्तर पर वैक्सीन को चुनौती देने वाले षड्यंत्र सिद्धांतों के बावजूद, भारत ने लगातार टीकाकरण का सबसे अधिक लाभदायक सार्वजनिक स्वास्थ्य निवेश में से एक माना है। अब सरकार एचपीवी वैक्सीन शुरू करने और एक छाता के तहत बच्चों पर केंद्रित विभिन्न एनसीडी पहल को एक साथ लाने की तैयारी कर रही है। यह एकीकृत दृष्टिकोण बच्चों में एनसीडी की प्रारंभिक जांच, रोकथाम और प्रबंधन की अनुमति देगा।

स्वस्थ भोजन हमेशा उपलब्ध या सस्ती नहीं होता है, जबकि प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ स्टोर की अलमारियों और विज्ञापन पर हावी होते हैं। सांस्कृतिक धारणाएं विकल्पों को भी आकार देती हैं - उदाहरण के लिए, पहले छह महीनों में विशेष स्तनपान एनसीडी जोखिम के खिलाफ सबसे सरल और शक्तिशाली सुरक्षाओं में से एक है, फिर भी फॉर्मूला आहार अक्सर अधिक महत्वाकांक्षी माना जाता है।

सिंगापुर में उपयोग किए जाने वाले लोगों की तरह सरल, बोल्ड और रंग-कोडेड पोषण लेबल बच्चों और कम साक्षर परिवारों सहित उपभोक्ताओं को एक नज़र में स्वस्थ विकल्प बनाने में मदद करते हैं। भारत एक समान स्पष्ट प्रणाली को अपनाकर लाभ उठा सकता है। जल्दी से शुरुआत करके भारत न केवल बीमारी को रोक सकता है, बल्कि अपनी अगली पीढ़ी के लिए एक स्वस्थ और अधिक उत्पादक भविष्य भी सुनिश्चित कर सकता है।

*सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक*

## रचनात्मकता की राह

विजय गर्ग

हम जानते हैं कि जिस तरह एक शिक्षक, एक इंजीनियर, एक चिकित्सक को अपने पेशेवर जीवन को लगातार अद्यतन करते रहने की जरूरत होती है। ठीक इसी तरह हम सभी को अपने काम ही नहीं, बल्कि अपने जीवन को भी देखते और तौलते रहने की जरूरत होती है। अभी कुछ दिनों पहले एक परिचित का कहना था कि उनका बेटा स्मार्टफोन के बिना खाना तक नहीं खाता। ऐसे में मां उसे फोन पकड़ा कर इस परेशानी से 'छुटकारा पाती हैं। उन्हें उसकी जिद के आगे और कोई रास्ता ही नहीं सूझता । जब तक बच्चे को फोन नहीं मिलता, वह जिद करता है, जमीन में लोटने लगता और रोने लगता है। हालत यह है कि उसे सुबह उठते ही फोन चाहिए। उस बच्चे को फोन की आदत छुड़वाने के लिए उसे समझाया गया, उसके साथ सख्ती भी बरती गई, लेकिन कोई हल नहीं निकला ।

सवाल है कि बच्चे की इस मुश्किल का स्रोत क्या था । घरों में आमतौर पर यह देखा जा सकता है कि मां या पिता जब भी खाली होते हैं, बस तुरंत अपना मोबाइल उठा कर देखने में मशगूल हो जाते हैं। एक काम से दूसरे काम के अंतराल के बीच दिन में कई बार वे फोन पर घंटों व्यस्त रहते हैं। देर रात में तो ईमेल, रील और सोशल मीडिया देखते हुए कब घंटे गुजर जाते हैं, पता ही नहीं चलता। ऐसे लोगों के लिए समय काटने का सबसे अच्छा साधन फोन है। बहुत से मोबाइल उपभोक्ता जानते हैं कि स्क्रीन पर लगातार देखते रहने से उनकी आंखों की रोशनी पर असर पड़ता है। मोबाइल की आवाज से दूसरों को शोर महसूस होता है। कान में ईयरफोन लगाकर सुनने से श्रवण क्रिया बाधित हो सकती है। लगातार रील देखते रहने से हमारे शरीर में डोपामाइन का स्तर तेजी से बदलने लगता है, जिससे शरीर के हार्मोन पर प्रभाव पड़ता है और यह शरीर के लिए हानिकारक है। चिकित्सकों के अनुसार लगातार फोन का इस्तेमाल करने से आंखों में जलन, सिरदर्द, नींद की कमी और तनाव जैसी समस्याएं हो सकती हैं। स्मार्टफोन की लत बच्चों में शारीरिक, मानसिक उथल-पुथल और भावनाओं को प्रभावित करती है। बच्चों का हमउम्र बच्चों के साथ खेलना, परिवारजनों का आपसी संवाद कम होना भी इसका एक बड़ा कारण बनता जा रहा है ।

केवल घर-परिवारों में ही नहीं, अब सड़कों पर मोटरसाइकिल चलाते हुए लोग भी मोबाइल पर बात करते मिल जाएंगे। यह नियमों के विरुद्ध है, लेकिन कहां-कहां और किस तरह से लोगों को रोका जा सकता है ? सार्वजनिक परिवहन के रूप में बस में यात्रा करते हुए आसपास से मोबाइलों पर रील, फिल्म या गाने चल रहे होते हैं । कई बार उन सबकी आवाज इतनी गड्डमड्ड हो रही होती है कि ठीक से किसी एक मोबाइल की आवाज को सुना नहीं जा सकता। यह एक तरह की असभ्यता है, क्योंकि ज्यादा संभावना यह है कि किसी अन्य व्यक्ति के तेज स्वर में स्मार्टफोन बजाने से किसी को बहुत परेशानी हो रही हो । इसके अलावा, अगर हम आम लोगों की बात करें तो हमने अपने को व्यस्त रखना, हो - हल्ले के बीच जीना चुन लिया है, तो ऐसे में हमारे जीवन से सजगता धीरे-धीरे क्यों इतनी दूर होती जा रही है कि हम बिना किसी सजगता के बस कुछ भी किए जा रहे होते हैं ।

इसी तरह कई बार सामान्य बातचीत में लगातार अभद्र बातों और अपशब्दों का प्रयोग करना हमारी आदत का कब हिस्सा बन जाता है, हमें पता ही नहीं चलता । जब घर में बच्चे हमारी भाषा सुनते हैं तो वे भी अनायास ही उनका प्रयोग करने लगते हैं। ऐसे में हम बड़े अगर बच्चों को टोकते हैं तो वे सामने तो रुक जाते हैं, लेकिन पीछे से उन आदतों को अपना लेते हैं और फिर वे उनकी भाषा या कृत्य उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं। इसी तरह किसी भी प्रकार का नशा, कुछ भी चबाते रहने की या अन्य कोई भी आदत हो सकती है। अगर हम चाहते हैं कि बच्चों में इस तरह की आदतें या कमियां नहीं रहें तो पहले हमें आहिस्ता-आहिस्ता अपने पर काम करना होगा। हम छोटे-छोटे स्वयं से संकल्प कर सकते हैं। जैसे हर रात आठ बजे से सुबह आठ बजे तक मोबाइल को नहीं छूना। हां, कोई फोन आए तो फोन उठाएंगे, लेकिन स्वयं फोन या किसी प्रकार की सामग्री को नहीं देखना है। धीरे-धीरे हम खुद महसूस करने लगेंगे कि यह कितना आसान था, लेकिन संकल्प नहीं किया था तो बस चल रहा था और लग रहा था कि यह आदत हमसे छूट ही नहीं सकेगी। हम पाएंगे कि अपनी किसी बुरी आदत पर काम करने से हमें कितनी राहत मिली है। हमें लगने लगता है कि पिछले दिनों हमने कितना समय, ऊर्जा और रचनात्मकता इसके पीछे नष्ट कर दी ।

कहते हैं कि 'कोई किसी को रोक तो सकता है, लेकिन सुधार इंसान अपने में स्वयं ही करता है।' स्वयं से प्रण करना हमें भटकाव से रोकता है और सही दिशा में जाने के लिए प्रेरित करता है। हम देखेंगे कि हमारी इस आदत का परिवारजनों पर भी प्रभाव पड़ने लगा है और परिवार एक बुरी आदत से छुटकारा पाकर आगे निकलने लगता है । हमारे जीवन में बहुत सारी चीजें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। जब एक आदत में सुधार होने लगता है तो दूसरी अन्य चीजें अपने आप सुधरने लगती हैं और एक सकारात्मकता और रचनात्मकता का संचार होने लगता है ।

*गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब*

## हरियाणा शिक्षक स्थानांतरण: नीति, प्रक्रिया और उलझन

फाइनेंस विभाग से अतिरिक्त भत्ते की मंजूरी होने के बावजूद फ़ाइलों का बार-बार लंबित रहना कर्मचारियों में भ्रम पैदा करता है। दंपत्ति मामलों में पहले से चल रहे मामलों के बावजूद पुनः प्रक्रिया शुरू होना यह संकेत देता है कि नीति जानबूझकर जटिल बनाई जाती है, जिससे निर्णय बाधित हों। शिक्षा मंत्री ने कहा कि मध्य-अवधि स्थानांतरण का कोई प्रभाव नहीं होगा, लेकिन जमीन पर इसका असर नहीं दिखाई देता। इन सभी कारणों से शिक्षक असंतोष में हैं और वे चाहते हैं कि स्थानांतरण प्रक्रिया स्पष्ट, समयबद्ध और निष्पक्ष हो, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता और संतुलन बनाए रखा जा सके। शिक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया था कि मध्य-अवधि स्थानांतरण का कोई प्रभाव नहीं होगा, लेकिन वास्तविकता में प्रशासन इसे अक्सर बहाना बनाने के तरीके के रूप में इस्तेमाल करता है। केवल पारदर्शी, समयबद्ध और निष्पक्ष प्रक्रिया ही शिक्षक और छात्रों के हित में स्थिरता और गुणवत्ता सुनिश्चित कर सकती है।

*-डॉ. सत्यवान सौरभ*

हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण और पदस्थापन की प्रक्रिया वर्षों से विवादों और असंतोष का कारण रही है। शिक्षक और कर्मचारी यह महसूस करते हैं कि नीतियाँ जितनी स्पष्ट घोषणाओं में दिखाई देती हैं, उतनी ही वास्तविकता में जटिल और उलझी हुई हैं। यह मामला केवल कर्मचारियों के हित का नहीं है, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की पारदर्शिता, निष्पक्षता और गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है।

जब वित्त विभाग से किसी पद की स्वीकृति मिल जाती है, तब भी कई बार स्थानांतरण प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब हो जाता है। ऐसा बजट संबंधी बाधाओं, दस्तावेजी प्रक्रियाओं या प्रशासनिक स्तर पर बार- बार अनुमोदन की अनावश्यकता के कारण होता है। इस विलंब से केवल प्रक्रिया धीमी नहीं होती, बल्कि नीति के उचित और समय पर पालन में बाधा आती है। कर्मचारी महीनों तक अनिश्चितता में रहते हैं, जिससे उनका मनोबल गिरता है और शिक्षा प्रणाली की दक्षता प्रभावित होती है।

दंपत्ति मामलों में, जहाँ शिक्षक अपने जीवनसाथी के साथ पदस्थापन चाहते हैं, पहले से लंबित मामलों के बावजूद पुनः जांच और अनुमोदन की प्रक्रिया शुरू कर दी जाती है। इससे कर्मचारी अनावश्यक असुविधा में पड़ते हैं और यह नीति की जटिलता को स्पष्ट करता है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि प्रशासन कई बार प्रक्रिया को जानबूझकर लंबा खींचता है। स्थानांतरण रोकने वाले पक्षों की बात करें, तो इसमें कई स्तर शामिल हैं। लंबे समय से किसी स्थान पर तैनात कर्मचारी अपने स्थान से हटना नहीं चाहते। संघ और संगठन अपने सदस्यों के हित की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करते हैं। इसके अलावा, प्रशासन भी अनुभवी कर्मचारियों को संवेदनशील पदों पर लंबे समय तक बनाए रखना पसंद करता है। इन सभी कारकों के कारण स्थानांतरण प्रक्रिया अक्सर संतुलित और निष्पक्ष नहीं होती।

शिक्षा मंत्री ने प्रेस में कहा था कि मध्य-अवधि स्थानांतरण लागू होंगे, लेकिन वास्तविकता में इसका कोई प्रभाव नजर नहीं आता। यह विरोधाभास कर्मचारियों में भ्रम और असंतोष पैदा करता है। घोषणाओं और वास्तविक कार्यान्वयन के बीच यह अंतर यह संदेश देता है कि केवल बयानों से नीति लागू नहीं होती।

अन्य विभागों में ऑनलाइन स्थानांतरण प्रणाली सहज रूप से लागू हो रही है, जबकि शिक्षा विभाग में यह प्रक्रिया धीमी और जटिल बनी हुई है। इसका कारण केवल तकनीकी कठिनाई नहीं है। प्रशासनिक प्रतिरोध, पारंपरिक कार्य संस्कृति और स्थानीय अधिकारियों की प्राथमिकताएँ इसमें योगदान करती हैं। जब तक सभी पक्ष पारदर्शिता और समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित नहीं करेंगे, ऑनलाइन प्रणाली प्रभावी नहीं हो सकती।

नई नियुक्तियों के समय पर्याप्त स्थान उपलब्ध होने के बावजूद स्थानांतरण में देरी होती है। इससे प्रश्न उठता है कि क्या कर्मचारियों को जानबूझकर दूर भेजा जा रहा है या कुछ को सुविधा दी जा रही है। आने वाले वर्ष में जनगणना के कारण स्थानांतरण न होने की संभावना इस प्रश्न को और गंभीर बना देती है। प्रत्यायोजन की प्रथा भी समस्या बनी हुई है। इसके तहत अपने कर्मचारियों को विशेष पदों या स्थानों पर समायोजित किया जाता है। यह न केवल पारदर्शिता और निष्पक्षता पर प्रश्न उठाता है, बल्कि पक्षपात और प्रशासनिक भेदभाव को भी बढ़ावा देता है। यदि समय रहते इसे रोका और सुधारात्मक कदम उठाए जाएँ, तो शिक्षक और विभाग दोनों को लाभ होगा।

इन सभी जटिलताओं के बावजूद शिक्षक समुदाय चाहता है कि नीति स्पष्ट, समयबद्ध और निष्पक्ष हो। केवल घोषणाओं और प्रेस विज्ञप्तियों से समाधान नहीं होगा। आवश्यकता है कि प्रशासन ऑनलाइन प्रणाली को प्रभावी बनाए, पक्षपात और व्यक्तिगत लाभ पर आधारित निर्णयों को रोके। शिक्षक और छात्र यह विश्वास रखें कि स्थानांतरण प्रक्रिया शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और संतुलन बनाए रखने के लिए है, न कि किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए।

हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण नीति केवल जटिल और उलझी हुई नहीं है, बल्कि इसका कार्यान्वयन भी संतुलित और निष्पक्ष नहीं है। प्रशासनिक देरी, अनावश्यक अनुमोदन, पक्षपात और तकनीकी बाधाओं के कारण शिक्षक असंतोष में हैं। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सरकार को चाहिए कि वह स्पष्ट नियमावली और नीति लागू करे, समयबद्ध और पारदर्शी प्रक्रिया सुनिश्चित करे, ऑनलाइन प्रणाली को प्रभावी बनाए, और पक्षपात तथा व्यक्तिगत लाभ पर आधारित निर्णयों को रोके। तभी शिक्षक अपने कार्य में संतुष्ट रह पाएँगे और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सकेगी। अन्यथा यह प्रक्रिया केवल विवाद, असंतोष और भ्रम का स्रोत बनी रहेगी। हरियाणा सरकार के सामने यह चुनौती है कि वह शिक्षक स्थानांतरण प्रक्रिया में स्थिरता, न्याय और पारदर्शिता सुनिश्चित करे। तभी शिक्षा प्रणाली का वास्तविक उद्देश्य –गुणवत्ता, संतुलन और विद्यार्थियों के हित– पूरा हो सकेगा। हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण नीति केवल जटिल और उलझी हुई नहीं है, बल्कि इसका कार्यान्वयन भी संतुलित और निष्पक्ष नहीं है। वित्त विभाग से अनुमोदन मिलने के बावजूद विलंब, दंपत्ति मामलों में पुनः प्रक्रिया, और प्रत्यायोजन के माध्यम से पक्षपात जैसी समस्याएँ लगातार बनी हुई हैं।

## दुर्लभ पृथ्वी संकट: भारत के ऊर्जा क्षेत्र पर प्रभाव: विजय गर्ग

भारत को लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ पृथ्वी को पुनः प्राप्त करने के लिए एक मजबूत घरेलू पारिस्थितिकी तंत्र बनाना होगा विजय गार्ग भारत ने जून 2025 तक 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म विद्युत क्षमता प्राप्त करने के लिए अपने 2030 लक्ष्य को पार कर लिया है, हालांकि केवल लगभग 24 प्रतिशत बिजली इन स्रोतों से आती है। 2030 तक 500 गीगावाट की गैर-जैविक क्षमता और 2070 तक शुद्ध शून्य के लिए भारत का स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य सौर, पवन टर्बाइन, ईवी और बैटरी भंडारण के लिए महत्वपूर्ण खनिजों को सुरक्षित करने पर निर्भर करता है। एक आसन्न ₹दुर्लभ पृथ्वी संकट₹ प्रगति का खतरा है।

**महत्वाकांक्षा भौतिक वास्तविकता से मिलती है**

टीईआरआई परियोजनाओं की कुल क्षमता 2030 तक लगभग 820 गीगावाट हो सकती है, जिसमें गैर-जैविक स्रोतों से 500 गिगावाट शामिल हैं। 2050 तक, एक नेट-शून्य संरेखित पथ में 1,472 गीगावाट सौर पीवी, 421 गिगावाट पवन और ₹864 जीगावाट बैटरी भंडारण की आवश्यकता होगी। संदर्भ के लिए, जून 2025 तक कुल स्थापित क्षमता लगभग 485 जीडलयु थी, जिसका अर्थ है दशकों से 65 जीडवयु+ वार्षिक आरई जोड़ना। टीईआरआई के नवीनतम मूल्यांकन में भारत की तकनीकी सौर क्षमता को लगभग 10,830 गीगावाट तक संशोधित किया गया है, जो कि पहले का आधिकारिक अनुमान था - छतों पर टैप करके, फ्लोटिंग सोलर, एग्री-पीवी, रेल गलियारे और भवन एकीकृत पीवी। अंतरिक्ष और सूर्य की रोशनी बाध्यकारी नहीं है; खनिज और मध्य प्रवाह क्षमता। इस निर्माण को वितरित करने के लिए बड़ी मात्रा में पॉलीसिलिकन, चांदी, टेलुरियम, इंडियम, गैलियम, तांबा तथा बैटरी सामग्री और ग्रिड धातुओं की आवश्यकता होती है।

**महत्वपूर्ण खनिज**

स्वच्छ प्रौद्योगिकियां खनिज-गहन हैं। नियोडियम और डिस्प्रोसियम जैसी दुर्लभ पृथ्वीएं पवन टर्बाइन और ईवी इंजनों में कॉम्पैक्ट, कुशल चुंबक सक्षम करती हैं। लिथियम बैटरी ऊर्जा घनत्व प्रदान करता है; कोबाल्ट और निकेल स्थिरता में सुधार करते हैं। सौर पीवी सिलिकॉन पर निर्भर करता है; उच्च दक्षता वाले कोशिकाओं और पावर इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए गैलियम महत्वपूर्ण है। तांबा, ग्राफाइट और अतिरिक्त दुर्लभ पृथ्वीएं इस आपूर्ति वेब को लंगर देती हैं। किसी भी लिंक को तोड़ें और तैनाती स्लिप्स, लागत बढ़ जाती है और लक्ष्य बह जाते हैं।

**वैश्विक आपूर्ति का दबाव: घाटे, एकाग्रता, भू-राजनीति**

वैश्विक स्तर पर, मांग में वृद्धि, आपूर्ति की धीमी प्रतिक्रिया और भू-राजनीति के बीच महत्वपूर्ण खनिजों की दौड़ बढ़ रही है। 2024 में लिथियम की मांग लगभग 30 प्रतिशत बढ़ गई, जो आपूर्ति वृद्धि से कहीं अधिक है। नई खनन में निवेश धीमा है; नेटवर्क और विद्युतीकरण के लिए महत्वपूर्ण तांबा को 2035 तक 30 प्रतिशत आपूर्ति घाटे का सामना करना पड़ रहा है। ब्लूमबर्ग एनईएफ ने 2050 तक नई क्षमता के बिना 21 मिलियन टन वार्षिक घाटे की चेतावनी दी है। नई खदानों को चालू होने में 15 से अधिक वर्ष लगते हैं, इसलिए आपूर्ति नीतिगत समयरेखा पर नहीं बढ़ सकती। एकाग्रता यौगिक जोखिम: लिथियम, कोबाल्ट, ग्राफाइट और दुर्लभ पृथ्वी के लिए वैश्विक आपूर्ति का 85 प्रतिशत से अधिक केवल तीन देशों से आ सकता है। चीन ग्रेफाइट, कोबाल्ट, लिथियम और पॉलीसिलिकॉन की प्रसंस्करण पर हावी है; इंडोनेशिया निकेल में अग्रणी है। ऊर्जा से संबंधित खनिजों में से आधे से अधिक को अब निर्यात नियंत्रण का सामना करना पड़ रहा है; चीन ने राष्ट्रीय सुरक्षा के कारण गैलियम, जर्मेनियम, ग्राफिट और कुछ दुर्लभ-पृथ्वी चुंबक मिश्रणों की निर्यात को सख्त कर दिया है, जबकि इंडोनेशिया निकेल अयस्क पर प्रतिबंध लगाता है। बढ़ती मांग, आपूर्ति में देरी और केंद्रित नियंत्रण के इन रुझानों से एक अस्थिर वैश्विक परिदृश्य पैदा हो रहा है जहां खनिज पहुंच कुछ खिलाड़ियों पर भारी निर्भरता के साथ रणनीतिक युद्धक्षेत्र बन रही है, तथा राजनीतिक आपूर्ति काटने का खतरा है।

**भारत की प्रतिक्रिया: राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन (एनसीएमएम)**

इन जोखिमों को पहचानते हुए, भारत ने जनवरी 2025 में एनसीएमएम शुरू किया। सात वर्षों (वित्त वर्ष 2024-2031) में 34,300 करोड़ डॉलर के बजट के साथ, मिशन का उद्देश्य अन्वेषण और खनन से लेकर पुनर्चक्रण और प्रसंस्करण तक संपूर्ण खनिज मूल्य श्रृंखला पर आत्मनिर्भरता को मजबूत करना है।

घरेलू अन्वेषण और खनन: 2031 तक 1,200 अन्वेषण परियोजनाओं तथा लिथियम, ग्राफिट और दुर्लभ पृथ्वी सहित कम से कम 15 महत्वपूर्ण खनिजों का उत्पादन करना। जम्मू-कश्मीर में 5.5 मिलियन टन लिथियम जमा क्षमता प्रदान करता है, लेकिन नीलामी के माध्यम से निजी क्षेत्र की खनन को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण होगा।

विदेशी परिसंपत्तियों का अधिग्रहण: आयात जोखिम को विविध बनाने के लिए ऑस्ट्रेलिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका में लिथियम, कोबाल्ट और निकेल को लक्षित करते हुए विदेशों में 50 खदानों में इक्विटी शेयर/ऑफटेक।

पुनर्चक्रण और परिपत्र अर्थव्यवस्था: 11,500 करोड़ (₹$170 मिलियन) आवंटित किए जाने के साथ, भारत का लक्ष्य ई-अपशिष्ट से 400,000 टन महत्वपूर्ण खनिजों को पुनर्प्राप्त करना है तथा 2027 तक 90 प्रतिशत ईवी बैटरी रीसाइक्लिंग हासिल करना है।

रणनीतिक भंडारण और प्रसंस्करण: 2031 तक लिथियम, दुर्लभ पृथ्वीओं और सिलिकॉन के लिए कम से कम पांच खनिजों का राष्ट्रीय भंडार तथा उत्कृष्टता केंद्र। मध्य-प्रवाह परिष्करण के बिना, घरेलू खनिज को भी निर्यात किया जाना चाहिए, जिससे कमजोरता कायम रहती है। भारत वर्तमान में लिथियम, कोबाल्ट और निकेल पर 100 प्रतिशत आयात-निर्भर है तथा ग्रेफाइट और दुर्लभ पृथ्वी पर अत्यधिक निर्भर है। अंतर को दूर करने के लिए विविध, सक्रिय प्लेबुक एनसीएमएम दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

**आगे बढ़ने का मार्ग: भारत के लिए प्राथमिकताएं**

जैसे-जैसे भारत अपना महत्वपूर्ण खनिज मिशन संचालित करता है, विभिन्न खनिजों के विभिन्न आपूर्ति जोखिमों और समयरेखाओं के आधार पर निवेश तथा नीतिगत फोकस की ओर कुछ प्राथमिकताएं सामने आती हैं

1। मोनाजिट रेतों में लिथियम, ग्राफाइट, नियोडिमियम और दुर्लभ पृथ्वी जैसे ज्ञात भंडार वाले खनिजों के लिए घरेलू अन्वेषण और खनन को गति से संतुलित करना।

कोबाल्ट, गैलियम और उच्च-गुणवत्ता वाले खनिजों के लिए दीर्घकालिक विदेशी आपूर्ति लाइनें सुरक्षित करें।

ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना और कजाकिस्तान के साथ साझेदारी भौगोलिक-राजनीतिक निर्भरता को कम करने के लिए राजनयिक और रणनीतिक निवेश का उपयोग करके एक विविध ₹वैश्विक खनिज टोकरी₹ बनाने की दिशा में आवश्यक कदम हैं।

पुनर्चक्रण और प्रतिस्थापन को बढ़ाएं। भारत को सेवानिवृत्त ईवी बैटरी और इलेक्ट्रॉनिक्स से लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ पृथ्वी की वसूली के लिए एक मजबूत घरेलू पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना होगा; सबसे कम इनपुट पर दबाव कम करने के लिए सोडियम-आयन और दुर्लभ-पृथ्वी मुक्त मोटरों में अनुसंधान एवं विकास का अनुसरण करना चाहिए।

भारत का स्वच्छ ऊर्जा भविष्य समय-सीमाओं पर निर्भर करता है; निकट अवधि (0-5 वर्ष) आयात, भंडार और साझेदारी पर निर्भर करेगा; मध्यम अवधि (5-15 वर्ष) खनन और पुनर्चक्रण को बढ़ाएगा; दीर्घकालिक (15+ वर्षों) घरेलू उत्पादन, विदेशी आउटपुट और परिपत्र सामग्री के माध्यम से लचीलापन बनाएगा, जिससे रणनीतिक आपूर्ति सुरक्षा सुनिश्चित होगी। खनिज यह निर्धारित करेंगे कि क्या भारत की स्वच्छ ऊर्जा कहानी इंजीनियरिंग चुनौती बनी हुई है या रणनीतिक रूप से कमजोर बन गई है।

एनसीएमएम सही मंच है, लेकिन परिणाम निष्पादन अनुशासन, निजी पूंजी जुटाने और उद्देश्यपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी पर निर्भर करेंगे। जैसे-जैसे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं सख्त होती जा रही हैं और भूराजनीति तेज हो रही है, भारत को प्रतिरोधी खनिजों की खरीद सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्रवाई करनी होगी। इन बिल्डिंग ब्लॉकों पर प्रभुत्व 21वीं सदी में ऊर्जा नेतृत्व को परिभाषित करेगा और भारत अपने जलवायु लक्ष्यों तक कितनी सुरक्षितता से पहुंच जाएगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

# झारखंड जीएसटी घोटाले में 15 करोड़ की संपत्ति ऐटैच

मामला जमशेदपुर का अमीत गुप्ता, सुमित गुप्ता, अमित अग्रवाल, विक्की भोलेटिया शिव कुमार सिंडिकेट का

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

**जमशेदपुर**, झारखंड जीएसटी घोटाले में ईडी ने बड़ा ऐक्शन लिया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने एक बड़े जीएसटी फर्जीवाड़ा सिंडिकेट के खिलाफ अपनी कार्रवाई तेज करते हुए कोलकाता और हावड़ा में 15.41 करोड़ की 10 अचल संपत्तियां अस्थायी रूप से जब्त कर ली हैं। धन शोधन निवारण अधिनियम 2002 के तहत जब्त की गईं ये संपत्तियां सिंडिकेट के मुख्य सरगनाओं में से एक अमित गुप्ता और उनके सहयोगियों से संबंधित हैं।

ईडी ने यह जांच जीएसटी इंटेलिजेंस महानिदेशालय (डीजीजीआई) जमशेदपुर की कई शिकायतों के आधार पर शुरू की थी। यह सिंडिकेट मुख्य रूप से शिव कुमार देवरा, अमित गुप्ता, सुमित गुप्ता और अमित अग्रवाल उर्फ विक्की भलोटिया के नेतृत्व में चल रहा था। ईडी ने जांच में पाया है कि अमित गुप्ता, जो सिंडिकेट के प्राथमिक वित्तीय प्रबंधक के रूप में कार्य कर रहा था, ने इस अवैध आय को कई अचल संपत्तियों को खरीदने में लगाया। ईडी ने यह भी खुलासा किया कि डीजीजीआई द्वारा जांच शुरू किए जाने के बाद अमित गुप्ता ने जानबूझकर इन संपत्तियों को अपने रिश्तेदारों और सहयोगियों को हस्तांतरित करके छिपाने का प्रयास किया था। इससे पहले, ईडी ने 08 मई को तलाशी अभियान चलाया था, जिसके बाद मुख्य सरगनाओं-शिव कुमार देवरा, मोहित देवरा, अमित गुप्ता और अमित अग्रवाल उर्फ विक्की भलोटिया को गिरफ्तार किया गया था। ये सभी फिलहाल न्यायिक हिरासत में हैं। ईडी ने गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ माननीय विशेष पीएमएलए कोर्ट, रांची में पहले ही अभियोजन शिकायत दाखिल कर दी है, जिस पर कोर्ट ने संज्ञान ले लिया है। ईडी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि यह कार्रवाई सिंडिकेट की अवैध कमाई को जब्त करने के चल रहे प्रयासों की एक कड़ी है। इससे पहले तीन जुलाई को सिंडिकेट प्रमुख शिव कुमार देवरा की 5.29 करोड़ की संपत्ति भी जब्त की गई थी। 15.41 करोड़ की यह नई जब्ती, अपराध की आय का पता लगाने और उसे जब्त करने के लिए जारी गहन जांच का हिस्सा है। मामले में आगे की जांच जारी है।

# ख़ुशी, मेहनत और आत्मसंतोष में छिपी होती हैं

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने आसपास के लोगों को देखकर स्वयं का मूल्यांकन करता है। लेकिन अक्सर यह मूल्यांकन और तुलना, ईर्ष्या का रूप ले लेता है। कोई मित्र यदि पढ़ाई में आगे निकल जाए, तो मन में हीनभावना आ जाती है। कोई पड़ोसी अधिक सुख-सुविधाओं में दिखे, तो भीतर असंतोष पनपने लगता है। यही तुलना धीरे-धीरे हमारी खुशी छीन लेती है। वास्तविकता यह है कि हर व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय है। किसी की सफलता का अर्थ यह नहीं कि हम असफल हैं। प्रत्येक व्यक्ति की यात्रा, परिस्थितियाँ और क्षमताएँ अलग होती हैं। जैसे बगीचे में गुलाब, गेंदा और कमल अपने-अपने रंग और खुशबू से बगीचे की शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही समाज में हर व्यक्ति अपनी अलग पहचान और महत्व रखता है। तुलना का परिणाम केवल मानसिक तनाव और ईर्ष्या होता है। दूसरी ओर ईर्ष्या मनुष्य की रचनात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देती है। जबकि सच्चा सुख और आत्मसंतोष तब मिलता है जब हम अपनी मेहनत और प्रगति पर ध्यान लगाते हैं। दूसरों को देखकर निराश होना व्यर्थ है, बेहतर है उनसे प्रेरणा लेकर अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए। जीवन की सफलता का मूलमंत्र केवल यही है, निरंतर परिश्रम और सकारात्मक सोच। परिश्रम करने वाला व्यक्ति देर-सबेर अवश्य सफलता का स्वाद चखता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन खुशहाल हो जाता है। किसान की तरह जो धैर्य और लगन से बीज बोता है, वही समय आने पर सुनहरी फसल काट पाता है। अतः हमें अपने जीवन से तुलना और ईर्ष्या को दूर करना चाहिए। अपनी क्षमता पर विश्वास करना चाहिए और पूरी निष्ठा से कार्य करते रहना चाहिए। खुशियाँ कभी दूसरों से आगे निकलने में ही नहीं, बल्कि अपनी मेहनत और आत्मसंतोष में छिपी होती हैं। याद रखें, तुलना दुःख देती है, परिश्रम सुख देता है।

# करूणा और संवेदना का प्रतीकः विश्व पशु दिवस (विश्व पशु दिवस विशेष आलेख 4 अक्टूबर)

हर साल विश्व पशु दिवस (वर्ल्ड एनिमल डे) 4 अक्टूबर को मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिन पशुओं के अधिकारों, उनके कल्याण (वेलफेयर) और संरक्षण के लिए समर्पित है। कम ही लोग जानते होंगे कि 4 अक्टूबर को संत फ्रांसिस ऑफ असीसी का स्मृति दिवस भी होता है, जिन्हें पशुओं और प्रकृति का संरक्षक संत माना जाता है। यही वजह है कि इस तिथि को चुना गया। पाठकों को बताता चलूं कि विश्व पशु दिवस का पहला आयोजन जर्मनी में 1925 में हाइनरिख ज़िमरमान नामक लेखक और पत्रकार ने किया था। भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारे देश में तो कृषि के साथ साथ पशुपालन को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, क्यों कि पशु हमारे अभिन्न साथी हैं, जो हमें भोजन, दूध और श्रम प्रदान करते हैं। पशु हमारी खेती-बाड़ी, परिवहन और आजीविका का मुख्य आधार हैं। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने में पशुओं की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पशु प्रेम, निष्ठा, वफादारी और संरक्षण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि पशुओं के बिना मानव जीवन अधूरा और असंतुलित हो जाता है। वास्तव में, यह दिन सिर्फ और सिर्फ पालतू जानवरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सभी वन्यजीव, समुद्री जीव, पक्षी और कीट-पतंगों तक के संरक्षण का संदेश देता है। गौरतलब है कि शुरू में यह यूरोप में मनाया गया था, लेकिन 1931 में फ्लोरेंस (इटली) में अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति सम्मेलन के दौरान इसे आधिकारिक तौर पर वैश्विक दिवस घोषित किया गया। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस दिन को मनाने से कई देशों में पशु अधिकार कानून और पशु क्रूरता निवारण अधिनियम बनाने में प्रेरणा मिली है। हमारे देश में इसे पशु प्रेम और संरक्षण के साथ-साथ गो-सेवा, वन्यजीव सुरक्षा और पशु चिकित्सक जागरूकता से भी जोड़ा जाता है। इसका आधिकारिक लोगो एक नीला-हरा गोला है, जिसमें विभिन्न पशु आकृतियां हैं और नारा हैः 'विश्व भर में पशुओं के कल्याण मानकों में सुधार लाने के लिए उनकी स्थिति को ऊपर उठाना।' यानी कि 'टू रेज द स्टेट्स ऑफ एनिमल्स टू इंप्रूव वेलफेयर स्टैंडड्र्स अराउंड द ग्लोब।' आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स का जमाना है और अच्छी बात यह है कि आज के इस आधुनिक दौर में वर्ल्ड एनिमल डे और एनिमल राइट्स जैसे हैशटैग के जरिए दुनिया भर के लोग पशुओं के प्रति प्रेम और संरक्षण का संदेश फैलाते हैं। इस दिवस को मनाने के पीछे असली मकसद सिर्फ एक दिन विशेष पशुओं को याद करना नहीं है, बल्कि पूरे साल उनके अधिकारों, भोजन, स्वास्थ्य और आवास की रक्षा सुनिश्चित करना है, लेकिन यह बहुत दुखद है कि आज मांस, चमड़ा और दूध के लिए पशुओं का अत्यधिक शोषण किया जाता है। आज विभिन्न प्रयोगशालाओं में दवाइयों व सौंदर्य प्रसाधनों की जांच हेतु उन पर क्रूर प्रयोग किए जाते हैं। आज के समय में भी जब मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं, तब भी सर्कस, सांड लड़ाई, हाथी सवारी आदि के नाम पर उन्हें पीटा और बेड़ियों में जकड़ा जाता है। यह बहुत ही दुखद है कि आज अवैध शिकार और तस्करी से अनेक प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकीं हैं। कितनी बड़ी बात है कि आज पशुओं को संकीर्ण पिंजरों या बाड़ों में कैद कर उनको अपने स्वाभाविक जीवन से वंचित रखा जाता है। और तो और भूख-प्यास से तड़पते हुए उन्हें सड़कों पर खुला, आवारा, लावारिस छोड़ दिया जाता है। गौवंश की हालत तो बहुत बुरी है। खेती-बाड़ी और बोझा ढोने में कई बार पशुओं से अमानवीय परिश्रम कराया जाता है। हाल ही में पशु क्रूरता की एक खबर राजस्थान के सीकर जिले से आई। सीकर ही नहीं देश के विभिन्न हिस्सों से पशु क्रूरता, अत्याचार की खबरें आए दिन मीडिया की सुर्खियों में बनीं रहतीं हैं, यह बहुत ही अफसोसजनक है। बहरहाल, मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार हाल ही में सीकर के नेछवा इलाके में एक विवाह समारोह के दौरान एक नंदी (बैल) चला आया था और इससे नाराज होकर कुछ लोगों ने उसे बोलेरो से कुचलकर मार डाला। जानकारी के अनुसार इस घटना को वहां मौजूद लोगों ने मोबाइल फोन पर रिकॉर्ड कर लिया और इसका वीडियो उन्होंने सोशल मीडिया पर डाल दिया, जो वायरल होते ही हंगामा हो गया और इलाके के लोगों ने देर रात थाने पर आक्रोश जताते हुए दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। इसके अगले दिन, यानी कि 2 अक्टूबर 2025 को पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया।

बहरहाल, कहना चाहूंगा कि मानव को पशुओं के साथ दया, करुणा और प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। उनके अधिकारों और जीवन की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। पशुओं को परिवार और प्रकृति का हिस्सा मानकर सम्मान देना चाहिए, क्यों कि पशु मानव की भांति अभिव्यक्ति कर अपनी समस्या, दुःख, अत्याचार को नहीं बता सकते हैं। एक प्रकार से वे मूक प्राणी होते हैं, मानव जितने बुद्धिमान प्राणी नहीं। बहरहाल, विश्व पशु दिवस की हर वर्ष एक थीम या विषय रखा जाता है। वर्ष 2024 के विश्व पशु दिवस की थीम-' द वर्ल्ड इज देयर होम ठू' (दुनिया उनका भी घर है) रखी गई थी और इस बार यानी कि वर्ष 2025 में इस दिवस की आधिकारिक थीम-' सेव एनिमल्स, सेव द प्लेनेट' (पशु बचाओ, ग्रह बचाओ) रखी गई है। वास्तव में इस थीम का सीधा सा मतलब यह है कि हमें सिर्फ और सिर्फ पशुओं को बचाना ही नहीं है, बल्कि उनकी रक्षा का संबंध सीधे हमारे पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा से भी जुड़ा हुआ है। इस बार की यह थीम पशुओं के आवासों और उनके पारिस्थितिकी तंत्र (इको सिस्टम) के महत्वपूर्ण हिस्से होने पर जोर देती है। यह थीम जानवरों के साथ समान व्यवहार करने और उनके सुरक्षित और संरक्षित वातावरण में रहने के अधिकार को रेखांकित करती है। सच तो यह है कि पशु, मानव के सच्चे और निस्वार्थ साथी होते हैं। वे बिना स्वार्थ के प्रेम, सहयोग और सुरक्षा देते हैं। वे मानव के सबसे वफादार और निस्वार्थ मित्र हैं, जिनके बिना जीवन अधूरा है। तो आइए ! हम इस पशु दिवस पर पशुओं के संरक्षण, उनकी रक्षा के लिए कदम उठाएं।

*सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।*

# एसआई परीक्षा घोटाला: बीजेडी का चौंकाने वाला खुलासा, मास्टरमाइंड के साथ सीएम की तस्वीर

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भूबनेश्वर** : बीजद ने एसआई प्रश्नपत्र लीक मामले में भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा है। बीजद ने सीधे तौर पर मुख्यमंत्री से सवाल किया है कि आखिर पेपर लीक मामले में कौन शामिल है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, शंकर प्रसाद की कंपनी पंचसॉफ्ट को टेस्टिंग प्रक्रिया की जिम्मेदारी दी गई थी, जिससे पेपर लीक को लेकर संदेह पैदा हो गया है। बीजद ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पिछले 15 महीनों में राज्य में 16 पेपर लीक हुए हैं।

फॉर्च्यून ने शंकर को पासपोर्ट तोहफे में दिया है। इसके अलावा, बीजद ने शंकर, मुख्यमंत्री मोहन माझी और हिंजिली विधानसभा के भाजपा उम्मीदवार की तस्वीरें भी दिखाई हैं। बीजद ने दावा किया है कि इससे राजनीतिक संबंधों का संकेत मिलता है। बीजद ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा है कि अगर भाजपा के लोग इसमें शामिल होते, तो वे दोषियों को गिरफ्तार कर लेते या परीक्षा रद्द कर देते। भाजपा ने इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया दी है। भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल ने कहा कि प्रश्नपत्र लीक एक पुरानी बीमारी बन गई है। मनमोहन सामल ने पूछा कि अगर सत्ताधारी पार्टी इसमें शामिल होती, तो परीक्षा क्यों रोकी जाती।

कांग्रेस ने कहा कि राज्य में नौकरियों की बिक्री बढ़ रही है। कांग्रेस ने पूछा कि राज्य में पैसे देकर नौकरी दिलाने की व्यवस्था कब पूरी तरह खत्म होगी।

पुलिस एसआई परीक्षा घोटाले में एक बड़ा अपडेट सामने आया है। 114 अभ्यर्थी और 3 दलाल गिरफ्तार, त्वरित कार्रवाई। प्रारंभिक जाँच के अनुसार, शंकर परष्टी और मुना मोहंती का नाम चर्चा में है। दोनों पर विशेष कोचिंग के लिए राज्य से बाहर ले जाने का आरोप है। प्रत्येक से 25-25 लाख रुपये लेने का सौदा हुआ था। दोनों ने अभ्यर्थियों के सभी मूल प्रमाण पत्र ले लिए। 933 पदों के लिए विज्ञापन जारी किए गए; करोड़ों रुपये का सौदा हुआ।

बुधवार को, ब्रह्मपुर पुलिस ने जिले के गोलंगथारा थाने का भंडाफोड़ किया और बताया कि पुलिस ने 114 अभ्यर्थियों और तीन दलालों को गिरफ्तार किया है। दूसरी ओर, खबर है कि क्राइम ब्रांच मामले की जाँच करेगी।

कटक क्राइम ब्रांच कार्यालय में दो लोगों से पूछताछ की जा रही है, साथ ही एक लंबी सूची तैयार की जा रही है। क्राइम ब्रांच की टीम कटक क्राइम ब्रांच में दोनों लोगों से पूछताछ कर रही है, आगे कुछ और लिंक मिल सकते हैं। क्राइम ब्रांच की जाँच में कई बिचौलिए हैं। इस बीच, ब्रह्मपुर जेल में गिरफ्तार आशा के परिजनों की भीड़ उमड़ पड़ी है। परिजन जेल में बेटे और बेटी से मिलने आए हैं। 1 तारीख को 114 आशाओं को गिरफ्तार किया गया था। परिवार वालों ने आशा को छोड़कर बाकी बिचौलियों को गिरफ्तार करने की मांग की है। ब्रह्मपुर पुलिस ने आशा और तीन बिचौलियों को सीमा से उस समय गिरफ्तार किया था जब वे आंध्र प्रदेश जा रहे थे।

# प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा इन्दौर के अध्यक्ष का ऐतिहासिक स्वागत संबोधन

शस्त्र और शास्त्र के पूजन पर्व दशहरा के अवसर पर सामाजिक मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। अधिकांश क्षत्रिय-क्षत्राणियों की वेशभूषा उनके आचार विचार का बखान कर रही थी, वहीं इनमें न्याय, राजनीति, उद्योग, करणी सेना, पुलिस व शिक्षा जगत की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी हस्तियों की उपस्थिति सामाजिक संगठन को गरिमामयी बना रही थी। समारोह का प्रारंभ सामूहिक राम-स्तुति से हुआ। डिम्पल अग्रवाल ने हाड़ी रानी का एकल नाट्य प्रस्तुत किया। हृदय विदारक इस प्रस्तुति से उन्होंने क्षत्रिय समाज के त्याग और बलिदान के अद्भुत गौरव का असरदार अभिनय किया। जय भवानी-हाड़ी रानी के जयघोषों ने वातावरण को बुलन्दी पर पहुंचा दिया। इसके बाद कार्यक्रम के अध्यक्ष उद्योग पति सुरेश सिंह भदौरिया मुख्य अतिथि मोहनसिंह सेंगर व राजपूत समाज की कई विभूतियों को अतिथि रूप में मंचासीन कर पुष्पमालाओं व उत्तरीय पट पहना कर उनका स्वागत किया गया।

इस अवसर पर प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा इन्दौर के अध्यक्ष ओंकारसिंह भदौरिया का प्रभावी स्वागत संबोधन हुआ। किसी भी समाज में इस तरह के अहंकार रहित सम्बोधन बहुत कम सुनने को मिलते हैं। अधिसंख्य समाजजनों की इच्छा थी कि इस स्वागत भाषण को जन-जन तक पहुंचाया जाए। अतः बिना काट-छाँट के यथावत आप तक यह प्रस्तुत है। उन्होंने कहा -

₹क्षत्रिय समाज के मेरे सभी भाइयो–बहनो ! प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा के इस दशहरा मिलन समारोह में मैं आप सभी का हृदय से स्वागत करता हूँ। हमारे मंचासीन अतिथिगणों में समाज के मुख्य संरक्षक आदरणीय सुरेशसिंह भदौरिया जी संरक्षक मोहनसिंह सेंगर जी क्षत्रिय महासभा के स्तंभ के रूप में कार्य करने वाले विजय सिंह परिहारजी, राजबहादुर सिंह कुशवाह, श्री उदयवीर सिंह राठौर और श्री रामनरेश सिंह भदौरिया जी का हृदय से अभिनंदन करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से यह संगठन आज इस मुकाम पर पहुँचा है।

मैं अपनी कार्यकारिणी के जाँबाज़ कार्यवाहक अध्यक्ष रामावतार सिंह उर्फ़ लल्ले, नागेन्द्र सिंह भदौरिया, उपाध्यक्ष छतर सिंह भाटी, राजूसिंह चौहान, सचिव हेमंतसिंह जादौन, सहसचिव सुमितसिंह राजावत, कोषाध्यक्ष रमेशसिंह परिहार, सह कोषाध्यक्ष मनोहरसिंह चौहान, संगठनमंत्री बृजराजसिंह कुशवाह, श्री आर.बी. सिंह भदौरिया, प्रचार मंत्री सत्येंद्रसिंह तोमर एवं कार्यकारिणी के सभी संचालक गणों का स्वागत करता हूँ, जो निरंतर इस महासभा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। उषा पंवार, निरंजन सिंह चौहान, सुमित सिंह कुशवाह, जेपी कुशवाह सहित समाज के हर गोत्र व हर नागरिक का सम्मान करते हुए अंत में मैं अभिनंदन करना चाहता हूँ सभी के लाड़ले वीर योद्धा, महासभा के पूर्व अध्यक्ष और मेरे छोटे भाई श्री राजू भदौरिया जी का, जिन्होंने युवावस्था से ही अपना जीवन राजपूत समाज को समर्पित कर पूरे शहर में राजपूतों को एकत्रित किया और समाज का नाम रोशन किया है।

भाइयो–बहनो ! पिछले तेईस वर्षों से प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा ने इंदौर के सभी राजपूतों को जोड़ने और जागरूक करने का कार्य किया है। आज यह दशहरा मिलन समारोह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि क्षत्रिय एकता का प्रतीक बन चुका है। इस वर्ष इस महासभा को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी अध्यक्ष के रूप में मुझे प्राप्त हुई है और मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ। कुछ दिन पहले मैं सोच रहा था कि हमारे संगठन का नाम "प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा" क्यों रखा गया? प्रगतिशील का अर्थ है – समय के अनुसार स्वयं को ढालना और आगे बढ़ना। हमारे पूर्वजों ने युद्धभूमि में अमर शौर्य दिखाया है। पृथ्वीराज चौहान और महाराणा प्रताप जैसे नाम आज भी वीरता के प्रतीक हैं किन्तु वीरता प्रदर्शन की जगह आज की लड़ाई तलवार और भाले की नहीं रह गई है, आवश्यकतानुसार अब यह संघर्ष शिक्षा, संगठन, आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रगति के लिए होना चाहिए।

इसीलिए हमें अपने आदर्श पुरुषों के संघर्षीय दायरे को विस्तृत करना होगा। महान परमार सम्राट राजा भोज, जिन्होंने रसायन विज्ञान से लेकर खगोल शास्त्र तक 15 से अधिक ग्रंथ लिखे। धार में भोजशाला जैसा विश्वविख्यात शिक्षा केंद्र बनाया। भारत की संसद भवन की डिज़ाइन मुरैना के 64 योगिनी मंदिर से प्रेरित है, जिसका निर्माण कछवाहा शासकों ने कराया। यह केवल मंदिर नहीं, बल्कि विद्या का केंद्र भी हुआ करता था। चंदेल शासकों द्वारा बनवाये गए खजुराहो के मंदिर आज भी विश्वविख्यात मूर्तिकला का अद्वितीय उदाहरण हैं। सवाई जयसिंह जैसे शासक, जिन्होंने खगोल विज्ञान में अद्वितीय योगदान देकर जंतर–मंतर जैसी वेधशालाओं का निर्माण किया। राजा भोज, हर्षवर्धन और शूद्रक ने साहित्य का सम्बर्धन किया। ये उदाहरण बताते हैं कि हमारा क्षत्रिय समाज केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ज्ञान, स्थापत्य, विज्ञान साहित्य और संस्कृति हर क्षेत्र में उसने देश को समृद्ध किया है।

भाइयो–बहनो ! प्रगतिशील होने की दिशा में हमने भी कुछ ठोस कदम उठाए हैं। हाल ही में एक सेंट्रल कमेटी का गठन किया गया है, जिसमें सभी राजपूत संगठनों ने एकमत होकर प्रगतिशील महासभा के संरक्षक श्री सुरेश भदौरिया जी को अध्यक्ष चुना है। इस कदम से समस्त राजपूत बन्धु एक छत्र के नीचे आ गए हैं और सभी संगठनों ने अपनी एकता का परिचय दिया है। मैं सभी संगठनों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

ऐसा ही एक और प्रगतिशील कदम है 'प्रगतिशील क्षत्रिय महासभा' की महिला इकाई का गठन। इसकी अध्यक्षा माननीय डॉ. दीप्ति हाड़ा चुनी गई हैं। समाज में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी हमारे संगठन को नई दिशा और नई ऊर्जा देगी। यह इकाई शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करेगी। हमारा संगठन केवल नारेबाज़ी तक सीमित नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर काम भी कर रहा है।

भाइयो–बहनो ! आने वाले समय में हमें 3 मुख्य दिशाओं में काम करना होगा –1. एकता 2. शिक्षा 3. रोज़गार आदि।

एकता की दिशा में, हम जल्द ही महासभा के युवा मोर्चा का गठन करेंगे। हम नहीं चाहते कि यह महासभा केवल एक senior citizen body बनकर रह जाए। इसलिए समाज की युवा शक्ति आगे आए और बढ़-चढ़कर समाज कार्य में योगदान दे। मैं इस कार्य के लिए विशेष रूप से – एकलव्य गौर, मयंक भदौरिया, पार्थ और मेरे छोटे भाई जितेंद्र पंवार सहित अन्य युवाओं को इस मंच से आमंत्रित करता हूँ। रोज़गार की दिशा में, मेरी अपील है कि हमारे समाज के जो भी भाई व्यवसाय या उद्योग चलाते हैं, वे रोजगार देने में राजपूत युवाओं को प्राथमिकता दें।

शिक्षा की दिशा में, हमें अन्य समाजों से भी अच्छी से अच्छी बातें सीखनी और सिखानी होंगी। जो मेधावी बच्चों को चुनकर उन्हें UPSC, मेडिकल और IIT जैसी कठिन परीक्षाओं के लिए तैयार करती हैं। बच्चों को होस्टल, क्लासेस और लाइब्रेरी जैसी सुविधाएँ दी जाती हैं। मैं चाहता हूँ कि हम बार-बार ऐसा प्रयास करते रहें जिससे आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी राजपूत छात्रों के लिए सहायता सदैब उपलब्ध कराई जाती रहे। ताकि हमारे बच्चे भी डॉक्टर, इंजीनियर, अफ़सर और वैज्ञानिक बनकर देश–प्रदेश और समाज का नाम रोशन कर सकें।

भाइयो–बहनो ? हमारे पूर्वजों ने तलवार से स्वाभिमान की रक्षा की थी। अब हमें शिक्षा, संगठन और प्रगति से अपनी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करना होगा। यही हमारा संकल्प और यही इस महासभा का उद्देश्य है। धन्यवाद। इस सम्बोधन के बाद मंचासीन सभी अतिथियों ने संगठन के हित में अपने-अपने प्रभावी उद्बोधन दिए। कई घोषणाएं की गईं। बीच-बीच में विभिन्न क्षेत्रों में समाज को गौरवान्वित करने वाली प्रतिभाओं का शॉल श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मान चलता रहा। साहित्यिक उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय कवि गिरेन्द्रसिंह भदौरिया ₹प्राण₹ का विशेष सम्मान किया गया। राजबहादुर सिंह कुशवाह ने सभी का आभार माना। अन्त में सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

*गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण" इन्दौर*

# आधी रात को महिला का अपहरण; बरसात की रात में ट्रक रोककर ड्राइवर ने महिला को उठाया

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भूबनेश्वर** : आधी रात को बारिश के कारण एक महिला एक दुकान के बरामदे में शरण लिए हुए थी। महिला को अकेला देखकर एक ट्रक चालक उसे उठाकर ले गया। यह दिल दहला देने वाला वीडियो सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया। ऐसी ही एक दुखद घटना कल भद्रक टाउन पुलिस स्टेशन के अंतर्गत चरम्पा नंबर 16 स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग पुलिस रिजर्व कार्यालय के पास घटी। रात करीब साढ़े बारह बजे चंपा फांडी चौक के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक ट्रक रुका। अकेली महिला को देखकर ट्रक चालक ने गाड़ी रोकी और उसे जबरन अगवा कर ट्रक में लेकर फरार हो गया। महिला के मानसिक रूप से विक्षिप्त होने की बात कही जा रही है, लेकिन अभी तक उसका कोई पता नहीं चल पाया है। घटना के सामने आने के बाद भद्रक में हड़कंप मच गया है। भद्रक के एडिशनल एसपी ने बताया कि पुलिस जगह-जगह जाँच कर रही है और राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगे सीसीटीवी कैमरों की जाँच कर रही है।

# मां दुर्गा जी की प्रतिमा को विधिवत विसर्जन किया

लोंगोवाल,3 अक्टूबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट) के परिसर स्थित झील में दुर्गा मां की प्रतिमा का विधिवत विसर्जन किया गया। इस अवसर पर पूरे संस्थान का वातावरण श्रद्धा और उत्साह से भरा रहा। इस विसर्जन कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान, डॉ. एम. एम. सिन्हा, डॉ. कपिल सहित अनेक प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। छात्रों में से देव शर्मा, शक्ची सिंह, अंशु झा और अन्य विद्यार्थियों ने सक्रिय योगदान दिया। इस अवसर पर निदेशक डॉ. मणिकांत पासवान ने कहा कि - "दुर्गा पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, बल्कि शक्ति, सामूहिकता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को भारतीय परंपराओं से जोड़ने के साथ-साथ समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं।" पूरे कार्यक्रम का आयोजन शांतिपूर्ण और भव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ तथा अंत में सभी ने मां दुर्गा से संस्थान एवं समाज की उन्नति और समृद्धि की कामना की।

# राउरकेला में आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी: विकास की मांग तेज, सरकार की सुस्ती से युवा प्रतिभा का पलायन - डॉ. राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

**भुवनेश्वर।** राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज राउरकेला शहर में आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और विकास में हो रही देरी पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने ओडिशा सरकार पर आरोप लगाया कि मार्च 2024 में दी गई मंजूरी के बावजूद जुलाई 2025 तक परियोजना में भूमि अधिग्रहण और अन्य प्रक्रियाओं में सुस्ती बरती गई, जिससे शहर के युवा प्रतिभा पूल और उत्कृष्ट कनेक्टिविटी का लाभ नहीं उठाया जा सका। डॉ. यादव ने मांग की कि सरकार तत्काल कदम उठाए और राउरकेला को आईटी हब के रूप में विकसित करने के लिए ठोस योजना लागू करे, अन्यथा युवाओं का पलायन बढ़ेगा और ओडिशा का आर्थिक विकास प्रभावित होगा।

डॉ. यादव ने घटनाक्रम को विस्तार से बताते हुए कहा कि राउरकेला, जो स्टील सिटी के रूप में जाना जाता है, में आईटी क्षेत्र की अपार संभावनाएं हैं। शहर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जैसे प्रतिष्ठित संस्थान हैं, जो हजारों योग्य इंजीनियर और आईटी प्रोफेशनल्स तैयार करते हैं। इसके अलावा, रेलवे और हवाई कनेक्टिविटी (झारसुगुड़ा हवाई अड्डे से) शहर को भुवनेश्वर, कोलकाता और अन्य प्रमुख शहरों से जोड़ती है। लेकिन सरकार की लापरवाही से विकास रुका हुआ है।

घटनाक्रम का विस्तृत ब्योरा (तथ्यात्मक रूप से):

मार्च 2024: ओडिशा कैबिनेट ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की अध्यक्षता में राउरकेला में आईटी इंडस्ट्रीज और संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर स्थापित करने की मंजूरी दी। इस प्रस्ताव का उद्देश्य शहर को आईटी हब बनाना था, जिससे स्थानीय रोजगार बढ़े और युवाओं का पलायन रोका जा सके। इस समय आईडीसीओ (ओडिशा इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन) को परियोजना की जिम्मेदारी सौंपी गई।

जून 2024: ओडिशा सरकार ने भुवनेश्वर में आईहब टेक पार्क की घोषणा की, लेकिन राउरकेला को भी आईटी विकास की सूची में शामिल किया गया। विशेषज्ञों ने शहर की क्षमता पर जोर दिया, जहां 1,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश प्रस्तावित था। हालांकि, भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में देरी शुरू हो गई, जिससे स्थानीय आईटी कंपनियों की रुचि प्रभावित हुई।

जुलाई 2025: आईडीसीओ ने राउरकेला और बहरामपुर में आईटी टावर्स के विकास के लिए एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) आमंत्रित किया। यह कदम मार्च 2024 की मंजूरी का अगला चरण था, लेकिन भूमि अधिग्रहण में कानूनी और प्रशासनिक बाधाओं के कारण परियोजना अभी भी प्रारंभिक चरण में है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि देरी जारी रही, तो 2026 तक भी निर्माण शुरू नहीं हो पाएगा।

सितंबर 2025: ओडिशा सरकार ने राज्य स्तर पर आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 5,500 एकड़ भूमि चिन्हित की, लेकिन यह मुख्य रूप से भुवनेश्वर के आसपास केंद्रित है। राउरकेला को केवल सीमित हिस्सा मिला, जिससे स्थानीय निवेशकों में असंतोष बढ़ा। इसके अलावा, अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स जैसे रोड और रेलवे विकास पर जोर दिया गया, लेकिन आईटी क्षेत्र उपेक्षित रहा।

अक्टूबर 2025 (वर्तमान स्थिति): परियोजना अभी भी भूमि अधिग्रहण चरण में अटकी हुई है। राउरकेला में युवा प्रतिभा पूल (एनआईटी से 1,000+ ग्रेजुएट्स सालाना) और कनेक्टिविटी (राउरकेला जंक्शन से 50+ ट्रेनें दैनिक, झारसुगुड़ा एयरपोर्ट से कनेक्टिविटी) के बावजूद, कोई ठोस प्रगति नहीं हुई। परिणामस्वरूप, स्थानीय युवा अन्य राज्यों में पलायन कर रहे हैं, जिससे ओडिशा की अर्थव्यवस्था को नुकसान हो रहा है।

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा, ₹राउरकेला ओडिशा का औद्योगिक हृदय है, लेकिन आईटी क्षेत्र में सरकार की सुस्ती अस्वीकार्य है। हम मांग करते हैं कि भूमि अधिग्रहण तत्काल पूरा किया जाए, आईटी टावर्स का निर्माण शुरू हो और कम से कम 5,000 युवाओं के लिए रोजगार सृजन किया जाए। एनसीपी इस मुद्दे पर जन आंदोलन चलाएगी यदि सरकार ने जल्द कार्रवाई नहीं की।" उन्होंने आगे कहा कि एनसीपी ओडिशा के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य सरकार से अपील करती है कि राउरकेला को भुवनेश्वर की तरह प्राथमिकता दी जाए। पार्टी इस मुद्दे को सड़क से लेकर प्रत्येक जरूरी मंच तक उठाएगी।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के बारे में: राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ओडिशा में सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और युवा सशक्तिकरण के लिए कार्यरत है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव के नेतृत्व में एनसीपी राज्य के प्रमुख मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभा रही है।

# फिक्की फ्लो की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम शर्मा का अमृतसर में भव्य स्वागत, हरमंदिर साहिब को भेंट कीं 10 व्हीलचेयर

अमृतसर, 3अक्टूबर (साहिल बेरी)

फिक्की फ्लो की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम शर्मा का अमृतसर आगमन पर हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत किया गया। फिक्की फ्लो अमृतसर की अध्यक्ष मोना सिंह के नेतृत्व में संगठन की सदस्याओं ने फुलकारी और पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

स्वागत उपरांत पूनम शर्मा और मोना सिंह ने विश्वप्रसिद्ध श्री हरमंदिर साहिब में मत्था टेका और देश-प्रदेश की सुख-समृद्धि की अरदास की। इस अवसर पर दोनों पदाधिकारियों ने समाज सेवा की भावना को आगे बढ़ाते हुए एसजीपीसी श्री हरमंदिर साहिब मैनेजर जसपाल सिंह, सहायक सचिव जसविंदर सिंह जस्सी, सूचना अधिकारी जतिंदरपाल सिंह को 10 व्हीलचेयर दान कीं।

पूनम शर्मा ने कहा कि "स्वर्ण मंदिर संपूर्ण मानवता के लिए शांति और आस्था का प्रतीक है। यहां मत्था टेकने का अवसर मिलना मेरे लिए ईश्वर का आशीर्वाद है।" उन्होंने अमृतसर के आध्यात्मिक वातावरण और लोगों की मेहमाननवाज़ी की सराहना की।

महिला सशक्तिकरण पर बोलते हुए पूनम शर्मा ने कहा कि महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं—चाहे वह फिल्में हों, डिफेंस, कॉरपोरेट जगत या फैशन डिजाइनिंग। उन्होंने बताया कि भारतीय महिला फैशन डिजाइनरों के डिजाइन आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ रहे हैं।

फिक्की फ्लो अमृतसर की अध्यक्ष मोना सिंह ने कहा कि संगठन महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि "आज महिलाएं लगभग हर उद्योग और क्षेत्र में कदम रख रही हैं। हमारा उद्देश्य है कि हम महिलाओं को उनके कौशल और जुनून के आधार पर आत्मनिर्भर और सफल उद्यमी बनने में मदद करें।"

## इस्कॉन की ओर से भव्य युवा उत्सव "उड़ान" का आयोजन 5 अक्टूबर को

अमृतसर, 3 अक्टूबर (साहिल बेरी)

नौजवान पीढ़ी को सकारात्मक सोच, संस्कार और आत्मबल से सशक्त बनाने के उद्देश्य से इस्कॉन की ओर से ₹भव्य युवा उत्सव उड़ान₹ का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर से बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। यह कार्यक्रम 5 अक्तूबर को दोपहर 2:30 बजे रिगालिया दी फॉरेस्ट रिजॉर्ट, मजीठा रोड (बेर का बाईपास) में प्रारंभ होगा। इस्कॉन के पंजाबी मीडिया प्रभारी श्यामानंद प्रभु ने बताया कि इस अवसर पर इस्कॉन के महानगर प्रमुख स्वामी इंद्रानुज प्रभु जी दास विशेष रूप से शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त ऑस्ट्रेलिया से आए आमोद लीला प्रभु मुख्य वक्ता होंगे। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग शामिल होंगे। इसके अलावा समाज सेविका सुरभि वर्मा, पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह औलख और जिला पुलिस प्रमुख एस.एस.पी. भी उपस्थित रहेंगे। इस "उड़ान" कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को नैतिक शिक्षा, नशा और मोबाइल डाटा की लत से मुक्ति तथा आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रेरित करना है। श्यामानंद प्रभु ने कहा कि वर्तमान समय में युवा वर्ग नशे और मोबाइल की लत में फंसता जा रहा है। यह उत्सव युवाओं को सकारात्मक दिशा देने और उन्हें नशे व मोबाइल की आदतों से दूर रखने का प्रयास करेगा।

## झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष की पत्नी, बहू के साथ दुर्व्यवहार , ड्राइवर के साथ मारपीट

हजारीबाग विसर्जन जुलूस के समय हुई घटना,सदर थाना में मामला दर्ज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची,** झारखंड विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी की पत्नी और बहू के साथ कथित मारपीट का मामला सामने आया है. इस हमले में उनके ड्राइवर को गंभीर चोटें आई हैं. पूरी घटना हजारीबाग के अमृत नगर पूजा पंडाल की बताई जा रही है. पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. पुलिस फिलहाल सीसीटीवी फुटेज और वहां मौजूद लोगों से बातचीत कर पूरे मामले की जांच कर रही है.

मरांडी की बहू प्रीति किस्कू की तरफ से दर्ज कराई गई रिपोर्ट के अनुसार, वह शाम करीब 7:15 बजे अपनी सास के साथ गिरिडीह से रांची जा रही थीं, तभी यह पूरी घटना घटी है. इस घटना में उनका ड्राइवर बुरी तरह घायल हुआ है. घटना के दौरान कथित तौर पर पुलिसकर्मी घटनास्थल पर मौजूद थे. इसके बाद भी किसी तरह का बीच-बचाव नहीं किया गया है.

सीएम बाबूलाल मरांडी की बहू प्रीति बहू ने बताया कि उनकी गाड़ी जैसे ही अमृत नगर पूजा पंडाल के पास पहुंची, विसर्जन जुलूस में फंस गई. ड्राइवर ने भीड़ से रास्ता खाली करने की गुजारिश की, लेकिन इसी दौरान बातचीत बढ़ गई. आरोप है कि वहां मौजूद कुछ लोगों ने ड्राइवर के साथ मारपीट कर दी. इस दौरान जब प्रीति बीच-बचाव करने उतरीं, तो उनके साथ भी गाली-गलौज व बदतमीजी की गई.प्रीति किस्कू ने अधिकारियों से अमृत नगर पूजा समिति के सदस्यों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है. हजारीबाग पुलिस ने शिकायत दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

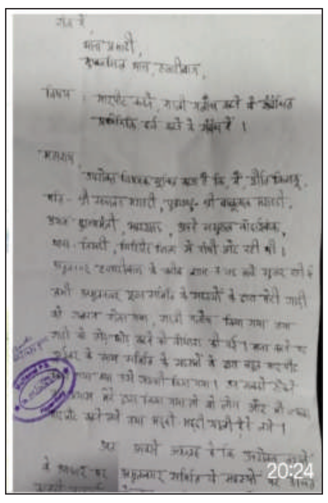

# श्री राम दशहरा कमेटी द्वारा भव्य दशहरा समारोह का आयोजन किया गया

अमृतसर, 3 अक्तूबर (साहिल बेरी)

श्री राम दशहरा कमेटी, 88 फुट रोड, अमृतसर उत्तर हलका द्वारा आज भव्य दशहरा समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर करमजीत सिंह रिंटू, चेयरमैन अमृतसर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट एवं हलका इंचार्ज अमृतसर उत्तरी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतलों का दहन किया गया, जिससे बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश दिया गया। समारोह को संबोधित करते हुए करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि:

"विजयदशमी हमें यह प्रेरणा देती है कि असत्य और अन्याय चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, अंततः विजय सदैव सत्य और धर्म की ही होती है। यह पर्व हमें समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने और सत्य, नैतिक मूल्यों व संस्कारों को बढ़ावा देने का संदेश देता है। आइए हम सब मिलकर भ्रष्टाचार, नशाखोरी और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संकल्प लें।" उन्होंने आगे कहा कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से समाज में भाईचारा, एकता और पारंपरिक मूल्यों को मज़बूती मिलती है।

इस अवसर पर करमजीत सिंह रिंटू ने श्री गुलज़ार सिंह बिट्टू और उनकी पूरी टीम को इतना सफल एवं प्रभावशाली आयोजन करने के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद प्रकट किया।

# मिशन चढ़दीकला अभियान के तहत सीएम को दिये चेक

अमृतसर, 3 अक्टूबर (साहिल बेरी)

वर्ल्ड वाइड ग्रुप ने 5 लाख, बल कलां एसोसिएशन ने 4 लाख और फोकल प्वाइंट वेलफेयर सोसाइटी ने 3 लाख रुपये का चेक मुख्यमंत्री को किया भेंट

मुख्यमंत्री पंजाब श्री भगवंत सिंह मान द्वारा बाढ़ पीड़ित परिवारों की सहायता के लिए चलाई जा रही मिशन चढ़दीकला मुहिम को देश-विदेश से बड़ा समर्थन मिल रहा है और बड़ी संख्या में लोग बाढ़ प्रभावित परिवारों की मदद के लिए इस मुहिम का हिस्सा बन रहे हैं।

मुख्यमंत्री पंजाब श्री भगवंत सिंह मान के अमृतसर पहुंचने पर वर्ल्ड वाइड ग्रुप (महिंद्रा एजेंसी) ने मिशन चढ़दीकला अभियान के तहत 5 लाख रुपये, बल कलां एसोसिएशन ने 4 लाख रुपये और फोकल प्वाइंट वेलफेयर सोसाइटी ने 3 लाख रुपये का चेक भेंट किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री पंजाब ने इन सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस कठिन घड़ी में पंजाब की हर संस्था के साथ-साथ देश-विदेश से भी लोग मिशन चढ़दीकला मुहिम के अंतर्गत बाढ़ पीड़ित परिवारों की मदद के लिए आगे आ रहे हैं।

इस अवसर पर विधायक श्री कुलदीप सिंह धालीवाल, मेयर नगर निगम श्री जतिंदर सिंह मोती भाटिया, डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी सहनी, पुलिस कमिश्नर श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर, एस.डी.एम. श्री गुरसिमरन सिंह, वर्ल्ड वाइड ग्रुप के श्री इंदरप्रीत सिंह, बल कलां एसोसिएशन के प्रधान श्री संदीप खोसला, श्री राजन मेहरा सहित अन्य भी उपस्थित थे।

# झोने की पराली को आग लगाए बिना सही ढंग से करें किसान सरपंचों व नंबरदारों के साथ बैठक की एस.डी.एम. मजीठा:मैडम पियूषा

अमृतसर, 3 अक्टूबर (साहिल बेरी)

डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी के दिशा-निर्देशों तहत एस.डी.एम. मजीठा मैडम पियूषा द्वारा सरकार की ओर से पराली को आग न लगाने संबंधी चलाए जा रहे अभियान के तहत मजीठा में सरपंचों और नंबरदारों के साथ बैठक की गई। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और कृषि विभाग की टीमें गांव स्तर पर गतिविधियाँ कर किसानों को पराली को आग न लगाने के लिए जागरूक कर रही हैं। इसके अलावा, पराली को आग लगाने वाले किसानों पर माननीय नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा जारी दिशा-निर्देशों अनुसार चालान भी किए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गांव स्तर पर जिला प्रशासन द्वारा गठित "पराली प्रोटेक्शन टास्क फोर्स" भी सरकार के इस अभियान को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए किसानों से सीधे संपर्क कर रही है।

एस.डी.एम. ने बताया कि अधिकारी गांव स्तर पर भी किसानों को पराली जलाए बिना फसल की बुआई करने के लिए मार्गदर्शन दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस बार जिले में पराली प्रबंधन के लिए हर तरह की मशीनरी उपलब्ध है, ताकि किसानों को कोई परेशानी न हो।

आज इस संबंध में पराली टास्क फोर्स और गांवों के नंबरदारों के साथ चर्चा करते हुए उन्होंने वातावरण को बचाने के लिए सहयोग मांगा। इस अवसर पर सरपंचों और नंबरदारों को "उन्नत ऐप" संबंधी जानकारी भी दी गई। बैठक में तहसीलदार मजीठा, ब्लॉक कृषि अधिकारी मजीठा, बी.डी.पी.ओ. मजीठा और कृषि विभाग के अन्य अधिकारी शामिल रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023